

425.4  
R175  
6459  
V. 1. B

75





ॐ

Swami Ram Tirth-

# स्वामी रामतीर्थ

भाग नवां । vol I



परमहंस स्वामी रामतीर्थ

Ram Tirth.

प्रकाशक,

श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग ।

Sri Ram Tirth at publication लखनऊ । Lucknow

H. No. 15



6459

वर्ष दूसरा । श्री रामतीर्थ ग्रन्थावली । खण्ड पहिला

श्री

राम-वर्षा

भाग २

अर्थात्

श्री स्वामी रामतीर्थ ।

के

सदुपदेश-भाग १

प्रकाशक

श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लॉग ।

प्रथम संस्करण  
२५००

}

लखनऊ

}

अगस्त १९२१  
आवण १९७८

मूल्य डाक व्यय रहित

बिना जिल्द ॥=) }

फुटकर

} सजिल्द ॥=)

गत वर्ष का सम्पूर्ण

अर्थात्

बिना जिल्द ४) }

१००० पृष्ठ के आठ भा

294.5

8300

आर. पी. सिंह द्वारा, फोनिकस प्रिन्टिङ्ग प्रेस,  
१०० नादान महल रोड, लखनऊ, में  
मुद्रित ।



## ग्रन्थावली के स्थायी ग्राहकों के नियम ।

- (१) इस वर्ष में अर्थात् दीपमालिका सं० १४७८ तदनुसार नवम्बर सन् १४२१ तक स्थायी ग्राहकों को ग्रन्थावली के केवल चार भाग ५०० पृष्ठ के भेजे जायेंगे । इन चार भागों के वार्षिक शुल्क के नियम इसी भाग ६ के अन्त में दर्ज हैं ।
- (२) प्रत्येक भाग प्रायः “२०+३०” ( डबल फाऊन ) के १६ पेजी आकार में होगा, जो प्रायः पृथक् २ जिल्द में भेजा जायगा किन्तु आवश्यकता पड़ने पर दो भाग एक जिल्द में इकट्ठे मिलाकर भी भेजे जायेंगे ।
- (३) स्थायी ग्राहक को अपना वार्षिक शुल्क मनी ऑर्डर अथवा वी. पी. द्वारा पेशगी भेजना होगा ।
- (४) दीप मालिका सं० १४७८ तक इस वर्ष का पेशगी शुल्क भेजने वाले को इसी वर्ष के चारों भाग भेजे जायेंगे । किसी ग्राहक को थोड़े एक वर्ष के और थोड़े दूसरे वर्ष के खण्ड वार्षिक मूल्य के हिसाब से नहीं दिये जायेंगे ।
- (५) किसी एक खण्ड के खरीदार को उस खण्ड की कीमत स्थायी ग्राहक होते समय उस के वार्षिक मूल्य में मुजरा नहीं की जायगी; अर्थात् वार्षिक मूल्य की पूरी रकम एक साथ पेशगी मिलने पर ही वह खरीदार स्थायी ग्राहक माना जायगा ।
- (६) एक खण्ड का फुटकर दाम बिना जिल्द ॥२) और सजिल्द ॥३) होगा जिसमें डाक व्यय इत्यादि ग्राहक को देना होगा ।
- (७) पत्र व्यवहार में उत्तर के लिये टिकट या कार्ड भेजे बिना उत्तर न दिया जायगा । अवश्य उत्तर प्राप्ति के लिये ग्राहक को अपने पत्र में टिकट या कार्ड जरूर भेजना चाहिये और साथ इस के अपना ग्राहक नं० तथा पूरा २ पता भी साफ लिखकर भेजना चाहिये । ऐसा न होने पर उत्तर न मिलने से क्षमा करनी होगी ।

## लीग के सभ्यगण के नियम व अधिकार ।

( जो लीग की नियमावली के चौथे नियम के अन्तर्गत हैं )

४ सभ्यगण=श्री स्वामी रामतीर्थ जी के उपदेशों के अनुयायी और उनसे सहानुभूति रखने वाले सज्जन। इस लीग के (क) संरक्षक (ख) सभासद और (ग) संसर्गी के रूप से सभ्यगण होंगे ।

( क ) संरक्षक=(१) १०००) रु० एकवारगी अथवा अधिक से अधिक पाँच किशतों में दान देने वाले सज्जन पूरी रकम बसूल हो जाने पर लीग के संरक्षक हो सकेंगे । ( २ ) श्री स्वामी रामतीर्थ जी के उपदेशों का कोई उत्कट अनुयायी अथवा उन से गाढ़ सहानुभूति रखने वाला सज्जन किसी विशेष कारण से उक्त नियत दान देने के बिना भी लीग द्वारा संरक्षक चुना जा सकता है ।

(ख) सभासद=( १ ) २००) रु० एक बारगी अथवा अधिक से अधिक चार किशतों में दान देने वाले सज्जन पूरी रकम प्राप्त हो जाने पर लीग के सभासद हो सकेंगे ।

( २ ) लीग के कार्य में प्रीति और उत्साह पूर्वक भाग लेने वाला कोई सज्जन उक्त नियत दान देने के बिना भी लीग द्वारा सभासद चुना जा सकता है ।

( ग ) संसर्गी=२५) रु० दान देने वाले सज्जन इस लीग के संसर्गी हो सकेंगे ।

५ अधिकार=लीग के दान दाता सभ्यों को अपने २ दान की रकम पर वार्षिक ५) रु० सैकड़ा के हिसाब से लीग की प्रकाशित पुस्तकें बिना मूल्य पाने का आजीवन अधिकार होगा; अर्थात् संरक्षक को ५०) रु०, सभासद को १०) रु० और संसर्गी को ११) रु० की पुस्तकें बिना मूल्य के लीग से वार्षिक पाने का आजीवन अधिकार होगा ।

नोट:—विस्तार पूर्वक विवरण पत्र और सम्पूर्ण नियमावली डाक व्यवस्था आध आना टिकट आने पर भेजे जावेंगे ।



ॐ

## परमहंस स्वामी रामतीर्थ जी महाराज

के

सदुपदेशों का एक सेट आठ भागों अर्थात् १००० पृष्ठ का जो विना जिल्द ४) और सजिल्द ६) रुपये पर मिलता है उस में जो २ व्याख्यान वा लेख प्रकाशित हुए हैं उन की विषय सूची नीचे दी जाती है।

( अंग्रेजी व्याख्यान से जो अनुवाद हुआ है उस का नाम अंग्रेजी भाषा में भी यहाँ दे दिया गया है ) ।

पहिला भाग :—( १ ) आनन्द ( Happiness within ). ( २ ) आत्म विकास ( Expansion of self ). ( ३ ) उपासना. ( ४ ) चार्तालाप ।

दूसरा भाग :—( १ ) संक्षिप्त जीवन-चरित्र. ( २ ) सान्त में अनन्त ( The Infinite in the finite ). ( ३ ) आत्म सूर्य और माया ( The Sun of Life on the wall of mind ). ( ४ ) ईश्वर भक्ति. ( ५ ) व्यावहारिक वेदान्त. ( ६ ) पत्र मञ्जूषा. ( ७ ) माया ( Maya ).

तीसरा भाग :—( १ ) राम परिचय. ( २ ) वास्तविक आत्मा ( The Real self ). ( ३ ) धर्म तत्त्व. ( ४ ) ब्रह्मचर्य. ( ५ ) अक-बरे-दिली. ( ६ ) भारत वर्ष की वर्त्तमान आवश्यकतायें ( The present needs of India ). ( ७ ) हिमालय ( Himalaya )

( ८ ) सुमेरु दर्शन. ( Summeru scene ) ( ९ ) भारत वर्ष की स्त्रियाँ. ( Indian womanhood ). ( १० ) आर्य माता. ( About wife-hood ). ( ११ ) पत्र मञ्जूषा.

चौथा भाग :—( १ ) भूमिका ( Preface by Mr. Puran in Vol. I ) ( २ ) पाप; आत्मा से उस का सम्बन्ध ( Sin—Its relation to the Atman or Real Self ). ( ३ ) पाप के पूर्व लक्षण और निदान. ( Prognosis & Diagnosis of Sin ). ( ४ ) नकद धर्म. ( ५ ) विश्वास या ईमान. ( ६ ) पत्र मञ्जूषा.

पाँचवाँ भाग :—( १ ) राम परिचय. ( २ ) अवतरण ( A brief of introduction by the late Lala Amir Chand, Published in the fourth volume ). ( ३ ) सफलता की कुञ्जी. ( lecture on Secret of Success delivered in Japan ). ( ४ ) सफलता का रहस्य ( lecture on Secret of Success, delivered in America ). ( ५ ) आत्म कृपा.

छठा भाग :—( १ ) प्रेरणा का स्वरूप ( Nature of Inspiration ). ( २ ) सब इच्छाओं की पूर्ति का मार्ग ( The way to the fulfilment of all desires ). ( ३ ) कर्म. ( ४ ) पुरुषार्थ और प्रारब्ध. ( ५ ) स्वतंत्रता.

सातवाँ और आठवाँ भाग :—राम वर्षा प्रथम भाग ( स्वामी राम कृत भजनों के नौ अध्याय ) और दूसरा भाग ( जिस के केवल तीन अध्याय दर्ज हैं ).



देहलीन श्री स्वामी रामतीर्थ जी के शिष्य श्रीमान् आर. ऐस.  
नारायण स्वामी द्वारा व्याख्या की हुई

## श्रीमद्भगवद्गीता ।

प्रथम भाग :—अध्याय ६ पृष्ठ संख्या ८३२ ।

मूल्य :—साधारण संस्करण २] विशेष संस्करण ३]

डाक व्यय अतिमिक्त

अभ्युदय कहता है :—“ हमने गीता की हिन्दी में अने ६ व्याख्याएं देखी हैं, परन्तु श्री नारायण स्वामी की व्याख्या के समान सुन्दर, सरल और विद्वत्पूर्ण दूसरी व्याख्या के पढ़ने का सौभाग्य हमें नहीं प्राप्त हुआ है । स्वामी जी ने गीता की व्याख्या किसी साम्प्रदायिक सिद्धान्त की पुष्टि अथवा अपने मत की विशेषता प्रतिपादित करने की दृष्टि से नहीं की है । आप का एक मात्र उद्देश्य यही रहा है कि गीता में श्रीकृष्ण भगवान् ने जो कुछ उपदेश दिया है उसके उत्कृष्ट भाव को पाठक समझ सकें । ”

प्रैक्टिकल मेडिसिन [ देहली ] का मत है :—“अन्तिम व्याख्या ने जिसको अति विद्वान् श्रीमान् वाल गंगाधर तिलक ने गीता-रहस्य नाम से प्रकाशित किया है, हमारे चित्त में बड़ा प्रभाव डाला था, पर श्रीमान् आर० ऐस० नारायण स्वामी की गीता की व्याख्या ने इस स्थान को छीन लिया है । इस पुस्तक ने हमें और हमारे मित्रों को इतना मोहित कर लिया है कि हमने उसे अपने नित्य प्रातःस्मरण की पाठ पुस्तकों में सम्मिलित कर लिया है । ”

चित्र मय जगत पूना का मत है :—“ हिन्दी में गीता का संस्करण अपने ढंग का एक ही निकला है..... अर्थात् स्वामी जी ने इसे कितनी ही विशेषताओं से संयुक्त किया है । भूमिका, प्रस्तापना, गीतारहस्य, श्लोकानुक्रमणिका, पूर्व वृत्तान्त आदि के बाद

गीता का शब्दार्थ, अन्वयार्थ और व्याख्या तथा टिप्पणी लिखी गई है । अर्थात् इन सब अलंकारों के सिवाय स्वामी जी ने स्थान २ पर विविध महत्वपूर्ण फुटनोट देकर पुस्तक को सर्वांग सम्पन्न बना दिया है । साथ ही जहाँ मूल का विषयान्तर होता दिखाई दिया वहाँ तत्सम्बन्धिनी व्याख्या देकर वर्णन को शृंखला बद्ध कर दिया है । इसी प्रकार प्रत्येक अध्याय के अन्त में उस का सार देकर स्वामी जी ने इसे अलपन्न और बहुश्रुत सब के समझने योग्य बना दिया है । ..... ऐसी कोई बात नहीं जो इस व्याख्या में देखने को न मिलती हो । सारांश, साम्प्रदायिक भेद भावों से अलग रहते हुए स्वामी जी ने इस गीता को लिखकर देश का बड़ा उपकार किया है । हमारे पास वे शब्द ही नहीं कि जिन के द्वारा हम स्वामी जी को धन्यवाद दें..... ।

## लीग से मिलने वाली उर्दू पुस्तकें ।

- (१) वेदानुवचन—इस में उपनिषदों के आधार पर वेदान्त के गहन विषय का वर्णन है । मूल्य विना जिल्द १) सजिल्द १॥)
- (२) कुलियाते-राम; भाग १—इस में स्वामी जी के उर्दू लेखों का संग्रह है । मूल्य विना जिल्द १) सजिल्द १॥)
- (३) राम पत्र—इस में स्वामी जी के वह पत्र हैं जो उन्होंने ने अपनी किशोर अवस्था से अपने गुरु को भेजे थे ।
- (४) राम-वर्षा भाग १—इस में स्वामी राम के अपने भजन तथा उसी आशय के दूसरों के भजन हैं मूल्य सजिल्द ॥)
- (५) राम-वर्षा भाग २—इस में भजनों के साथ स्वामी जी का संक्षिप्त जीवन चरित्र है मूल्य विना जिल्द ॥) और सजिल्द ॥)



## निवेदन ।

---

प्रिय पाठक गण ! श्री रामतीर्थ ग्रन्थावली का यह नवाँ भाग है जो वर्तमान वर्ष का पहिला खण्ड अर्थात् पहिला नम्बर है । इस में राम-वर्षा का शेष भाग प्रकाशित किया गया है जिस से पाठकगण के पास राम-वर्षा सम्पूर्ण रूप से पहुँच जाय । इससे आगे तीन भागों में लेखों व व्याख्यानों का अनुवाद प्रकाशित होगा ।

धर्म भाव से प्राणिमात्र की सेवा करने के उद्देश से और दुःखित व तप्त हृदयों को परमहंस स्वामी रामतीर्थ के अमृत भरे उपदेशों की वर्षा से शान्त और तृप्त करने के विचार से जो श्री रामतीर्थ ग्रन्थावली का जन्म सन् १९१९ में श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग द्वारा हुआ था, और जिस का एक वर्ष गत नवम्बर १९२० में समाप्त भी हो गया है; आज यह देख कर हर्ष हो रहा है कि कागज, छपाई, छिन्दवाड़े का मुकद्दमा इत्यादि नाना प्रकार की कठिनाइयों के आ पड़ने पर भी आज तक ग्रन्थावली आप की सेवा निरन्तर रूप से कर सकी । यद्यपि उक्त कठिनाइयों के कारण गत वर्ष के आठ भागों को पहुँचाने में विलम्ब हुआ था, पर वह दोष ग्रन्थावली को जन्म देने वालों का नहीं था । वह तो अपना प्रेस न होने के कारण और बाज़ार में समय २ पर कागज के न मिलने से उत्पन्न हो आया था । अस्तु, यह हर्ष का समय है कि इस वर्ष के लिये कागज इकट्ठा प्राप्त हो गया है, और प्रेस वालों ने भी ठीक समय पर भाग छापने का सहस दिया है, जिस से आशा की जा सकती है कि नवम्बर १९२१ तक चार भाग ग्राहकों के

पास अवश्य पहुँच जायेंगे । चारों भागों को समय पर शीघ्र पहुँचाने में अपनी ओर से हम कोई कसर बाकी न रखेंगे, परन्तु शक्ति भर परिश्रम करने पर भी यदि किसी दैव योग से किञ्चित् विलम्ब हो भी गया तो आशा है कि ग्राहक जन कृपा करके उसे दैव विघ्न समझ कर हमें क्षमा करेंगे ।

गत वर्ष कुछ लोगों से बहुत शिकायतें पहुँची थी कि उन के पास उनका भाग नहीं पहुँचा । यद्यपि यहाँ से अवश्य भेज दिया जाता था, तथापि पुनः २ थोड़े दाम पर उन भागों को भेजने से कुछ पाठकों को और कुछ लीग को हानि उठानी पड़ी । इस परस्पर हानि को बन्द करने के विचार से लीग के प्रबन्धकमंडल ने ग्रन्थावली को रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजने का नियम पास कर दिया है । जो सज्जन रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा अपना प्रति भाग मँगवाया करेंगे और उसी अनुसार वार्षिक शुल्क पेशगी भेज देंगे, उन का कोई भाग यदि मार्ग में गुम हो गया, तो लीग उस की जिम्मेवार हो जायगी, केवल बुक पैकेट द्वारा मँगवाने वालों की नहीं, क्योंकि उस में डाक वालों का दोष होता है, और डाक वाले उस का दाम देते नहीं ।

अन्त में यही प्रार्थना है कि इस ग्रन्थावली से लाभ उठाने के लिये ग्राहक जन अपने मित्रों और स्नेही वर्ग को उद्यत करते रहें और इस प्रकार ग्राहक संख्या बढ़ाते रहें, जिस से इस निष्काम कार्य में दिन द्विगुणी और रात चौगुणी वृद्धि हो और कार्य कर्ताओं को उत्साह मिलता रहे ।

मन्त्री

अगस्त १९२१  
लखनऊ

श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग ।

लखनऊ



# विषय सूची ।

—:०:—

संख्या

विषयवार भजन

पृष्ठ

## वैराग्य ।

( २७ )	प्रीतम जान लियो मन मांहि	२४६
( २८ )	भूठी देखी प्रीत जगत में	२४७
( २९ )	जग में कोई नहीं, जिन्द मेरिये !	२४७
( ३० )	यह जग स्वप्ना है रजनी का	२४१
( ३१ )	जिन्हां घर भूलते हाथी	२४२
( ३२ )	पेथे रहना नाहिं मत खरमस्तियां कर ओ	२४२
( ३३ )	धन जन योवन संग न जाय प्यारे !	२४३
( ३४ )	इस तन चलना प्यारे ! कि डेरा जंगल में मलना	२४३
( ३५ )	कोई दम दा इहां गुज़ारा रे !	२४३
( ३६ )	ज़रा दुक सोच ऐ गाफिल ! कि दम का क्या ठिकना है	२४५
( ३७ )	मान मन ! क्यों अभिमान करे	२४५
( ३८ )	मना ! तैं ने राम न जान्या रे !	२४६
( ३९ )	दिला गाफिल न हो एक दम कि दुन्या छोड़ जाना है	२४६
( ४० )	चपल मन मान कही मेरी	२४७
( ४१ )	दुन्या के जंगलों में है यह दिल भटक रहा	२४८
( ४२ )	चञ्चल मन निशदिन भटकत है	२४९
( ४३ )	भजन बिन बृथा जन्म गयो	२४९
( ४४ )	मेरी मन रे ! भजले कृष्ण मुरारी !	२६०
( ४५ )	सुनो नर रे ! राम भजन कर लीजे	२६०

संख्या	विषयवार भजन	पृष्ठ
( ४६ )	रचना राम रचाई रे सन्तो !	२६०
( ४७ )	जीआ ! तो कु समझन आई	२६१
( ४८ )	तर तीव्र भयो वैराग्य तो मान अपमान क्या	२६२
( ४९ )	हम देख चुके इस दुनिया को सब ओखे की सी दृष्टी है	२६२
( ५० )	जो खाक से बना है वह आखिर को खाक है	२६३
( ५१ )	साई की सदा	२६४

### भक्ति या इश्क ।

( ५२ )	अकल के मरस्से से उठ	२६७
( ५३ )	ऐ दिल ! तू राहे-इश्क में मरदाना हो, मरदाना हो	२६८
( ५४ )	समझ बुझ दिल खोज प्यारे ! आशिक होकर सोना क्या	२६८
( ५५ )	अब तो मेरा राम नाम दूसरा न कोई	२६९
( ५६ )	माई ! मैंने गोविन्द लीना मोल	२६९
( ५७ )	जुंही आमद आमदे-इश्क का मुझे दिलने.....	२७०
( ५८ )	तमाशाये-जहां है और भरे हैं सब तमाशाई	२७३
( ५९ )	हमन हैं इश्क के माते, हमन को दौलतां क्या रे	२७५
( ६० )	हम कूए दरे-यार से क्या टल के जायंगे	२७५
( ६१ )	कुन्दन के हम डले हैं जब चाहे तू गला ले	२७६
( ६२ )	अरे लोगो ! तुम्हें क्या है या वह जाने या मैं जानूं	२७७
( ६३ )	रहा है होश कुछ बाकी उसे भी अब निवेड़े जा	२७७
( ६४ )	किस किस अदा से तू ने जल्वा दिखा के मारा	२७९
( ६५ )	इक ही दिल था सो वह भी दिल्वर ले गया	२८०
( ६६ )	सइयां नो ! मैं प्रीतम पिआ को मनाऊंगी	२८१



## राम-वर्षा—विषय सूची

५

संख्या	विषयवार भजन	पृष्ठ
( ६७ )	जिस को शोहरत भी तरस्ती हो वह सरवाई है और	२८२
( ६८ )	आशिक जहां में दौलतो-इफ़वाल क्या करे	२८३
( ६९ )	गुम हुआ जो इश्क में फिर उसको तंगो-नाम क्या	२८४
( ७० )	जो मस्त हैं अज़ल के उन को शराब क्या है	२८५
( ७१ )	जिन प्रेम रस चाख्या नहीं अमृत पिया तो क्या हुआ	२८५
( ७२ )	अब मैं अपने राम को रिझाऊं	२८६
( ७३ )	इश्क होवे तो हकीकी इश्क होना चाहिये	२८७
( ७४ )	प्रीत न की स्वरूप से तो क्या किया, कुछ भी नहीं	२८८
( ७५ )	आऊंगा न जाऊंगा, मरूंगा न जीयूंगा	२८८
( ७६ )	खेडन दे दिन चार नी !	२८८
( ७७ )	करसां में सोई शृंगार नी !	२८९
( ७८ )	गलत है कि दीदार की आर्तू है	२८९

## आत्म ज्ञान ।

( ७९ )	दरिया से हुवाव की है यह सदा	२९४
( ८० )	है दैरो-हरम में वह जल्वा कुनां	२९५
( ८१ )	अगर है शौक मिलने का अपस की रमज़ पाता जा	२९६
( ८२ )	अब मोहे फिर फिर आवत हाँसी	२९७
( ८३ )	जिस को हैं कहते खुदा हम ही तो हैं	२९८
( ८४ )	खुदाई कहता है जिस को आलम	२९९
( ८५ )	मैं न वन्दा न खुदा था मुझे मालूम न था	३००
( ८६ )	मुझ को देखो, मैं क्या हूं, तन तन्हा आया हूं	३०२
( ८७ )	मैं हूं वह ज्ञात ना पैदा, किनारो-मुतलको-देहद	३०३

संख्या	विषयवार भजन	पृष्ठ
( ८८ )	न दुश्मन है कोई अपना, न साजन ही हमारे हैं	३०३
( ८९ )	बाग़े-जहां के गुल हैं या खार हैं तो हम हैं	३०४
( ९० )	दिल को जब ग़ैर से सफा देखा	३०५
( ९१ )	यार को हमने जा बजा देखा	३०६
( ९२ )	दिया अपनी खुदी को जो हमने उठा	३०७
( ९३ )	की करदा नी ! की करदा	३०८
( ९४ )	बिना ज्ञान जीव कोई मुक्ति नहीं पावे	३०९
( ९५ )	मक्के गयां गह्व मुकदी नाहीं जे न मनो मुकाइये	३१०

### ज्ञानी ।

( ९६ )	ज्ञानी की उदारता (न है कुछ तमन्ना न कुछ जुस्तजू है)	३१०
( ९७ )	ज्ञानी का प्रणय (हम रखे टुकड़े खायंगे)	३११
( ९८ )	ज्ञानी का निश्चय वा हिम्मत ( गर्चि-कुतुब जंगह से )	३११

### त्याग ( फकीरी ) ।

( ९९ )	जो घर रखे वह घर घर में रोवे है	३१२
( १०० )	नारायण तो मिले उसी को जो देह का अभिमान तजे	३१३
( १०१ )	फकीरी खुदा को प्यारी है	३१४
( १०२ )	न गम दुन्या का है मुझको, न दुन्या से किनारा है	३१६
( १०३ )	जोगी का सच्चा रूप ( चरित्र )	३१६
( १०४ )	हर आन हंसी हर आन खुशी हर वक्त अमीरी है बाबा	३२१
( १०५ )	न बाप बेटा, न दोस्त दुश्मन, न आशिक और...	३२३
( १०६ )	वाह वा रे मौज फकीरां-दी	३२५
( १०७ )	पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं	३२५

संख्या	विषयवार भजन	पृष्ठ
( १०८ )	गर है फकीर तो तू न रख यहां किसी से मेल	३२८
( १०९ )	लाज मूल न आईया नाम धरायो फकीर	३३०

### निजानन्द ( खुदमस्ती )

( ११० )	अकल नकल नहीं चाहिये हमको पागलपन दरकार	३३१
( १११ )	कोई हाल मस्त कोई माल मस्त	३३१
( ११२ )	आ दे मुकाम उत्ते आ मेरे प्यारिया !	३३३
( ११३ )	गर हम ने दिल सनम को दिया फिर किसी को क्या	३३४
( ११४ )	भला हुआ हर वीसरो सिर से टरी बलाय	३३४
( ११५ )	वाज़ीचा-ए-इत्तफाल है दुन्या मेरे आगे	३३५
( ११६ )	कैंके फलक कौ तारे सब बख्श दूंगा मैं	३३६
( ११७ )	तमाम दुन्या है खेल मेरा मैं खेल सब को खिलारहा हूं	३३७
( ११८ )	कहूं क्या रंग उस गुल का अहाहाहा, अहाहाहा	३३७
( ११९ )	गर यू हुआ तो क्या हुआ और वूं हुआ तो क्या हुआ	३३८
( १२० )	पा लिया जो था कि पाना काम क्या बाकी रहा	३३९
( १२१ )	नी ! मैं पाया मैहरम यार	३४१
( १२२ )	रे कृष्ण ! कैसी होरी तैं ने मचाई	३४२

### विविध लीला ।

( १२३ )	इसलिये तस्वीरे-जानां हम ने खिचवाई नहीं	३४३
( १२४ )	सत्य धर्म को छिपा दिया, किसने ? नफाक ने	३४४
( १२५ )	न यारों से रही यारी, न भाइयों में बफादारी	३४५
( १२६ )	सागे जहां से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा	३४५



The Complete Works of Swami Rama Tirtha  
( In Words of God Realization. )  
( Each Volume is Complete in itself )

Vol. I Part I-III. With two portraits, a preface by Mr. Puran, an introduction by Mr. C. F. Andrews, and twenty lectures delivered in Japan and America. Pages 500, D. OCTAVO, Cloth Bound Rs. 2.

Vol II Part IV & V. Containing a Life-sketch, two portraits, seventeen lectures delivered in America, fourteen chapters of forest-talks and discourses held in the west, letters from the Himalayas, and several poems. Pages. 572 D. OCTAVO. Cloth Bound Rs. 2.

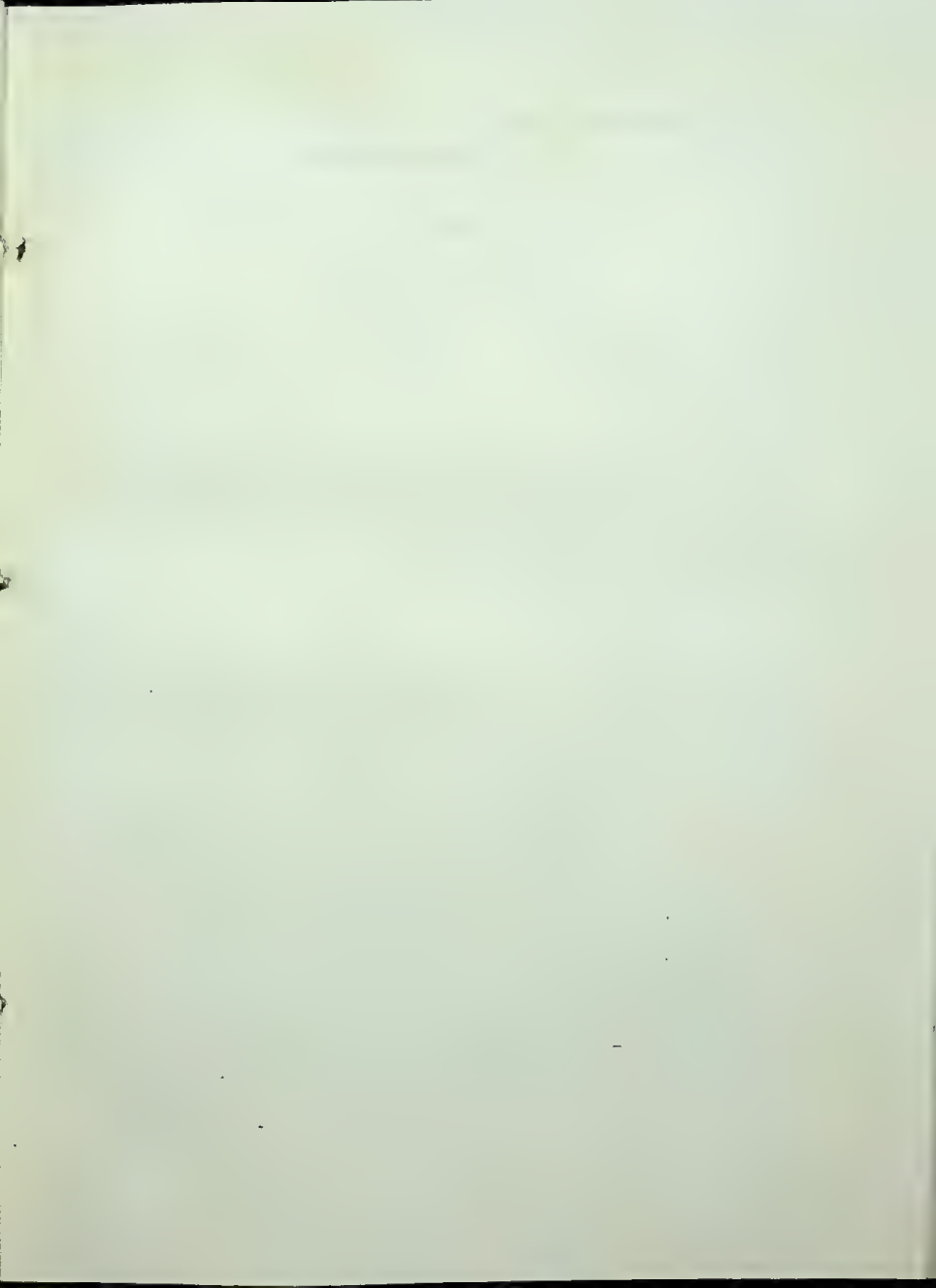
Vol. III Part VI & VII. With two portraits, twenty chapters of lectures and informal-talks on Vedanta, ten chapters of his valuable utterances on India the Motherland and several letters. Pages 542 D. OCTAVO Cloth Bound Rs. 2.

Mathematics; Its importance and the way to excel in it.

( With a photo and life-sketch of Swami Rama ). Beautifully bound; Annas twelve.

This article was written for the students by Swami Rama Tirtha when he was joint Professor of Mathematics, Foreman Christian College, Lahore in 1896. It is now printed in a book form and to enhance the value of it and to make it more attractive and useful, a photo of Swami Rama as a Professor along with his life-sketch is presented in an arranged form, specially bringing out those points in Rama's unique life as may serve to inspire and guide many a poor student labouring under sore difficulties and may make his life's burden light and cheerfully borne.

( Note, — Postage and Packing in all cases extra. )



# परमहंस स्वामी रामतीर्थ ।



लखनऊ १९०५





# राम-वर्षा ।

( भाग २-पूर्वसे आगे )

वैराग्य

[ २७ ]

१ जंगला ताल तीन ।

प्रोतम जान लियो मन माहीं ॥ (-टेक )

अपने सुख से सब जग बान्धयो, कोउ काहू को नाहीं ॥ १ ॥ प्री०

सुख में आन बहुत मिल बैठत, रहत चहों दिश<sup>१</sup> घेरे ।

बिपद<sup>२</sup> पड़ी सब ही संग छुँड़त, कोउ न आवत नेड़े ॥ २ ॥ प्री०

घर की नार बहुत हित<sup>३</sup> जासों, रहत सदा संग लागी ।

जब ही हंस<sup>४</sup> तजी यह काया, प्रेत २ कह भागी ॥ ३ ॥ प्री०

जीवत को व्योहार बनयो है, जा से नेह<sup>५</sup> लगायो ।

अंत समय नानक विन हर जी कोई काम न आयो ॥ ४ ॥ प्री०

१ चारों ओर, तरफ. २ दुःख, आपत्ति. ३ प्यार, स्नेह. ४ जीव. ५ मोह, मेन.

[ २८ ]

राग देव गंधारी ।

झूठी देखी प्रीत जगत में, झूठी देखी प्रीत ( टेक ) ।  
 मेरो मेरो सब ही कहत हैं हित<sup>१</sup> से बान्धयो चीत<sup>२</sup> ॥ ज०  
 अपने सुख हित<sup>३</sup> सब जग फांदयो क्या दारा<sup>४</sup> क्या मीत<sup>५</sup> ॥ ज०  
 अन्त काल संगी नहिं फोऊ यह अचरज है रीत<sup>६</sup> ॥ ज०  
 मन मूरख अजहों<sup>७</sup> नहिं समझत सिख दे हारयो नीत<sup>८</sup> ॥ ज०  
 मानक भवजल<sup>९</sup> पार पड़े जो गावे प्रभु के गीत ॥ ज०

[ २९ ]

साकी राग जोगी ताल ध्रुमाली ।

जग में कोई नहीं जिन्द<sup>१०</sup> मेरिये । हरी बिना रछपाल<sup>११</sup> ( टेक )  
 धन जोड़न नूं बहुत सियाना<sup>१२</sup>, रैन<sup>१३</sup> दिनां यही चिन्ता ।  
 अन्त समय यह सब धन तेरा, कदे<sup>१४</sup> न होसी मन्ता<sup>१५</sup> ॥ १ ॥ जि०  
 खावन<sup>१६</sup> पीवन दे बिच रचया<sup>१७</sup>, भूल गया प्रभु अपना ।  
 यह जिस नूं अपना कर जाने, होसी रैन<sup>१८</sup> का सुपना ॥ २ ॥ जि०  
 महल अरु<sup>१९</sup> माड़ी, ऊँच<sup>२०</sup> अटारी, है शोभा<sup>२१</sup> दिन चारी ।  
 नाम बिना कोई काम न आवे, छूटन अन्त दी वारी ॥ ३ ॥ जि०

१ प्यार, मोह. २ चित्त दिल. ३ सबय, कारण. ४ स्त्री. ५ मित्र. ६ व्यवहार  
 की बात. ७ अभी तक. ८ निरव. ९ संसार समुद्र. १० हे जान मेरी ! ११ रक्षा करने  
 वाला. १२ दख निपुण खतुर. १३ रात दिन. १४ कभी. १५ अच्छा कल देने  
 वाला. १६ खान पान. १७ खग गया, मग्न हो गया. १८ रात्रि का स्वप्न. १९  
 और. २० ऊँचा मकान. २१ बार दिनकी शोभा है.

जगत जंजाल तेरे गल फांसी, ले सी जान प्यारी ।  
 हृदय भजन बिना इस जग बिच सके न कोई उतारी<sup>१</sup> ॥४॥ जि०  
 जंगल ढूँढन जा न प्यारे, निकट<sup>२</sup> वसे हरी स्वामी ।  
 तू जाने हरी दूर वसे है, वह तो घट घट अन्तर्यामी ॥५॥ जि०  
 होय अचीत<sup>३</sup> सोवे सुन मूरख ! जन्म अकारथ<sup>४</sup> जावे ।  
 जीवन सफल<sup>५</sup> तदे ही होवे, भक्ति हृदय बिच आवे ॥६॥ जि  
 भक्ति बिना सुन्ना<sup>६</sup> अंधराना, देख देख कर भूरे ।  
 जब मन अन्दर नाम वसे है, नसन<sup>७</sup> सकल<sup>८</sup> बंसूरे<sup>९</sup> ॥७॥ जि०  
 अमृत नाम जपे जद प्राणी, तृषा सकल मिट जावे ।  
 तपत हृदय मिट जावे सारी, ठंड कलेजे आवे ॥ ८ ॥ जि०

[ ३० ]

साकी राग कालंगड़ा ।

यह जग स्वप्ना है रजनी<sup>१०</sup> का, क्या कहे मेरा मेरा रे (टेक)  
 मात तात<sup>११</sup> सुत<sup>१२</sup> दारा<sup>१३</sup> मनोहर, भाई बन्धु अरु चेरा<sup>१४</sup> रे ।  
 आपो अपने स्वारथ के सब, कोई नहीं है तेरा रे ॥ १ ॥ यह०  
 जिन के हेत<sup>१५</sup> करत धनसंचय<sup>१६</sup>, कर कर पाप घनेरा<sup>१७</sup> रे ।  
 जब यमराज पकड़ ले जावे, कोई न संग चलेरा रे ॥ २ ॥ यह०  
 ऊंचे ऊंचे महल बनाये, देश दिगंतर घेरा रे ।  
 सब ही ठाठ पड़ा रह जावत, होत जंगल में डेरा रे ॥ ३ ॥ यह०  
 इतर फुलेल मले जिस तन को, अन्त भस्म की ढेरा रे ।  
 ब्रह्मानन्द स्वरूप बिन जाने, फिरत चौरासी फेरा रे ॥ ४ ॥ यह०

१ पार उतारना. २ समीप. ३ देखबर. ४ अचेत. ५ वेलावद, ६ अन्त. ७ घोर अन्धकार ८ दूर-भाग. ९ सारे. १० कष्ट, तकलीफ दुःख. ११ दूर. १२ पिता १३ बेटा १४ स्त्री १५ शिष्य. १६ कारण १७ एकत्र, जमा करना. १८ बहुत.



[ ३१ ]

राग भाव ।

जिन्हां<sup>१</sup> घर भूलते हाथी, हजारों लाख थे साथी । } टेक  
 उन्हां को खा गयी माटी, तू खुश कर नींद क्यों सोया }

नक्कारह कूच का बाजे, कि मारू मौत का बाजे ।

उयो सावण मेघरा गाजे, तू खुश कर नींद क्यों सोया ॥ १ ॥

कहां गये खान<sup>२</sup> मद माते, जो सूरज चाँद चमकाते ।

न देखे कहां जी वह जाते, तू खुश कर नींद क्यों सोया ॥ २ ॥

जिन्हां घर लाल और हीरे, सदा मुख पान और बीड़े ।

उन्हां नूं खा गये कीड़े, तू खुश कर नींद क्यों सोया ॥ ३ ॥

जिन्हां घर पालकी घोड़े, ज़री ज़रवफत के जोड़े ।

तुही अब मौत ने तोड़े, तू खुश कर नींद क्यों सोया ॥ ४ ॥

जिन्हां दे बाल थे काले, मलाईया दूध से पाले ।

वह आखिर आग में डाले, तू खुश कर नींद क्यों सोया ॥ ५ ॥

जिन्हां संग प्यार था तेरा, उन्हां किया खाक में डेरा ।

न फिर वह करनगे फेरा, तू खुश कर नींद क्यों सोया ॥ ६ ॥

[ ३२ ]

रागिनी भुङ्ग ताल धीमा ।

पेथे<sup>१</sup> रहना नाहिं मत खरमस्तियां कर ओ ( टेक )

तनमद<sup>२</sup>, धन मद, और राज मद पी, कर मस्ती न कर ओ ॥ १ ॥ पे०

१ चिन के २ बड़े अहंकार वाले अथवा बड़े मान वाले खान घाहिय. ३ इस प्रकार, संसार में. ४ अहंकार.

औरव पांडव भोज और विक्रम, दस कहां गये किधर ओ ॥२॥ ऐ०  
रामचंद्र, लङ्केश<sup>१</sup>, विभीषण, लङ्का को गये खाली कर ओ ॥३॥ ऐ०  
काल वारुण निकाल अचानक, तुर्त ले जासी फड़ ओ ॥४॥ ऐ०  
साथ न जासी संपत<sup>२</sup> तेरे, ज़बत हो जासी घर ओ ॥५॥ ऐ०  
मर्घट दे बिच मिलसी भूमी साढ़े तीन हाथ भर ओ ॥६॥ ऐ०  
यह देह खेह<sup>३</sup> हो जासी पल बिच, रूप जोवन जर<sup>४</sup> ओ ॥७॥ ऐ०  
शमीर कबीर<sup>५</sup> न बचिया कोई, मौत नूं दे कर ज़र<sup>६</sup> ओ ॥८॥ ऐ०

[ ३३ ]

राग पदाड़ी ।

धन जन<sup>१</sup> योवन संग न जाये प्यारे ! यह सब पीछे रह जावें ॥ टेक  
रैन<sup>२</sup> गंवाई देह निसारे<sup>३</sup>, प्यारे खा कर दिवस<sup>४</sup> गंवाये ।  
मानुष जनम अकारथ खोया, मूर्ख ! समझ न आवे ॥ १ ॥ धन०  
धन कारण जो होवे दीवाना, चारों दिशा को धावे ।  
राम नाम कभी न सुमरे सो अंते<sup>५</sup> पछतावे ॥ २ ॥ धन०  
प्रीति सहित मिल आवो रे साधो, ईश्वर के गुण गावें ।  
जिस के किये सदा शुभ होवे, तिस को काहे भुलावें ॥ ३ ॥ धन०

[ ३४ ]

इस तन चलना प्यारे ! कि डेहरा जंगल में मलना ( टेक )  
सूरत योवन भी चल जांदा, कोई दिन दा ढोल बजांदा ।  
आखर माटी में मलना । कि इस तन चलना० ॥ १ ॥

१ लंका का स्वामी रावण. २ धन दौलत. ३ राख. ४ गुरझाना. ५ बड़ा पुरुष,  
कवि का नाग है. ६ धन दौलत. ७ पुरुष ८ रात ९ खाये १० दिन. ११ अन्तकाल.

सब कोई मतलब दा है वेली<sup>१</sup>, तेरी जासी जान अकेली ।  
 ओड़क वेला<sup>२</sup> नहीं टलना । कि इस तन चलना० ॥ २ ॥  
 यह तो चार दिनां दा मेला, रहना गुरु न रहना चेला ।  
 इस तन आतिश<sup>३</sup> में जलना । कि इस तन चलना० ॥ ३ ॥  
 जिस नूं कहें तू मेरी मेरी, यह नहिं मेरी है ना तेरी ॥  
 इस ने खाक दिपे<sup>४</sup> रलना । कि इस तन चलना० ॥ ४ ॥  
 यह तन अपना देख न भुलरे, बिन ईश्वर के फना<sup>५</sup> है कुल रे ।  
 प्रभु दे भजन बिना गलना । कि इस तन चलना० ॥ ५ ॥  
 मिट्टा बोल हथ्यो<sup>६</sup> कुच्छ दे लै, नेकी कर ज़िंदगी दा है वेला ।  
 पिच्छों किसे नहीं चलना<sup>७</sup> । कि इस तन चलना० ॥ ६ ॥

[ ३५ ]

राग जंगला ।

कोइ दम दां इहां<sup>१</sup> गुज़ारा रे । तुम किस पर पाँव पसारा रे ।  
 इहां पलक भलक दा मेला है । रहना गुरु न रहना चेला है ॥  
 कोई पल का यहां गुज़ारा रे ॥ १ ॥ कोई दम०  
 यहां रात सराय का रहना है । कछु स्थिर होय न जाना है ।  
 उठ चलना सांभ सकारा<sup>२</sup> रे ॥ २ ॥ कोई दम०  
 ज्यों जल के बीच बताशा है । त्यों जग का सभी तमाशा है ॥  
 यह अपनी आँख निहारा<sup>३</sup> रे ॥ ३ ॥ कोई दम०  
 देखन में जो कोई आवे है । सब खाक माहिं मिल जावे है ॥  
 यह सभी काल का चारा<sup>४</sup> रे ॥ ४ ॥ कोई दम०

१ प्यारा. २ अन्त समय, ३ अग्नि. ४ खाक के बीच. ५ नाशवान. ६ हाथ से  
 ७ भेजना. ८ यहां. ९ सवेरे, प्रातःकाल. १० देखा. ११ पास, भोजन, आधीन.



यह दृष्टमान सब नाशी<sup>१</sup> है । इस काल के सब घर फांसी है ॥

इस काल सबन को मारा रे ॥ ५ ॥ कोई दम०

दर जिन के नौबत बाजे है । वे तख्त छोड़ कर भाजे हैं ॥

लशकर जिनके लाख हज़ारा रे ॥ ६ ॥ कोई दम०

[ ३६ ]

गजल ।

ज़रा टुक सोच पे गाफिल ! कि दम का क्या ठिकाना है ।

निकल जब यह गया तन से तो सब अपना बिगाना है ॥

मुसाफिर तू है और दुनियाँ सराय है, भूल मत गाफिल ! ।

सफर परलोक का आखिर, तुझे दरपेश आना है ॥ १ ॥ ज०

लगाता है अबस<sup>२</sup> दौलत पे, क्यों तू दिल को अब नाहक ।

न जावे संग कुछ हरगिज़, यहीं सब छोड़ जाना है ॥ २ ॥ ज०

न भाई बन्धु है कोई, न कोई आशना<sup>३</sup> अपना ।

बखूबी गौर कर देखा, तो मतलब का ज़माना है ॥ ३ ॥ ज़रा०

रहो लग याद में हक<sup>४</sup> की, अगर अपनी शफा<sup>५</sup> चहो ।

अबस दुनियाँ के धंधों में हुआ तू क्यों दिवाना<sup>६</sup> है ॥ ४ ॥ ज़रा०

[ ३७ ]

मान मन ! क्यों अभिमान करे (टेक)

योवन धन क्षणभंगुरतिन पै, काहे मूढ़ मरे ॥ १ ॥ मान०

१ नाश होने वाला. २ व्यर्थ, बेफायदा. ३ दोस्त, मित्र. ४ ख़त स्वक़य, ईश्वर. ५ भलाई, बेदतरी. ६ पागल.

जल बिच-फेन बुदबुदा जैसे, छिन छिन बन बिगड़े ।  
 त्यों यह देह खेह होय छिन में, बहुर<sup>१</sup> न दीख पड़े ॥ २ ॥ मान०  
 मंदिर महल बहल रथ बाहन<sup>२</sup>, यहीं रह जात धरे ।  
 भाई बन्धु कोई संग न लागे, न कोई साख<sup>३</sup> भरे ॥ ३ ॥ मान०  
 चाम के देह से नेह<sup>४</sup> लगावे, उस बिन नाहिं टरे ।  
 धृक् तो को अरे ! अति सुंदर हरि ! ताकी सुध न करे ॥ ४ ॥ मान०  
 हरि चर्चा, सत सेवा अर्चा<sup>५</sup>, इन ते निपट डरे ।  
 कूकर सूकर तुल्य भोग रत अंघ होय बिचरे ॥ ५ ॥ मान०

[ ३८ ]

मना<sup>६</sup> ! तैं ने राम न जान्या रे । (टेक)  
 जैसे मोती ओस<sup>७</sup> का रे, तैसे यह संसार ।  
 देखत ही को मिलमलारे, जात न लागी वार<sup>८</sup> ॥ मना० १  
 सोने का गढ़ लङ्का<sup>९</sup> बनायो, सोने का दरवार ।  
 रती इक सोना न मिला रे, रावण मरती वार ! ॥ मना० २  
 दिन गंवाया<sup>१०</sup> खेल में रे, रैण<sup>११</sup> गंवाई सोय ।  
सुरदास भजो भगवन्ता<sup>१२</sup>, होनी होय सो होय ॥ मना० ३

[ ३९ ]

दिला<sup>१३</sup> ! गाफिल न हो यक दम कि दुनिया छोड़ जाना है । } टेक  
 वगीचे छोड़ कर खाली ज़िमीं अन्दर समाना है ॥ }

१ फिर. २ सवारी. ३ अभिप्राय कि न कोई साथ रहे और न कोई सहायता करे. ४ प्रीति सोड़. ५ पुजा. ६ हे मन. ७ माफ, तरेल, शयनम्. ८ घमकीला. ९ जाते समय देर नहीं लगाता. १० सोने की संका. ११ खोया. १२ रत्न. १३ भगवान को भजो जो होना है सो होने दो (होता रहे). १४ से दिल.

वदन नाजुक गुलों<sup>१</sup> जैसा, जो लेटे सेज फूलों पर ।  
 होवेगा एक दिन मुरदा, यही कीड़ों ने खाना है ॥ १ ॥  
 न बेली होयगा भाई, न वेटा बाप ना भाई ।  
 क्या फिरता है सौदाई, अमल ने काम आना है ॥ २ ॥  
 प्यारे ! नज़र कर देखो, पड़ी जो माड़ियां खाली ।  
 गये सब छोड़ फानी देह, दगावाजी का बाना है ॥ ३ ॥  
 प्यारे नज़र कर देखो, न खवेशों<sup>२</sup> में नहीं तेरा ।  
 जनों-फर्जन्द<sup>३</sup> सब कूकें, किसे तुझ को छुड़ाना है ॥ ४ ॥  
 गुलत<sup>४</sup>-कैहमी यही तेरी, नहीं आराम है इस जा<sup>५</sup> ।  
 मुसाफिर बेवतन<sup>६</sup> तू है, कहां तेरा ठिकाना है ॥ ५ ॥

[ ४० ]

चपल मन मान कही मेरी, न कर न हरि चिन्तन में देरी (देक)  
 लख चौरासी योनि भुगत के यह मानुष तन पायो ।  
 मेरी तेरी करते करते नाहक जन्म गमायो ॥ १ ॥ चपल<sup>१</sup>  
 मात पिता सुत भ्रात नारि पति देखन ही के नाते ।  
 अंत समय जब जाय अकेला तो कोई संग नहिं जाते ॥ २ ॥  
 दुन्या दौलत माल खज़ाने व्यंजन<sup>२</sup> अधिक लुहाने ।  
 प्राण छूटे सब होये पराये, मूरख मुक्त लुभाये ॥ ३ ॥ च०  
 काम क्रोध मद लोभ मोह यह पांचों बड़े लुटेरे ।  
 इन से बचने के लिये तू हरि चरणन चित्त दे रे ॥ ४ ॥ च०

१ पुष्प, फूल. २ संबन्धीजन, रिश्तेदार ३ स्त्री. पुत्र ४ देवकी, पुत्र. ५  
 स्थान, ६४ संसार के. ६ पिता घर से. ७ सदादेह मानुष पदार्थ, जिसे देह. ८ काम  
 शिव वा. लुभाय गया.



योग यज्ञ तप तीरथ संयम साधन वेद वताये ।

हरि सुमिरण सम एकहु नाहिं, बड़ भाग्य जो पाये ॥ ५ ॥ च०

[ ४१ ]

दुनिया के जंगलों में है यह दिल भटक रहा ।

अटका यहां जो आज, तो कल वहां अटक रहा ॥ १ ॥

मंदिर में फँस गया कभी, मसजिद में जा फँसा ।

छूटा जो यहां से आज, तो कल वहां अटक रहा ॥ २ ॥

हिन्दू का और किसी को मुस्लमान का गुरुर ।

पैसे ही बाहियात में हर इक भटक रहा ॥ ३ ॥

वह हर जगह मौजूद है जिसकी तलाश है ।

आँखों के आगे परदा-ए<sup>१</sup>-गुफलत लटक रहा ॥ ४ ॥

गुलज़ार<sup>२</sup> में है, गुल में है, जंगल में, बैहर<sup>३</sup> में ।

सीना में, सिर में, दिल में, जिगर में, खटक रहा ॥ ५ ॥

ढूँढ़ा है उस को जिस ने उसे आन कर मिला ।

अटका जो उसकी राह से उस से अटक रहा ॥ ६ ॥

सिद्क<sup>४</sup> और यक़ीन् के बिना दिलवर मिले कहां ।

गो जंगलों में बरसों ही सिर को पटक रहा ॥ ७ ॥

यार ! उम्मेद एक पे रख, दिल को साफ कर ।

क्या विसवसा<sup>५</sup> का काँटा है दिल में खटक रहा ॥ ८ ॥

१ सुस्ती ( अविद्या ) का पर्दा, २ बांग. ३ सपुत्र. ४ शुद्ध हृदय. ५ संशय,  
शुषा, यक.

[ ४२ ]

राग खंभाच ताल ।

अंचल मन निशदिन<sup>१</sup> भटकत है ।  
 ऐजी भटकत है, भटकावत है ॥ टेक ॥  
 ज्यों मर्कट<sup>२</sup> तरु ऊपर चढ़ कर ।  
 डार डार पर लटकत है ॥ १ ॥ चंचल०  
 रुकत<sup>३</sup> यंतन से क्षण विषयण ते ।  
 फिर तिन ही में अटकत है ॥ २ ॥ चंचल०  
 काँच के हेत लोभ कर मूरख ।  
 चिन्तामणि को पटकत है ॥ ३ ॥ चंचल०  
 ब्रह्मानन्द समीप छोड़ कर ।  
 तुच्छ विषय रस गटकत<sup>४</sup> है ॥ ४ ॥ चंचल०

[ ४३ ]

फाँफोटी दुमरी ताल

भजन विन वृथा जन्म गयो ॥ टेक ॥  
 बालपनों सब खेल गमायो, योवन काम<sup>१</sup> बह्यो ॥ १ ॥ भ०  
 बूढ़े रोग ग्रसी सब काया, पर<sup>२</sup> वश आप भयो ॥ २ ॥ भ०  
 जप तप तीरथ दान न कीनो, ना हरिनाम लियो ॥ ३ ॥ भ०  
 ऐ मन मेरे ! विना प्रभु सुमरण, जाकर नरक पयो ॥ ४ ॥ भ०

१ रात दिन. २ कपि, चन्दर. ३ रुक कर, रुका हुआ होकर. ४ गट गट कर पी रहा है. ५ विषय वासना में लिप्त हो गया. ६ दूसरे के वश में, दूसरे के आधीन.

[ ४४ ]

धनासरी ।

मेरी मन रे भज ले कृष्ण मुरारी ( टेक )  
 चार दिनन के जीवन खातिर रे कैसी जाल पसारी ।  
 कोई न जावत संग तुम्हारे, रे मात पिता सुत<sup>१</sup> नारी ॥ मेरी०  
 पाप कपट कर संचित<sup>२</sup> धनको रे मूरख मौत बिसारी ।  
 ब्रह्मानन्द जन्म यह दुर्लभ रे, देत वृथा किम डारी ॥ मेरी०

[ ४५ ]

भैरवी ।

सुनो नर रे राम भजन कर लीजे ( टेक )  
 यह माया बिजली का चमका रे, या में चित्त न दीजे ।  
 फूटे घट<sup>३</sup> में जल न रहावे रे, पल पल काया<sup>४</sup> छीजे<sup>५</sup> ॥ भजन०  
 सबही टाठ पड़ा रह जावे रे, चलत नदी जल पीजे ।  
 ब्रह्मानंद रामगुण गावो रे, भवजल<sup>६</sup> पार तरीजे ॥ भजन०

[ ४६ ]

राग धनासरी तास धुनाली

रचना राम रचाई रे सन्तो ! रचना राम रचाई ॥ टेक ॥  
 इक बिनसे<sup>७</sup> इक स्थिर माने, अचरज लख्यो न जाई ॥ रे०

१ पुत्र. २ एकत्र, जमा, इकट्ठा. ३ चढ़ा. ४ शरीर, ५ भुरभाना, घटना. ६  
 घसार रुपी समुद्र. ७ नाथ होना.



काम क्रोध मोह मत्सर<sup>१</sup> लालच, हरि सुरता<sup>२</sup> विसराई ॥ रे०  
 झूठा तन साचा कर मान्यो, ज्युं सुपन<sup>३</sup> रैन<sup>४</sup> में आई ॥ रे०  
 जो दीखे सो सकल<sup>५</sup> विनासे, ज्युं वादर<sup>६</sup> की छाई ॥ रे०  
 नाम रूप कछु रहन न पावे, खिन में सर्व उड़ जाई ॥ रे०  
 जिस प्यारे हरि आप पिछाना, तिस सब विधे<sup>७</sup> बन आई ॥ रे०

[ ४७ ]

होरी राग जिला काफी,

जीआ<sup>१</sup> तोकुं समझ न आई, मूरख तैं उमर गंवाई ( टेक )  
 मात पिता सुत<sup>२</sup> कुटुंब कबीला, धन योवन ठकुराई<sup>३</sup> ।  
 कोई नहिं तेरो, तूं न किसी को संग रह्यो ललचाई ॥  
 उमर में तैं धूल उड़ाई, जीआ तोकुं समझ न आई ॥ १ ॥  
 राग द्वेष तूं किन से करत है, एक ब्रह्म रह्यो छाई ।  
 जैसे स्वान<sup>४</sup> रहे काँच भुवन<sup>५</sup> में, भौंक भौंक मर जाई ॥  
 खबर अपनी नहिं पाई, जीआ तोकुं समझ न आई ॥ २ ॥  
 लोभ लालच के बीच तूं लटकत, भटक रह्यो भरमाई ।  
 तृपा न जायगी मृगजल पीवत, अपनो भरम गंमाई ॥  
 श्याम को जान ले भाई, जीआ तोकुं समझ न आई ॥ ३ ॥  
 अगम<sup>६</sup> अगोचर<sup>७</sup> अकलंक<sup>८</sup> अरूपी<sup>९</sup>, घट घट रहत समाई ।

१ अहंकार, गुरु. २ हरि की सुरती, ध्यान. ३ स्वप्न, रुवाव. ४ रात. ५  
 सब नाश होवे. ६ बादल. ७ तरह. ८ से दिल, मन. ९ पुत्र. १० मिलकीयत, बड़ा  
 पद ठाकुपन. ११ कुत्ता. १२ शीशे का महल. १३ जहाँ कोई जा न सके दुर्गम,  
 अवघट, गहन १४ इन्द्रियों की पहुँच से परे, इन्द्रियातीत, बोधगम्य, १५ कलंक  
 रहित. १६ रूप रहित.

सूरश्याम प्रभु तिहारे भजन बिन, कबहुं न रूप दिखाई ॥  
श्याम को औ लखो 'सदाई', जीआ तो कूं समझ न आई ॥ ४ ॥

[ ४८ ]

राग खंमाच ताल दादरा ।

तर<sup>१</sup> तीव्र भयो वैराग्य तो मान अपमान क्या ।  
जानयो अपना आप तो वेद पुराण क्या ॥  
खुद मस्ती कर मस्त तो फिर मदरा पान क्या ॥  
किंचा देहाध्यास तो आत्म ज्ञान क्या ॥  
बीत<sup>२</sup> राग जब भये, तो जगत की लोड़ क्या ।  
तृणवत जानयो जगत तो लाख करोड़ क्या ॥  
चाह-रज्जू<sup>३</sup> से बन्धयो तो फिर मरोड़ क्या ।  
किंचा भ्रान्ति साथ, तो विवाद<sup>४</sup> फिर होर<sup>५</sup> क्या ॥

[ ४९ ]

यह पीउ<sup>६</sup> अजब है दुन्या की और क्या क्या जिन्स इकट्ठी है ।  
यां माल किसी का मोठा है और चीज़ किसी की खट्टी है ॥  
कुछ पकता है, कुछ भुनता है, पकवान मिठाई फट्टी है ।  
जब देखा खूब तो आखिर को न चूलहा भाड़ न भट्टी है ॥  
गुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है ।  
हम देख चुके इस दुन्या को, यह धोखे की सी टट्टी है ॥ १ ॥

१ पाओ, समझो. २ सर्वदा हमेशा. ३ बहुत भारी. ४ राग रहित. ५ इच्छा,  
वासना की रस्सी. ६ भगड़ा. ७ और अधिक, दूसरी. ८ संझी.

कोई ताज खरीदे हंस हंस कर, कोई तखत खड़ा बनवाता है ।  
 कोई रो रो मातम करता है, कोई गोर<sup>१</sup> पड़ा खुदवाता है ॥  
 कोई भाई वाप चचा नाना, कोई बाबा पूत कहाता है ।  
 जब देखा खूब तो आखिर को, नहीं रिशता<sup>२</sup> है नहीं नाता है ॥  
 गुल<sup>३</sup> शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है ।  
 हम देख चुके इस दुनिया को सब धोखे की सी टट्टी है ॥ २ ॥  
 कोई बाल बढ़ाये फिरता है, कोई सिर को घोट मुंडाता है ।  
 कोई कपड़े रंगे पहने है, कोई नंग मनंगा आता है ॥  
 कोई पूजा कथा बखाने है, कोई रोता है, कोई गाता है ।  
 जब देखा खूब तो आखिर को, सब छोड़ अकेला जाता है ॥  
 गुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है ।  
 हम देख चुके इस दुनिया को, सब धोखे की सी टट्टी है ॥ ३ ॥  
 कोई टांपी टोप सजाता है, कोई बांद फिरे अमामा<sup>४</sup> है ।  
 कोई साफ ब्रह्मा<sup>५</sup> फिरता है, नै<sup>६</sup> पगड़ी नै पाजामा है ॥  
 कमखाव गज्जी और गाढ़े का, नित कज़िया<sup>७</sup> है, हंगामा<sup>८</sup> है ।  
 जब देखा खूब तो आखिर को, न पगड़ी है न जामा है ॥  
 गुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है ।  
 हम देख चुके इस दुनिया को, सब धोके की सी टट्टी है ॥ ४ ॥

[ ५० ]

जो खाक से बना है, वह आखिर को खाक है ॥ टेक ॥

१ क़बर. २ सम्बन्ध. ३ शोर शराबा. ४ पगड़ी. ५ नंगा. ६ नहीं. ७ क़गड़ा.

८ लड़ाई.



दुन्या से जब कि औलिया<sup>१</sup> अरु अंवीया<sup>२</sup> उठे ।  
 अजसाम<sup>३</sup> पाक उन के इसी खाक में रहे ॥  
 रुहें<sup>४</sup> हैं खूब जान में, रुहों के हैं मज्जे ।  
 यह जिस्म से तो अब यही सावित हुआ मुझे ॥१॥ जो०  
 वह शखस थे जो सात विलायत के बादशाह ।  
 हशमत<sup>५</sup> में जिन की अर्श<sup>६</sup> से ऊंची थी वारगाह ॥  
 मरते ही उनके तन हुए गलियों की खाके-राह<sup>७</sup> ।  
 अब उनके हाल की भी यही बात है गवाह ॥ २ ॥ जो०  
 किस किस तरह के हो गये महबूब<sup>८</sup> कजकुलाह<sup>९</sup> ।  
 तन जिन के मिस्ल<sup>१०</sup> फूल थे और मुंह भी रश्के<sup>११</sup>-माह ॥  
 जाती है उनकी कबर पै जिस दम मेरी निगाह<sup>१२</sup> ।  
 रोता हूं जब तो मैं यही कह कह के दिल में आह ॥३॥ जो०

[ ५१ ]

साईं की सदा

यह दुनियाँ जाये-गुज़श्तन<sup>१३</sup> है, साईं की है यह सदा<sup>१४</sup> बाबा ॥ (टेक)

यहां जो है रूप-व्रफतन<sup>१५</sup> है, तू इस में दिल न लगा

बाबा ॥ १ ॥ यह०

१ बड़े बड़े पैगम्बर, २ नबी लोग, बड़े बड़े आत्म ज्ञानी महात्मा  
 ३ पवित्र देह, शरीर, ४ जीवात्मा, ५ इज्जत मान, विभूती, ६ आकाश, ७ रास्ते  
 की धूल ( मिट्टी ), ८ प्यारे नायक, ९ टेढ़ी टोपी पहनने वाले, जो सुन्दर पुरुष  
 अपने सौन्दर्य को बढ़ाने के लिये पहना करते हैं, १० समान, सादृश्य, ११  
 चन्द्रमा से ईर्ष्या करने वाला, अर्थात् चन्द्रमा से भी अधिक सुन्दर, १२ दृष्टि, १३  
 गुज़रने ( छोड़ने ) का स्थान, १४ आवाज़, पुकार, १५ चले जाने वाला, स्थान न  
 रहने वाला,

ज्ञानी न रहे, ध्यानी न रहे, जो जो थे लासानी न रहे ।  
थे आखिर को फ़ानी<sup>१</sup> न रहे, फ़ानी को कहां वफ़ा<sup>२</sup>  
बाबा ॥ २ ॥ यह०

थे कैसे कैसे 'शाह ज़िमी'<sup>३</sup>, थे कैसे कैसे महल<sup>४</sup> संगीन ।  
हैं आज कहां वह मकानो-मकी<sup>५</sup>, न निशान रहा, न पता  
बाबा ॥ ३ ॥ यह०

न वह शूर<sup>६</sup> रहे, न वह वीर रहे न, वह शाह रहे, न वज़ीर रहे ।  
न अमीर रहे, न फ़कीर रहे, मौला का नाम रहा  
बाबा ॥ ४ ॥ यह०

जो चीज़ यहां है फ़ानी है, जो शै है आनी जानी है ।  
दुनियाँ वह राम कहानी है, कुछ हाल हमें न खुला  
बाबा ॥ ५ ॥ यह०

माल इमाल<sup>७</sup> को लाते हैं, फल साथ अपने ले जाते हैं ।  
जो देते हैं सो पाते हैं, है ग्रूहि तार लगा बाबा ॥ ६ ॥ यह०  
आने जाने का यहां तार लगा, दुनियाँ है इक बाज़ार लगा ।  
दिल इसमें न तू ज़िनहार<sup>८</sup> लगा, कब निकला वह जो फंसा  
बाबा ॥ ७ ॥ यह०

यां मर्द वही कहलाते हैं, जो आकर फिर नहीं आते हैं ।  
जो आते हैं और जाते हैं, वह मर्द नहीं असल<sup>९</sup>  
बाबा ॥ ८ ॥ यह०

१ नाश होने वाला. २ स्थिर रहना, नित्य रहना. ३ पृथिवी के राजा. ४  
पत्थर के महल. ५ जगह पर स्थायी. ६ शूरता, बहादुर. ७ कर्म, पुण्यार्थ. ८ दादापि.  
९ असल, सच्चे, नेक पुरुष.

क्यों उमर अवस<sup>१</sup> तू ने खोई, कुछ कर ले अबभी खुदा-जोई ।  
मैं कहता हूँ तुझ से यहां कोई, न रहा, न रहा, न रहा

बाबा ॥ ६ ॥ यह०

तैह कर तैह कर बिस्तर अपना, बान्ध उठ कर रखते-सफर<sup>३</sup>  
अपना ।

दुनियाँ की सराय को घर अपना, तू ने है ग़लत समझा  
बाबा ॥ १० ॥ यह०

क्या घोड़े बेच<sup>४</sup> के सोया है, क्या वक्त रायगाँ<sup>५</sup> खोया है ।  
जो सोया है वह रोया है, कहते हैं मर्दे-खुदा<sup>६</sup> बाबा ॥ ११ ॥ यह०

जितना यह माल खज़ाना है, और तू ने अपना माना है ।  
सब छोड़ के यहाँ से जाना है, करता है इकट्ठा क्या  
बाबा ॥ १२ ॥ यह०

क्यों दिल दौलत में लगाया है, सच कहता हूँ भूड़ी माया है ।  
यह चलती फिरती छाया है, क्या है इतवार इस का  
बाबा ॥ १३ ॥ यह०

दुनियाँ न कहो तू मेरी है, गाफिल दुनियाँ कब तेरी है ।  
साई की जैसे कैरी है, फिरता है तू इस जा<sup>७</sup> बाबा  
॥ १४ ॥ यह०

यह मुलको-माल, यह जाहो-हशम<sup>८</sup>, यह ख्वेशो-अफ़ारब<sup>९</sup>  
जो हैं बहम<sup>१०</sup> ।

१ व्यर्थ, बेफ़ायदा, २ ईश्वर प्राप्ति की जिज्ञासा, ३ सफर (चलने का)  
सर्व अस्वार्थ, ४ अर्थात् वे खबर घन सुश्रुति में सोया है, ५ बे फायदा, निष्फल,  
६ दानी, आत्मवेत्ता, ७ जगह, वहाँ, ८ पद और मान ९ अपने सबन्धी, कुटुम्बी,  
रिगते दान और पड़ोसी, १० साथ प्राप्त हुये २

सब जीते जी के हैं हमदम, फिर चलना है तनहा<sup>१</sup>  
 बाबा ॥ १५ ॥ यह०  
 जो नेक कमाई करते हैं, जो सांसो पार<sup>२</sup> गुज़रते हैं ।  
 जो जीते जी ही मरते हैं, जीना है बस उनका बाबा  
 ॥ १६ ॥ यह०

## भक्ति ( इश्क )

[ ५२ ]

राग भैरवी ताल दादरा ।

अकल के मदरस्से से उठ, इश्क के मैकदे<sup>१</sup> में आ ।  
 जामे-शराबे-बेखुदी<sup>२</sup>, अब तो पीया जो हो सो हो ॥ १  
 लाग<sup>३</sup> की आग लग उठी, पम्बा<sup>४</sup> सां सब जल गया ।  
 रखते-वजूदो-जानो-तन<sup>५</sup>, कुच्छ न बचा जो हो सो हो ॥ २  
 हिजर<sup>६</sup> की जब मुसीबतें, अर्ज़ की उसके रूबरू ।  
 नाज़ो-अर्दा<sup>७</sup> से मुस्करा<sup>८</sup>, कहने लगा जो हो सो हो ॥ ३  
 इश्क<sup>९</sup> में तेरे कोहे-गुम<sup>१०</sup>, सिर पै लिया जो हो सो हो ।  
 पेशो-निशाते-ज़िन्दगी<sup>११</sup>, सब छोड़ दिया जो हो सो हो ॥ ४

१ अकेले २ अभिप्राय यह है कि जो जीते जी परमेश्वर को प्राप्त हो कर जीवमुक्त हो जाते हैं. ३ ( प्रेम का ) शराब खाना. ४ बेखुदी की शराब का प्याला. ५ प्रेम की लग्न ( लटक ). ६ रुई के फन्ने की तरह. ७ शरीर प्राण और तन रूपी असबाब कुच्छ न बचा. ८ विरह. ९ नखरे टखरे. १० हँस कर. ११ प्रेम स्नेह. १२ शोक का पर्वत. १३ जिन्दगी की प्रसन्नता और आनन्द.



दुम्या के नेको-बद<sup>१</sup> से कात, हम को न्याज<sup>२</sup> कुछ नहीं ।  
आप<sup>३</sup> से जो गुजर गया, फिर उसे क्या जो हो सो हो ॥ १ ॥

[ ५३ ]

राग भैरवी ताल दादरा ।

ये दिल ! तू रहे इश्क<sup>४</sup> में मरदाना हो, मरदाना हो ।  
कुर्यान कर अपनी जान को, जानाना<sup>५</sup> हो जानाना हो ॥ १ ॥  
तू हज़रते-इन्सान है, लाज़िम तुझे इफ़ान<sup>६</sup> है ।  
हरगिज़ न तू हैवान सा दीवाना<sup>७</sup> हो दीवाना हो ॥ २ ॥  
हर ग़म से तू आज़ाद हो, खुर्सन्द<sup>८</sup> हो और शाद<sup>९</sup> हो ।  
हर दो जहाँ के फिक्र से बेगाना<sup>१०</sup> हो, बेगाना हो ॥ ३ ॥  
कर तर्क ज़ोहद<sup>११</sup> ज़ाहिदा<sup>१२</sup> ! मजलस-निशी<sup>१३</sup> रिंदो का हो ।  
दीवाननी<sup>१४</sup> से दर्गुज़र, फरज़ाना<sup>१५</sup> हो, फरज़ाना हो ॥ ४ ॥  
मैं तू का मनशा अक्ल है, लाज़िम है तुझ को कादरी<sup>१६</sup> ।  
पाँ कर शराबे-बेखुदी, मस्ताना हो, मस्ताना हो ॥ ५ ॥

[ ५४ ]

लायनी सबैया ।

समझ बूझ<sup>१७</sup> दिल खोज प्यारे ! आशिक हो कर सोना क्या ॥

१ अच्छे और बुरे, पुन्य पाप. २ कवि का नाम. ३ जान इचेली पर रखे रखना, अर्थात् जो अहंकार को नारे जीते हुए हो, वा अपने आप से गुजर चुका हो. ४ प्रेम के मार्ग में. ५ आशिक अर्थात् जान देने वाला. ६ आत्म ज्ञान. ७ पागल. ८ आनन्द. ९ खुश, प्रसन्न. १० फिक्र रहित हो, निश्चिन्त. ११ तप, कर्म काण्ड. १२ तपी, कर्मकांडी. १३ मस्ती की सभा में बैठने वाला बन. १४ पागलपन. १५ आत्मवित, अक्लमन्द. १६ कवि का नाम है. १७ दिल में विचार कर के.

जिन नैनों से नींद गंवाई, तकिया लेफ बिछौना क्या ॥  
 रुखा सुखा राम का दुकड़ा, चिकना और सलूना क्या ॥  
 पाया है तो कर ले शादी<sup>१</sup>, पाई पाई पर खोना क्या ॥  
 कहत कुमाल<sup>२</sup> प्रेम के मार्ग<sup>३</sup>, सीस दिया फिर रोना क्या ॥

[ ५५ ]

राग खमाज ताल दादरा ।

अब तो मेरा राम नाम, दूसरा न कोई (टेक)  
 माता छोड़ी, पिता छोड़े, छोड़े सगा सोई ।  
 लाधू संग बैठ बैठ, लोक लाज खोई ॥ अब तो० १  
 संत देख दौड़ आई, जगत देख रोई ।  
 प्रेम आँसू डार डार, अमर<sup>४</sup> बेल बोई ॥ अब तो० २  
 मारग में तारण<sup>५</sup> मिले, संत राम दोई ।  
 संत सदा शीश<sup>६</sup> पर, राम हृदय होई ॥ अब तो० ३  
 अंत में से तंत<sup>७</sup> काढ़यो, पिछ्छे रही सोई ।  
 राणे भेज्यो विष का प्याला, पीते मस्त होई ॥ अब तो०  
 अब तो बात फैल गयी, जाने सब कोई ।  
 दास मीरां लाल गिरधर, होनी सो होई ॥ अब तो० ५

[ ५६ ]

राग कालंगड़ा ताल धुमाली ।

माई ! मैं ने गोविन्द लीना मोल (टेक)

१ खुशी. २ कवि का नाम ३ रास्ता. ४ सर्वदा रहने वाली. ५ पार फरने वाले, बचाने वाले, उद्धार करने वाले. ६ सिर, मस्तक. ७ तत्त्व, सत्य वस्तु से अभिप्राय है. ८ जहर.

कोई कहे हलका, कोई कहे भारी, लिया तराजू तोल ॥ माई०  
 कोई कहे सस्ता, कोई कहे महंगा, कोई कहे अनमोल ॥ माई०  
 वृन्दावन की कुंज गली में, लिया बजा के ढोल ॥ माई०  
मीरा कहे प्रभु गिरिधर नागर, पूर्व जन्म के बोल ॥ माई०

[ ५७ ]

देश ताल तैयार ।

जूहीं आमद<sup>१</sup> आमदे-इश्क का मुझे दिल ने मुज़दह<sup>३</sup> सुनादिया ।  
 खिदो-हवासी-शकेब<sup>२</sup> ने वहीं कूसे-कूच<sup>४</sup> बजा दिया ॥ १ ॥  
 जिसे देखना ही मुहाल<sup>५</sup> था; न था जिस का नामो-निशां कहीं ।  
 सो हर एक ज़रें में इश्क ने मुझे उस का जलवा<sup>६</sup> दिखा दिया ॥ २ ॥

पंक्तिवार अर्थ ।

- ( १ ) जिस समय मेरे अन्दर अपने स्वरूप के इश्क ( प्रेम ) के आने की खुशखबरी दिल ने सुनाई, उस समय अकल और होश और सन्तोष ने मेरे अन्दर से निकलने का नक्क़ारा बजा दिया ( अर्थात् भीतर से होश हवास निकलने लगे ) ।
- ( २ ) ( प्रेम आने से पहिले ) जिसको देखना कठिन था और जिस का नाम और निशान नज़र नहीं आता था, उसका हर एक अणु मात्र में भी इस इश्क ( प्रेम ) ने मुझे दर्शन अब करा दिया ।

१ प्रेम का आगमन. २ खुश खबरी. ३ अकल, होश और सन्तोष. ४ चलने का नक्क़ारा. ५ कठिन. ६ दर्शन.

करूँ क्या बियान मैं हमनिशीं<sup>१</sup> ! असर उस की लुतफे-निगाह<sup>२</sup> का ।  
 कि तऽय्युनात<sup>३</sup> की कैद से मुझे एक दम में छुड़ा दिया ॥ ३ ॥  
 वह जो नकशे-पा<sup>४</sup> की तरह रही थी नमूद<sup>५</sup> अपने वजूद<sup>६</sup> की ।  
 सो कशश से दामने-नाजूकी<sup>७</sup> उसे भी ज़िमीन से मिटा दिया ॥ ४ ॥  
 तेरी नासिहां<sup>८</sup> ! यह चुनाँ चुनीं<sup>९</sup>, कि है खुद पसन्दी के सबक्रीन्<sup>१०</sup> ।  
 न दिखाई देगी तुझे कहीं, कभी जो किसी ने सुझा दिया ॥ ५ ॥

- ( ३ ) हे प्यारे साथी ! मैं उस अपने प्यारे स्वरूप की दृष्टि के आनन्द के प्रभाव को ( आत्मानुभव के प्रभाव को ) क्या वर्णन करूँ कि उस [ अनुभव ] ने मुझे सर्व बन्धनों की कैद से एक दम में छुड़ा दिया [ अर्थात् सर्व बन्धनों से तत्काल मुक्त कर दिया ] ।
- ( ४ ) ज़िमीन पर पाद्यों (पाद) के चिह्न की तरह जो अपने तन की प्रतीति थी सो उस स्वरूप [ पार ] के नाजूक परले के आकर्षण [अर्थात् अनुभव के बड़ने] ने उस को भी पृथिवी से मिटा दिया ।
- ( ५ ) हे उपदेश करने वाले ! तेरी यह 'क्यों कब' अहंकार के कारण से हैं । अगर किसी ने तुझ को सुझा दिया अर्थात् अनुभव करा दिया तो यह क्यों किस तरह ( अर्थात् क्यों और कैसे होश उड़ जाते हैं इत्यादि ) तुम को भी नहीं दिखाई देंगे ।

१ साथ बैठने वाला, २ दृष्टि का आनन्द वा प्रभाव, ३ बन्धन परिलिङ्गता, ४ पाद का चिह्न, ५ व्यक्ति, प्रतीति, स्पष्ट चिह्न, ६ तन, ७ बारीक वा पतला परला, ८ उपदेश करने वाले, ९ क्यों, किस तरह, १० नज़दीक, समीप



तुझे इश्के-दिल से ही काम था, न कि उस्तखानों<sup>१</sup> का फूंकना ।  
ग़ज़ब एक शेर के वास्ते तू ने नैस्तां<sup>२</sup> को जला दिया ॥ ६ ॥

यह निहाल<sup>३</sup> शोलाये-हुस्न<sup>४</sup> का तेरा बड़ के सर बफलक<sup>५</sup> हुआ ॥  
मेरी काये-हस्ती<sup>६</sup> ने मुश्तइल<sup>७</sup> हो उसे यह नश्वो-नुमा<sup>८</sup> दिया ॥७॥

( ६ ) इस के दो मतलब हैं:—( १ ) ऐ ब्रह्म साक्षात्कार के जिज्ञासू !

तुम को दिल में प्रेम भड़काना चाहिये था, न कि अज्ञानी तप-  
स्वियों की तरह हठ योग इत्यादि से तन बदन को सुखाना और  
अस्तियों को जलाना था । बड़े आश्चर्य की बात है कि तूने  
एक शेर ( दिल ) के क़ाबू करने के लिये सारे जंगल ( अर्थात्  
इस शरीर को जिस में यह दिल रूपी शेर रहता है ) को व्यर्थ  
आग लगादी, मुफ्त में शरीर को जर्जरी भूत कर दिया ।

दूसरा अर्थ ( २ ) ऐ यार ! ( प्रेमात्मन् ) ! तुझे हमारा दिली प्रेम  
लेना चाहिये था, न कि हड्डियों और शरीर को जलाना और  
बरबाद करना था । बड़ा आश्चर्य है कि तू ने हमारा दिल  
लेने के बजाये हमारे शरीर रूपी वन को मुफ्त में जला दिया ।

( ७ ) यह तेरी सुन्दरता की अग्नि ( दमक ) की ताज़ी लाट आकाश  
तक उपर बढ़ गयी ( भड़क उठी ) और मेरे शरीर रूपी तृण  
ने उस से जल कर उस आग को और अधिक बढ़ा दिया  
( अर्थात् उस अग्नि को और भी ज्यादा भड़का दिया ) ।

१ हड्डियों. २ जंगल. ३ वृक्ष, बूटा. ४ सुन्दरता की ज्वाला. ५ आकाश तक  
पहुँचा. ६ मेरी स्थिति के तृण अर्थात् मेरी स्थिति रूप तृण ने. ७ जल कर था  
भड़क कर. ८ अधिक किवा, भड़काया.

[ ५८ ]

राग भैरवी ताल गजल.

तमाशाये-जहाम है और भरे हैं सब तमाशाई ।

न सूरत अपने दिलवर सी, कहीं अब तक नज़र आई ॥ १ ॥

न उस का देखने वाला, न मेरा पूछने वाला ।

इधर यह बेकसी<sup>१</sup> अपनी, उधर उस की वह तनहाई<sup>२</sup> ॥ २ ॥

मुझे यह धुन<sup>३</sup>, कि उस के तालबों<sup>४</sup> में नाम हो जावे ।

उसे यह कद<sup>५</sup>, कि पहिले देख लो है यह भी सौदाई ॥ ३ ॥

मुझे मतलूब<sup>६</sup> दीदार<sup>७</sup> उस का, इक खिल्वत<sup>८</sup> के आलम<sup>९</sup> में ।

उसे मंजूर, मेरी आजमायश, मेरी रुसवाई<sup>१०</sup> ॥ ४ ॥

मुझे घड़का, कि आजुर्दा<sup>११</sup> न हो मुझ से कुछ दिल में ।

उसे शिकवा<sup>१२</sup>, कि तूने क्यों तबीयत अपनी भटकाई ॥ ५ ॥

मैं कहता हूं, कि तेरा हुसैन<sup>१३</sup> आलम-सोज़<sup>१४</sup> है जाना<sup>१५</sup> ! ।

वह कहता है, कि क्या हो गर कलं मैं जुल्फ-आराई<sup>१६</sup> ॥ ६ ॥

मैं कहता हूं, कि तुझ पर इक ज़माना जान देता है ।

वह कहता है, कि हां वेइन्तहा हैं मेरे शैदाई<sup>१७</sup> ॥ ७ ॥

मैं कहता हूं, कि दिलवर ! मैं नहीं हूं क्या तेरा आशिक ?

वह कहता है, कि मैं तो रखता हूं ऐसी ही रानाई<sup>१८</sup> ॥ ८ ॥

१ कमज़ोरी, लाचारी. २ अकेला पन. ३ तय. ४ जिवाभुओं. ५ खयाल, तरंग, हठ. ६ ज़रूरत, आवश्यकता. ७ दर्शन. ८ एकान्त. ९ अवस्था, समय. १० खुबारी. ११ नाराज़, खफा, क्रुद्ध. १२ शिकायत. १३ सुंदरता. १४ जगत, दुनिया को जलाने वाला. १५ से प्यारे. १६ शृंगार करना अपने नक्श को सजाना, अपने बानों को सजाना. १७ आमक, आशिक, भक्त. १८ सुंदरता, यादूपन, कृता यज्ञ.

मैं कहता हूँ, कि तू मज़रो से मेरी बयों हुआ ओभल<sup>१</sup> ।  
 वह कहता है, यही अपनी अदा<sup>२</sup> मुझ को पसंद आई ॥ ६ ॥  
 मैं कहता हूँ, तेरा यह हुसन और देखूँ न मैं उस को ।  
 वह कहता है, कि मैं खुद देखता हूँ अपनी ज़ेबाई<sup>३</sup> ॥ १० ॥  
 मैं कहता हूँ, कि हृद पर्दा की आखर ताबकै<sup>४</sup> परदा ।  
 वह कहता है, कि कोई जब तक न हो अपना शनासाई<sup>५</sup> ॥ ११ ॥  
 मैं कहता हूँ, कि अब मुझ को नहीं है ताब<sup>६</sup> फुकत की ।  
 वह कहता है, कि आशिक हो के कैसी ना-शिकेबाई<sup>७</sup> ॥ १२ ॥  
 मैं कहता हूँ, कि सूरत अपनी दिखला दीजिये मुझ को ।  
 यह कहता है, कि सूरत मेरी किस को देगी दिखलाई ? ॥ १३ ॥  
 मैं कहता हूँ, कि जाना<sup>८</sup> ! अब तो मेरी जान जाती है ।  
 वह कहता है, कि दिल में याद कर बयों कर थी वह आई ॥ १४ ॥  
 मैं कहता हूँ, कि इक भलकी है काफ़ी मेरी तसकी<sup>९</sup> को ।  
 यह कहता है, कि वामे-तूर<sup>१०</sup> पर थी क्या निदा<sup>११</sup> आई ? ॥ १५ ॥  
 मैं कहता हूँ, कि मुझ बेसबर को किस तौर सवर आये ।  
 वह कहता है, कि मेरी याद की लज्जत<sup>१२</sup> नहीं पाई ॥ १६ ॥  
 मैं कहता हूँ, यह दामे-इशक<sup>१३</sup> बेढव तू ने फैलाया ।  
 वह कहता है, कि मेरी खुदपिसन्दी<sup>१४</sup>, मेरी खुदराई<sup>१५</sup> ॥ १७ ॥

१ लुपा, अमकट. २ चेटा चाल, नखरा टखरा. ३ सजावट, खूबसूरती. ४ कब तक. ५ अपने आप को पैहचानने वाला, आत्मचेता. ६ जुदावगी के सहने की ताकत. ७ बे सबरी. ८ रे प्यारे. ९ तरल्ली, संतोष. १० तूर के पहाड़ की चोटी पर [ जहाँ भूमा को ज्ञान मिला और जहाँ ईश्वर आग की लाट में भूमा के अने प्रकट हुआ था ] अर्थात् ज्ञान की शिखर पर. ११ आवाज़, बग़ी. १२ स्वाद, रस. १३ प्रेम का जल, इशक का फन्द. १४ अपनी सज़ी. १५ अपनी ही वसाई हुई, अपने आप से वा अपनी सज़ाई हुई.

[ ५६ ]

राग परज ताल ध्रुवाली ।

हमन<sup>१</sup> हैं इश्क के माते<sup>२</sup>, हमन को दौलतां क्या रे ।  
 नहीं कुछ माल की परवाह, किसी की मिन्नतां क्या रे ॥ १ ॥  
 हमन को खुश्क रोटी बस, कमर को थक लंगोटो बस ।  
 सिरै पै एक टोपी बस, हमन को इज्जतां क्या रे ॥ २ ॥  
 कब्रा<sup>३</sup> शाला वज़ीरों को, ज़री ज़रवफत अमीरों को ।  
 हमन जैसे फ़कीरों को, जगत की नेमतों<sup>४</sup> क्या रे ॥ ३ ॥  
 जिन्हों के सुखन<sup>५</sup> स्थाने हैं, उन्हीं को खल्क<sup>६</sup> माने है ।  
 हमन आशिक दीवाने हैं, हमन को मजलसां क्या रे ॥ ४ ॥  
 कियो हम दर्द का खाना, लियो हम भस्म का बाना ।  
 बली<sup>७</sup> बस शौक मन आना, किसी की मसहलतां<sup>८</sup> क्या रे ॥ ५ ॥

[ ६० ]

राग मारा ताल दादरा ।

हम कूये-दरे-यार<sup>१</sup> से क्या टल के जायेंगे ? ।  
 हम न पत्थर हैं फिसलने कि फिसल जायेंगे ॥ १ ॥  
 वसले-सनम<sup>२</sup> को छोड़ कर क्या काबे जायेंगे ।  
 वहां भी वही सनम<sup>३</sup> है तो क्या मुँह दिखायेंगे ॥ २ ॥

१ हम. २ मस्त ३ अमीरो की पोशाक. ४ जगत के आनंद दायक पदार्थ. ५ वाक्य, उपदेश बातें. ६ बुद्धि युक्त. ठीक. ७ दुनिया. ८ कवि का नाम. ९ रुलाह, नशीहत. १० प्यारे के द्वार की गली से. ११ प्यारे के दर्शन, मिलाप, संस. १२ प्यारा ( अपना स्वस्व ) .



हम अपने कूए-यार<sup>१</sup> को काया बनायेंगे ।  
 लैली<sup>२</sup> बनेंगे हम, उसे मजनू<sup>३</sup> बनायेंगे ॥ ३ ॥  
 गैरों से मत मिलो कि सितमगर<sup>४</sup> बनायेंगे ।  
 हम से मिला करो तुम्हें दिलवर बनायेंगे ॥ ४ ॥  
 आसन जमाये बैठे हैं, दर से न लायेंगे ।  
 हम कैहवशां<sup>५</sup> बनेंगे, तुम्हें माहरू<sup>६</sup> बनायेंगे ॥ ५ ॥

[ ६१ ]

राग गारा ताल ध्रुमाक्षी ।

( वर वजन सब से जहां में अच्छा )  
 कुंदन के हम डले हैं, जब चाहे तू गला ले ।  
 वावर<sup>७</sup> न हो, तो हम को ले आज आजमा ले ॥  
 जैसे तेरी खुशी हो, सब नाच तू नचाले ।  
 सब छान वीन कर ले, हर तौर<sup>८</sup> दिल जमा ले ॥  
 राजी हैं हम उसी में जिस में तेरी रजा<sup>९</sup> है ।  
 यहां यूं भी वाह वाह है और वूं भी वाह वाह है ॥ १ ॥ } टेक  
 या दिल से अब खुश होकर कर हमको प्यार प्यारे ! ।  
 या तेरा<sup>१०</sup> खैच जालिम<sup>११</sup> ! टुकड़े उड़ा हमारे ॥  
 जीता रखे तू हम को या तन से सिर उतारे ।  
 अब तो फकीर आशिक कहते हैं यूं पुकारे-राजी है ० २ ॥

१ कूवा, गली. २ लैली मिवा का नाम. ३ रज्ज प्यारे का नाम है. ४ जालिम, जुलूम करने वाला. ५ दुधिया रास्ता जो रात को आकाश में नज़र आता है, आकाश गंगा. ( milky path ) ६ चन्द्रमुख, चाँद मूरत. ७ बक्रीम, निरधन. ८ ताह, तरीका. ९ ग़र्ज़ी. १० तलवार ११ जुलूम करने वाला, निर्दयी, खताने वाला.

अब दर<sup>१</sup> पै अपने हम को रहने दे या उठा दे ।  
हम इस तरह भी खुश हैं, रख या हवा<sup>२</sup> बना दे ॥  
आशिक हैं पर कलन्दर चाहे जहाँ बिठा दे ।  
या अर्श<sup>३</sup> पर चढ़ादे या खाक में रुलादे-राजी है ० ३ ॥

[ ६२ ]

राग संधोरा ताल दीपचंदी ।

(टेठ) अरे लोगो ! तुम्हें क्या है ? या वह जाने या मैं जानूं ।  
वह दिल मांगे तो हाज़िर है, वह सिर मांगे तो बेसिर हूँ ।  
जो मुख मोड़ूं तो काफ़र हूँ, या वह जाने या मैं जानूं ॥ १ ॥  
वह मेरी बगल छुप रहता, मैं उस के नाज़<sup>४</sup> सभी सहता ।  
वह दो बातें मुझे कहता, या वह जाने या मैं जानूं ॥ २ ॥  
वह मेरे खून का प्यासा, मैं उस के दर्द का मारा ।  
दोनों का पन्थ<sup>५</sup> है नियारा, या वह जाने या मैं जानूं ॥ ३ ॥  
मूआ आशिक द्वारे पर, अगर बाक़िफ नहीं दिलबर ।  
अरे मुल्ला सपारा पढ़, या वह जाने या मैं जानूं ॥ ४ ॥

[ ६३ ]

राग संधोरा ताल दीपचंदी ।

रहा है होश कुछ बाकी उसे भी अब निवेड़े जा ।  
यही आहंग<sup>६</sup> पे मुतरब-पिसर<sup>७</sup> ! टुक और छेड़े जा ॥ १ ॥

पंक्तिवार अर्थ ।

( १ ) ए प्यारे ! ( आत्मा ) ! अगर कुछ संसार की होश बाकी रही हैं  
तो उसे भी अब दूर करदे, से रागी पुत्र ! यही सुर तू छेड़े जा ।

१ द्वार अर्थात् निकट अपने, २ दूर फेंक दे, परे करदे, ३ आकाश, ४ नखरे,  
५ मार्ग, ६ राग वा सुर, ७ गाने वाले के पुत्र,

मुझे इस दर्द में लज्जित<sup>१</sup> है, पे जोशे-जुनू<sup>२</sup> ! अच्छा ।  
 मेरे जखमे-जिगर के हर घड़ी टाँके उधेड़े जा ॥ २ ॥  
 उखड़ना दम, कलेजा मुंह को आना, ज़ार-बेताबी<sup>३</sup> ।  
 यही साहल<sup>४</sup> पे आना है, लगे हैं पार बेड़े जा ॥ ३ ॥  
 है नाला-ज़ार<sup>५</sup> ने पाया, सुरागे-नाका<sup>६</sup>-प-लैली ।  
 मुबादा<sup>७</sup> कैस<sup>८</sup> आ पहुँचे, हुदी<sup>९</sup> को ज़ोर छेड़े जा ॥ ४ ॥

- ( २ ) मुझे इस दर्द में आनन्द है क्योंकि यह दर्द अपने स्वरूप को याद दिलाती है, इस लिये ये पागलपन के जोश ! मेरे जिगर के टाँके ( मेरे अन्तःकरण के संशयों ) हर घड़ी उधेड़े ( तोड़े ) जा ।
- ( ३ ) दम उखड़ता है तो उखड़ने दे, कलेजा मुंह को आता है तो आने दे, बेताबी होती है तो हो, क्योंकि हम ने इसी ( दर्द के ) किनारे पर आना है ।
- ( ४ ) क्योंकि मज़नू के ज़ार ज़ार रोने ने ही लैली के घर का पता पाया, इस लिये ये ऊँट वाले ! ऊँट को बढ़ाये जा जिस से कहीं मज़नू न पीछे से आजाये [ क्योंकि जिस समय मज़नू ( मन ) ने लैली को मिल जाना है अर्थात् आत्मानुभव कर लेना है ] तो फिर ।

१ आनन्द, स्वाद. २ पागलपन का जोश. ३ दिल के घी. ४ बेताबी का दर्द, रोना. ५ किनारा. ६ रोने का शोर. ७ लैली ( माणूका ) के घर का पता. ८ ऐसा न हो, शायद. ९ मज़नू १० ऊँट को धकैलने की आवाज़ अर्थात् ऊँट को चलाये चल.

कहां लज्जत, कहां का दर्द, तूफां कैसा, जखमी कौन ? ।  
 हकीकत पर पहुँचते ही मिटे क्या खूब भेड़े<sup>१</sup> जा ॥ ५ ॥  
 अरे हट नाखुदा<sup>२</sup> ! पत्वार<sup>३</sup> ! मुड़ ले, टूट पर तूफां ।  
 अड़ा डा धम, अड़ा डा धम, किरारो<sup>४</sup> को थपेड़े जा ॥ ६ ॥  
 हैं हम तुम दाखिले-दफतर, खुमे-मय<sup>५</sup> में है दफतर गुम ।  
 न मुजरम मुद्दई बाकी, मिटे क्या खुश बखेड़े जा ॥ ७ ॥

[ ६४ ]

राग गारा ताल धुमाली ।

किस किस अदा<sup>६</sup> से तूने जल्वा<sup>७</sup> दिखा के मारा ।  
 आज़ाद हो चले थे, बन्दा बना के मारा ॥ १ ॥

- ( ५ ) लज्जत कहां, दर्द कहां, तूफां कैसा, जखमी कौन, क्योंकि असल तत्त्व पर पहुँचते ही ये सब मिट जाते हैं ।
- ( ६ ) अरे नाव के मल्लाह [ शरीर के अहंकार ] परे हट, पत्वार मुड़ता है तो मुड़ने दे, तूफां टूट पड़ता है तो टूटने दे, और तूफां के ज़ोर से अगर किनारे टूट कर पानी में अड़ा डा धम अड़ा डा धम कर के गिरते हैं तो गिरने दे ।
- ( ७ ) क्योंकि अब हम तुम दाखिल दफतर हैं और निजानन्द के सटके ( अन्तःकरण ) में दफतर गुम है, अब न कोई ( द्वैतरूप ) मुजरम मुद्दई बाकी है । वाह ! क्या उत्तम रीति से सब भगड़े निपटे हैं ।

१ सब भगड़े, कज़िये. २ बेड़ी का मल्लाह ( मांझी ). ३ नाव को मोड़ने ( धुमाने ) की चली ४ किनारे. ५ आनन्द की शराब का सटका. ६ मल्लाह. ७ दर्शन. ८ बड़ जीव, परिच्छिन्न, अमुजर.



खुद बोल उठा अनलहक<sup>१</sup>, खदु वन के शरह<sup>२</sup> तूने ।  
 इक मेद-हक<sup>३</sup> को नाहक<sup>४</sup> सूली चढ़ा के मारा ॥ २ ॥  
 क्यों कौहकपन<sup>५</sup> पै तू ने यह संग-रेज़ियां<sup>६</sup> कीं ।  
 ली उस की जाने-शिरों, तेशा उठा के मारा ॥ ३ ॥  
 पहिले बना के पुतला, पुतले में जान डाली ।  
 फिर उस को खुद कज़ा<sup>७</sup> को सूरत में आ के मारा ॥ ४ ॥  
 गरदन में कुमरियों<sup>८</sup> की उलफत का तौक<sup>९</sup> डाला ।  
 बुलबुल को प्यारे ! तूने गुल<sup>१०</sup> वन के खुद ही मारा ॥ ५ ॥  
 आँखों में तेरे ज़ालिम ! छुरियां छुपी हुई हैं ।  
 देखा जिधर को तूने पलकें उठा के मारा ॥ ६ ॥  
 गुच्चे<sup>११</sup> में आ के महका<sup>१२</sup>, बुलबुल में जा के चहका ।  
 इस को हँसा के मारा, उस को रूला के मारा ॥ ७ ॥

[ ६५ ]

राग तिलंग ताल दादरा ।

इक ही दिल था सो भी दिलबर ले गया अब क्या करूं ।  
 दूसरा पाता नहीं, किस को कहूं अब क्या करूं ॥ १ ॥  
 ले चुका था जाने-जानां<sup>१३</sup> जां को पहिले हाथ से ।  
 फिर भी हमले कर रहा, किस को कहूं अब क्या करूं ॥ २ ॥

१ शिवोऽहं २ कर्मकारण वा स्मृतिशास्त्र ३ शाययान् ४ उर्वर्य, विना  
 अपराध ५ मित्रा शीरों के प्यारे फरहाद का नाम है ६ पत्थर के के ७ छुट्टु ८  
 बुलबुल ९ पन्धन, संगल १० पुष्प ११ पुष्पकली १२ खिड़ा १३ जान की जो  
 जान ( जान से जति प्यारा )

हम तो दर<sup>१</sup> पर मुन्तज़र थे, तिशन-ए<sup>२</sup>-दीदार के ।  
 पहुँचते विसमिल<sup>३</sup> किया, किस को कहूं अब क्या करूं ॥ ३ ॥  
 याददाशत के लिये, रहता था फोटो<sup>४</sup> जिस्मो<sup>५</sup>-जां ।  
 वह भी ज़ायल<sup>६</sup> कर दिया, किस को कहूं अब क्या करूं ॥ ४ ॥  
 यार के मुँह पर झरोखे<sup>७</sup> से नज़र इक जा पड़ी ।  
 देखते घायल हुआ, किस को कहूं अब क्या करूं ॥ ५ ॥  
 आप कों भी क़तल कर, फिर आप ही इक रह गये ।  
 ब्राह नज़ाकत आप की, किस को कहूं अब क्या करूं ॥ ६ ॥

[ ६६ ]

राग राम कलौ ।

सइयो नी ! मैं प्रीतम पिआ को मनाऊंगी ।  
 इक पल भी उसे न रुसाऊंगी<sup>१</sup> ॥ टेक  
 नयन हृदय का करूंगी बिछौना ।  
 प्रेम की कलियां बिछाऊंगी ॥ सइयो० ॥ १ ॥  
 तन मन धन की भेंट धरूंगी ।  
 हाँमैं<sup>२</sup> खूब मिटाऊंगी ॥ सइयो० ॥ २ ॥  
 बिन पिआ दुःख बहुत होवत है ।  
 बहु जूनां<sup>३</sup> भरमाऊंगी ॥ सइयो० ॥ ३ ॥  
 भेद खेद को दूर छोड़ कर ।  
 आत्म-भाव रिझाऊंगी<sup>४</sup> ॥ सइयो० ॥ ४ ॥

१ द्वारपर, २ दर्शन के पियासे, ३ ( मिलते ही ) मार दिया वा घायल किया, ४ झरत, तसवीर, ५ शरीर ( देह ) अब प्राण, ६ नष्ट, ७ खिड़की, ८ अप्रसन्न करानी, ९ परिच्छिन्न अहंकार, १० बहुत बोनियों में, ११ आत्म भाव में प्रसन्न होना वा वृत्त रहना.

जे कहा पीआ नहीं माने मेरा ।

मैं आप गले लग जाऊंगी ॥ सइयो० ॥ ५ ॥

पिआ गले लागी, हूई बड़भागी ।

जन्म मरण छुट जाऊंगी ॥ सइयो० ॥ ६ ॥

पिआ गले लागे, सब दुःख भागे ।

मैं पिआ विच लय हो जाऊंगी ॥ सइयो० ॥ ७ ॥

राम पिआ मोरे पास बसत हैं ।

मैं आप पिआ हो जाऊंगी ॥ सइयो० ॥ ८ ॥

[ ६७ ]

राग परज तात्त्व रूपक ।

जिस को शोहरत भी तरसती हो वह रुस्वाई<sup>१</sup> है और ।

होश भी जिस पर फड़क जायें वह सौदा और है ॥ १ ॥

बन के पर्वाना तेरा आया हूं मैं ऐ शमां-ए-तूर<sup>२</sup> ! ।

घात वह फिर छिड़ न जाये, यह तकाजा<sup>३</sup> और है ॥ २ ॥

देखना ! जौके-तकल्लम<sup>४</sup> ! यहां कोई मुसा नहीं ।

जो मेरी आँखों में फिरता है वह शीशा और है ॥ ३ ॥

यूं तो ऐ सैयाद<sup>५</sup> ! आज्ञादी में हैं लाखों मजे ।

दाम<sup>६</sup> के नीचे फड़कने का तमाशा और है ॥ ४ ॥

जान देता हूं तड़प कर कूचा-ए-उलफत<sup>७</sup> में मैं ।

देख लो तुम भी कोई दम का तमाशा और है ॥ ५ ॥

१ अनादर, अपमान. २ ऐ पहाड़ कभी अग्नि के दीपक (आत्म देव). ३ कणड़ा

४ बाणी अर्थात् अहं पद से अपने को पुकारने का शौक जयवा अनाद. ५ शिकारी.

६ दास. ७ जेब की गली में.

तेरे खंजर ने जिगर टुकड़े किया, अच्छा किया ।  
कुछ मेरे पैहलू<sup>१</sup> में लेकिन चिलवला<sup>२</sup> सा और है ॥ ५ ॥  
भेस<sup>३</sup> बदले महफिले-अगयार<sup>४</sup> में बैठे हैं हम ।  
वह समझते हैं यह कोई ओपरा<sup>५</sup> सा और है ॥ ७ ॥

[ ६८ ]

राग भैरवी ताल दादरा ।

आशिक जहाँ में दौलतो-इक्वाल क्या करे ।  
मुलको-मकानो<sup>६</sup> तेगो-तबर<sup>७</sup> ढाल क्या करे ॥  
जिस का लगा हो दिल वह ज़रो-माल<sup>८</sup> क्या करे ।  
दीवाना<sup>९</sup> जाहो-हशमतो<sup>१०</sup> अजलाल क्या करे ॥  
बेहाल हो रहा हो सो वह हाल क्या करे ।  
गाहक ही कुछ न लेवे तो दलाल क्या करे ॥ १ ॥ टुक  
मरने का डर है उन को जो रखते हैं तन में जां ।  
और वह जो मर गये तो उन्हें मौत फिर कहाँ ॥  
मोहताज<sup>११</sup> पत्थरों<sup>१२</sup> को तरसते हैं हर ज़मां<sup>१३</sup> ।  
और जिन के हाथ काने<sup>१४</sup>-जवाहर लगे मियां ॥  
वह फिर इधर उधर के दुरों<sup>१५</sup>-लाल क्या करे ।  
गाहक ही कुछ न लेवे तो दलाल क्या करे ॥ २ ॥

१ बगल में. २ कांटा चुभना. ३ वेप बदले. ४ और, अन्य पुरुषों की सभाज.  
५ घन्व, अविरचित. ६ मुल्क और मकान. ७ तलवार और ढाल. ८ धन दौलत.  
९ ईश्वर का पागल ( खुद मस्त ). १० पद वैभव और मान, मर्तबा, इज्जत,  
शोहरत. ११ हाजतमंद, दरिद्री. १२ जवाहरात, मोती. १३ हर समय. १४  
जवाहरात की खान. १५ मोती और लाल.



पाला है जिन सवारों ने यां खर<sup>१</sup> को आशकार<sup>२</sup> ।  
 कुत्ते की पीठ पर नहीं चढ़ सकते जिनहार<sup>३</sup> ॥  
 और जो फलाँग मार के हो चख<sup>४</sup> पर सवार ।  
 वह फीलो-असपे-ज़र्दो-सीयाह-लाल<sup>५</sup> क्या करे ॥  
 दीवाना जाहो हशमतो अजलाल क्या करे ।  
 गाहक ही न कुछ लेवे तो दलाल क्या करे ॥

[ ६६ ]

राग देश ताल तीत ।

गुम हुआ जो इश्क में, फिर उस को नंगो-नाम<sup>६</sup> क्या ।  
 दैर<sup>७</sup>, कावा से गर्ज क्या, कुफर क्या, इस्लाम क्या ॥ १ ॥  
 शैख जी जाते हैं मै-खाना<sup>८</sup> से मुंह को फेर फेर ।  
 देखिये मसजिद में जाकर पायेंगे इनाम क्या ॥ २ ॥  
 मौलवी साहिब से पूछे तो कोई है जिस्म क्या ? ।  
 रूह क्या है, दम है क्या, आगाज़<sup>९</sup> क्या, अंजाम<sup>१०</sup> क्या ॥ ३ ॥  
 दम को लय कर, सुम्नो-बुक्कम<sup>११</sup>, बेसवर सा बैठ रहे ।  
 कूचाये-दिलदार<sup>१२</sup> मैं बाइज़<sup>१३</sup> से तुम को काम क्या ॥ ४ ॥  
 यार मेरा मुझ में है, मैं यार में हूं विलज़रूर ।  
 वस्ल<sup>१४</sup> को यहां दखल क्या और हिजर<sup>१५</sup> नाफजर्म<sup>१६</sup> क्या ॥ ५ ॥

१ गया, गर्दम. २ जाहरा, स्पष्ट. ३ कदापि. ४ आकाश ५ हाथी जर्द लाल और सिवाह घोड़ा. ६ शर्म, लज्जा. ७ मन्दिर. ८ शराब खाना. ९ शुक, आदि. १० अन्त. ११ चुप चाप, गुंजा. १२ बार की गली अर्थात् साक्षात्कार के मार्ग अ. १३ उपदेश १४ मिनाप मुनाकात, दर्शन. १५ विरह, वियोग. १६ बद असल.

तुझ में मैं और तुझ में तू, आंखें मिलाकर देख ले ।  
और गर देखे न तू तो मुझे पै है इलजाम क्या ॥ ६ ॥  
पुखता<sup>१</sup>-मगजों के लिये है रहनुमा<sup>२</sup> मेरा सखुन<sup>३</sup> ।  
हाफजा<sup>४</sup> ! हासिल करेंगे इस से मर्दे-खाम<sup>५</sup> क्या ॥

[ ७० ]

राग भैरवी ताल रूपक ।

जो मरत हैं अज़ल<sup>१</sup> के उन को शराब क्या है ।  
मकबूल-खातरों<sup>२</sup> को बूये-कबाब<sup>३</sup> क्या है ॥ १ ॥  
क्यों मुंह छुपाओ हम से, तकसीर<sup>४</sup> क्या हमारी ।  
हर दम की हमनिशीनी<sup>५</sup>, फिर यह हजाब<sup>६</sup> क्या है ॥ २ ॥  
हो पास तुम हमारे, हम ढूँढते हैं किस को ।  
मुंह से उठा दिखाना, ज़ेरे-नकाब<sup>७</sup> क्या है ॥ ३ ॥

[ ७१ ]

गज़ल ।

जिन प्रेम रस चाख्या नहीं, अमृत पीया तो क्या हुआ ।  
जिन इश्क में सिर ना दिया, युग युग जीया तो क्या हुआ ॥ टेक  
मशहूर हुआ पंथ में साबित न किया आप को ।  
आलिम अरु फाज़िल होय के, दाना हुआ तो क्या हुआ ॥ १ ॥ जिन०

१ तीव्र बुद्धि वाले ( बहुत समझ वाले ) २ नेता, लीडर, नायक ३ उपदेश ।  
४ कवि का नाम ५ कच्ची समझ वाले, कम अकल कमजोर दिल ई अनादि  
वस्तु में जी मस्त है ( अपने स्वरूपकर के जी मस्त हैं ) ६ दिल कबूल ( मंज़ूर )  
करने वालों को, दिल देने वालों को ७ क़बाब ( विषयानन्द ) की गन्ध ८  
अपराध, कर्म ९ साथ रहना १० परदा ११ परचे के नीचे

औरों नसीहत है करे, और खुद अमल करता नहीं ।  
 दिल का कुफर दूटा नहीं, हाजी<sup>१</sup> हुआ तो क्या हुआ ॥ २ ॥ जिन०  
 देखी गुलिस्तां बोस्तां, मतलब न पाया शेख का ।  
 सारी किताबां याद कर, हाफिज़ हुआ तो क्या हुआ ॥ ३ ॥ जिन०  
 जब तक प्याला प्रेम का पी कर मग्न होता नहीं ।  
 तार मंडल बाज़ते ज़ाहर सुना तो क्या हुआ ॥ ४ ॥ जिन०  
 जब प्रेम के दरियौ में गरकाब<sup>२</sup> यह होता नहीं ।  
 गंगा यमुन गोदावरी नहाता फिरा, तो क्या हुआ ॥ ५ ॥ जिन०  
 प्रीतम से किंचित् प्रेम नहीं, प्रीतम पुकारत दिन गया ।  
 मतलूब<sup>३</sup> हासिल न हुआ, रो रो मुआ तो क्या हुआ ॥ ६ ॥ जि०

[ ७२ ]

राग बरवा ।

अब मैं अपने राम को रिभाऊं, वैह<sup>१</sup> भजन गुण गाऊं ॥ टेक  
 डाली छेड़ूं न पता छेड़ूं, न कोई जीव सताऊं ।  
 पात पात में प्रभु बसत हैं, वाहि को सीस<sup>२</sup> नवाऊं ॥ १ ॥ अब०  
 गंगा जाऊं न यमुना जाऊं, ना कोई तीरथ नहाऊं ।  
 अठसठ तीरथ घट के भीतर, तिनहि में मल मल नहाऊं ॥ २ ॥ अब०  
 औषध खाऊं न बूटी लाऊं, ना कोई वैद्य बुलाऊं ।  
 पूर्ण वैद्य मिले अविनाशी, वाहि को नबज़ दिखाऊं ॥ ३ ॥ अब०  
 हान कुठारा कस कर बांधूं, सुरत कमान चढाऊं ।  
 पाँचो चोर बसैं घट भीतर, तिन को मार गिराऊं ॥ ४ ॥ अब०

१ हथ ( तीर्थयात्रा ) करने वाला, २ लीन, ३ इच्छित वस्तु, ४ वैद्य, ५  
 चिर, मस्तक.

योगी होऊं न जटा बढाऊं, न अंग भभूति रमाऊं ।  
जो रंग रंगे आप विधाता, और क्या रंग चढाऊं ॥ ५ ॥ अब०  
चंद सूरज दोऊ सम कर राखो, निज मन सेज बिछाऊं ।  
कहत कबीर सुनो भाई साधो, आवागमन<sup>१</sup> मिटाऊं ॥ ६ ॥ अब०

[ ७३ ]

राग मिथड़ा ढाई ताल ।

इश्क<sup>२</sup> होवे तो हकीकी इश्क होना चाहिये ।  
इस सिवा जितने हैं आशिक उन पे रोना चाहिये ॥ १ ॥  
ऐशो-इशरत<sup>३</sup> मैं गुज़ारा, रोज़ सारा गरचि तुम ।  
रात को प्रभु याद करके तब तो सोना चाहिये ॥ २ ॥  
बीज बो कर फल उठाया खूब तुमने है यहां ।  
आकवत<sup>४</sup> के वास्ते भी कुछ तो बोना चाहिये ॥ ३ ॥  
यहां तो सोये शौक से तुम बिस्तरे-कमखाव पर ।  
सफर भारी सिर पै है, वहां भी बिछौना चाहिये ॥ ४ ॥  
है गनीमत<sup>५</sup> उमर यारो ! जान को जानो अज़ीज़ ।  
रायगां<sup>६</sup> और मुफ्त में इस को न खोना चाहिये ॥ ५ ॥  
गरचि दिलवर साथ है, विन जुस्तजू<sup>७</sup> मिलता नहीं ।  
दूध से माखन जो चाहो, तो बिलोना चाहिये ॥ ६ ॥  
यादे-हक<sup>८</sup> दिन रात रख, जंजाल दुनिया छोड़ दे ।  
कुछ न कुछ तो लुतफे-खालिस<sup>९</sup> तुम में होना चाहिये ॥ ७ ॥

१ आना जाना, सरना जीना. २ प्रेम, भक्ति. ३ विषयभोग विषयानन्द. ४ परलोक. ५ धन्य, उत्तम. ६ व्यर्थ, बे फायदा. ७ जिज्ञासा, ढूँढना. ८ ईश्वर-स्मरण. ९ शुद्ध आनन्द, वा निजानन्द.



[ ७४ ]

गजल ।

प्रीत न क्री स्वरूप से तो क्या किया, कुछ भी नहीं । ( टेक )  
जान दिलवर को न दी, फिर क्या दिया, कुछ भी नहीं ॥ १ ॥ प्री०  
मुल्क-गिरी' में सिकन्दर से हज़ारों मर मिटे ।

अपने पर क़वज़ा न किया, क्या लिया कुछ भी नहीं ॥ २ ॥ प्री०  
देवतां ने सोम रस पीया तो फिर भी क्या हुआ ।

श्रेमरस गर न पीया तो क्या पीया, कुछ भी नहीं ॥ ३ ॥ प्री०  
हिज़' में दिलवर के हम जो उमर पाई खिज़र' की ।

यार अपना न मिला, तो क्या जीया, कुछ भी नहीं ॥ ४ ॥ प्री०

[ ७५ ]

भाज ताल चंचल ।

आऊंगा न जाऊंगा मरूंगा न जीयूंगा । } टेक ।  
हरि के भजन प्याला प्रेम-रस पीयूंगा ॥

कोई जावे मक्के, कोई जावे काशी, देखो रे लोगो ! दोहों गल  
फांसी ॥ १ ॥ आऊंगा०

कोई फेरे माला, कोई फेरे तसबीह<sup>१</sup> ! देखो रे साथी ! यह दोनों  
हैं कसबी ॥ २ ॥ आऊंगा०

कोई पूजे मढ़ियां, कोई पूजे गोरों<sup>२</sup> । देखो रे सन्तो ! मैं लुट गयी  
जे चोरां ॥ ३ ॥ आऊंगा०

१ देश देशान्तरों का विजय करवा. २ विरह, लुदावगी. ३ खिज़र एक  
मुसलमानों के हज़रत का नाम है जिस की आशु अनन्त कही जाती है. ४ अपनी,  
माला ( जो मुसलमान भजन में वर्तते हैं ). ५ कसब.

कहत कबीर<sup>१</sup> सुनो मेरी लोई<sup>२</sup> । हम नहीं मरना, रोवे न  
कोई ॥ ४ ॥ आऊंगा

[ ७६ ]

राग आसा ।

खेडन दे दिन चार नी; वतन तुसाड़े मुड़ नहीं ओ आना । टेक  
चोला चुनड़ी सानुं मापियां दितड़ां ।

रूप दिछा करतार नी ! वतन तुसाड़े० ॥ १

अम्बड़ भोली कछया लोड़े ।

भठ पइयां पूनीयां, भठ पये गोढ़े ।

तुकले दे बल्ल चार नी ! वतन तुसाड़े ॥ २

पंक्तिवार अर्थ ।

टेक:-मेरे संसार में खेलने के अब दो चार दिन हैं (क्योंकि मुझे ईश्वर का  
दृशक ( प्रेम ) लग गया है । इस वास्ते से शारीरिक माता पिता ।

तुम्हारे सांसारिक घर में मेरा अब आना वापिस नहीं होगा ।

( १ ) शारीरिक चोला ( शरीर इत्यादि ) तो माता पिता ने दिया,  
मगर असली रूप करतार ने दिया है ( इस वास्ते में ईश्वर की  
हूँ तुम्हारी नहीं ) इसलिये टेक० ।

( २ ) शारीरिक माता यह चाहती है कि दुनिया रूपी व्यवहार में  
लगूँ, मगर मेरे दिल रूपी तकले ( कला ) के चार बल पड़ गये हैं  
( क्योंकि ईश्वर के प्रेम में विस्त लग गया ) इस वास्ते में कह  
रही हूँ कि रुई का कातना, व रुई की पूनीयां अर्थात् ( सांसा-  
रिक व्यवहार ) तमोस भाड़ से पड़ें और मैं तुम्हारे घर में ही  
नहीं आने लगी ।

१ कवि का नाम है । २ कवि की स्त्री का नाम है ।

अंबड़ मारे, बाबल झिड़के ।

मर गया बाबल, सड़ गयी अम्बड़ ।

टल गया सिर तीं भार नी ! बतन तुसाड़े ॥ ३ ॥

रल मिल सैय्यां खेडन चल्लीयां ।

खेड खिडन्दरी नूं कंडु पुरया ।

बिसर गया घर बार नी ! बतन तुसाड़े० ॥ ४ ॥

[ ७७ ]

राग आशा ।

करसां मैं सोई शृंगार नी, जिस विच पिया मेरे वश आवे । टेक

( ३ ) माता मारती है और पिता झिड़कता है ( कि कुछ सांसारिक काम करूं, मगर मेरे वास्ते इस प्रेम के कारण तो ) सांसारिक माता सड़ गयी और बाप मर गया है और उन का दूर होना मैं बिर से भार टला ससझती हूं इस वास्ते । टेक

( ४ ) जब संसार के घर से बाहर निकल कर हम सब सहेलियां ( सखियां ) खेलने को जाने लगीं तो रास्ते में ( प्रेम का ) काँटा मुझे खेलते २ रेखा चुभा कि घर बार दुनिया का सारा काम काज मुझे धिहर ( भूल ) गया । इस वास्ते । टेक

पंक्तिवार अर्थ ।

टेकः—अब मैं सेवा शृंगार ( अपने अन्दर को साफ ) करूंगी कि जिससे मेरा पति ( ईश्वर ) मेरे वश में आजावे ।

जिस भूषण विच होवे न दुखन, सोई मेरे दरकार नी ॥ जि० ॥ १  
गजरयां वंग्यां तों हुन संग्यां, कच्चा कच उतार नी ॥ जि० ॥ २  
नाम दा नामां, प्रेम दा धागा, पायां गल्ल विच हार नी ॥ जि० ॥ ३  
पावांगी लच्छे, मैं निर्लज्जे, भांजर पियादा प्यार नी ॥ जि० ॥ ४  
सैह न सकदी मैं सौकन वैरण, भांजर दा छिकार नी ॥ जि० ॥ ५

- ( १ ) जिस भूषण ( अन्दरूनी रजामट ) से कोई दुःख न उत्पन्न हो, वही शृंगार ( जेवर ) मैं चाहती हूँ और वही पहनूंगी ताकि मेरा ईश्वर ( पति ) मेरे वश में आवे ।
- ( २ ) दुन्यादी बंगे ( bracelets ) कांच की जो स्त्री लोग पहनती हैं उन को पहनने में मुझे लज्जा आती है । इसलिये मैं इस कच्चे कांच को उतार कर ( ऐसा कोई असली और सुदृढ़ भूषण पहनती हूँ ) जिस से मेरा पति ( ईश्वर ) मेरे वश होजावे ।
- ( ३ ) ईश्वर-नाम का तो नामरूप जेवर मैं पहनूंगी और उस भूषण में प्रेम की धागा डालूंगी । ऐसा सुंदर हार बना कर मैं अपने गले में डालूंगी ताकि मेरा प्यारा ( ईश्वर ) मेरे वश में आ जावे ।
- ( ४ ) पाशों में ऐसा लच्छे-रूप जेवर जो मेरी गर्भ उतार दे मैं पहनूंगी कि जिस में पिया ( प्यारे ) के प्यार रूपी भांजरे हों ताकि मेरा पति ( ईश्वर ) मेरे वश में हो जावे ।
- ( ५ ) मैं ही एक अकेली उस की प्यारी होना चाहती हूँ, और उसकी दूसरी स्त्री ( सौकन ) देखना मैं स्वीकार नहीं कर सकती और न किसी दूसरी स्त्री ( सौकन ) के जेवर इत्यादि भांजरों की भिंकार सुनना सहन कर सकती हूँ । ताकि पिया का मेरे पर ही प्यार हो और मेरे वश में ही आया हुआ हो ।



[ ७८ ]

राम पीलू ताल दीपचंदी ।

गलत है कि दीदार<sup>१</sup> की आर्जु<sup>२</sup> है ।  
 गलत है कि मुझ को तेरी जुस्तजू<sup>३</sup> है ॥  
 तिरा जल्वा<sup>४</sup> ये जल्वागर<sup>५</sup> ! कु वकु<sup>६</sup> है ॥  
 हजूरी है हर वक्त तू खबर है ।  
 जिधर देखता हूँ, उधर तू ही तू है ॥ १ ॥ टेक  
 हर इक गुल में वू हो के तू ही बसा है ।  
 सदाहाये<sup>७</sup> बुलबुल में तेरी नवा<sup>८</sup> है ॥  
 चमन फैजे-कुदरत<sup>९</sup> से तेरे हरा है ।  
 बहारे-गुलिस्तां<sup>१०</sup> में जल्वा तेरा है ॥ २ ॥ जि०  
 नवातात<sup>११</sup> में तू नमू<sup>१२</sup> है शजर<sup>१३</sup> की ।  
 जमादात<sup>१४</sup> में आबरु<sup>१५</sup> बैहरो-बर<sup>१६</sup> की ॥  
 तू हैवां<sup>१७</sup> में ताकत है सैरो-सफर<sup>१८</sup> की ।  
 तू इन्सां में कुव्वत है नुनको-नजर<sup>१९</sup> की ॥ ३ ॥ जि०  
 घटा तू ही उठता है घंघोर हो कर ।  
 छुपा तू ही है बैहर में शोर हो कर ॥  
 निहा<sup>२०</sup> तू हि तूफां में है जोर हो कर ।  
 अयां<sup>२१</sup> तू हि मौजों<sup>२२</sup> में भकभोर हो कर ॥ ४ ॥ जि०

१ दर्शन २ दृष्टि ३ जिह्वास्था, खीम ४ प्रकाश तेज ५ प्रकाशमान ६ दर्श  
 दिशा में, हर गली में ७ आवाजें ८ गीत, सुर ९ प्रकृति या भावा की कृपा से  
 १० बाग की बहार में ११ धनरूपति १२ दूरव दौड़ता १३ वृक्ष, काष्ठ १४ जड़  
 वस्त्र, पाद १५ अमक दलक १६ शिविनी और वस्त्र १७ पंथुओं १८ चलने  
 किने १९ बुद्धि और मन चक्षु २० छुपा हुआ २१ लहर, व्यक्त २२ लहरों

तेरी है सदा<sup>१</sup> राद<sup>२</sup> में गर कड़क है ।  
 तेरी है ज़िया<sup>३</sup> वर्क<sup>४</sup> में गर चमक है ॥  
 यह कौसे-कज़ह<sup>५</sup> ही में तेरी भलक है ।  
 जवाहर के रंगों में तेरी डलक<sup>६</sup> है ॥ ५ ॥ जि०  
 ज़िमी आस्मां तुझ से मामूर<sup>७</sup> हैं सब ।  
 ज़मानो-मकां<sup>८</sup> तुझ से भरपूर हैं सब ॥  
 तजल्ली<sup>९</sup> से कूनो-मकां<sup>१०</sup> नूर हैं सब ।  
 निगाहों में मेरी ज़हान् तूर<sup>११</sup> हैं सब ॥ ६ ॥ जि०  
 हसीनों<sup>१२</sup> में तू हुसनो-नाज़ो-अदा<sup>१३</sup> है ।  
 तू उश्शाकू<sup>१४</sup> में इश्को-सद्कां-सफा<sup>१५</sup> है ॥  
 मिजज़ो<sup>१६</sup>-हकीकत में जल्वा तेरा है ॥  
 जहां जाईये एक तू रुनुमा<sup>१७</sup> है ॥ ७ ॥ जि०  
 मकां तेरा हर एक ऐ लामकां<sup>१८</sup> ! है ।  
 निशां हर जगह तेरा ऐ बे निशां ! है ॥  
 न खाली ज़िमी है, न खाली ज़मां<sup>१९</sup> है ।  
 कहीं तू निहां<sup>२०</sup> है, कहीं तू अयां<sup>२१</sup> है ॥ ८ ॥ जि०  
 तेरा ला मकान् नाम ज़ेबा<sup>२२</sup> नहीं है ।  
 मकां कौन सा है तू जिस जा<sup>२३</sup> नहीं है ॥

१ आवाज. २ विजली की गर्ज. ३ रौशनी. ४ विजली. ५ इन्द्र घण्ट. ६ तेज, चमक. ७ भरपूर. ८ देश, काल. ९ प्रकाश. तेज. १० सब स्थान. ११ अग्नि के पर्वत से अभिप्राय है. १२ सुन्दर पुष्प. १३ सौन्दर्यता और नखरा, हाव भाव. १४ भक्त जन. १५ भक्ति व अर्पण स्वीकार होना. १६ शौकिक और पारमार्थिक प्रेम. १७ सामने हाज़िर. १८ देश रहित. १९ काल. २० छिपा हुआ. २१ प्रकट, व्यक्त. २२ युक्त, उपित. २३ जगह, स्थान.

में देखूँ हूँ सब के है सिर पै वही ।

पर अपना तो रखता वह सिर ही नहीं ॥  
यह सितम<sup>१</sup> है कि उसके हैं चश्म<sup>२</sup> कहाँ ? ।

पर ऐसी किसी की नज़र<sup>३</sup> ही नहीं ॥  
है नूर<sup>४</sup> का उसके ज़हर<sup>५</sup> खिला ।

पर है वह कहाँ यह खबर ही नहीं ॥  
कोई लाख तरह से भी मारे मुझे ।

पर मेरा तो कटता यह सिर ही नहीं ॥  
वह मकाँ<sup>६</sup> है मेरा तन्हाई<sup>७</sup> में याँ ।

शम्सो-कुमर<sup>८</sup> का गुज़र ही नहीं ॥  
न तो आबो-हवा<sup>९</sup> न है आतिश<sup>१०</sup> यहाँ ।

कोई मेरे सिवा तो बशर<sup>११</sup> ही नहीं ॥  
दूरे दिल<sup>१२</sup> को हिला, कर दर्शन आ ।

कहीं करना तो पड़ता सफ़र ही नहीं ॥  
जिस के कवज़े में है गज़-बहदत<sup>१३</sup> का ।

कोई उस से तो दौलतवर<sup>१४</sup> ही नहीं ॥

[ ८१ ]

ग़ज़ल राग जिला संधोड़ा ।

अगर है शौक मिलने का अपस<sup>१५</sup> की रसज़<sup>१६</sup> पाता जा ।

जला कर खुद-नुमाई<sup>१७</sup> को भसम तन पै लगाता जा ॥ टेक

१ कुल्लु, अनीत, अन्बाय. २ नेत्र. ३ दृष्टि. ४ तेज, प्रकाश. ५ प्रकाशमान, सुस्तिमान. ६ रुबान, जगह. ७ एकाग्र. ८ मुर्य और चन्द्र. ९ जल और वायु. १० अग्नि. ११ जीव. १२ इदय या दिल के द्वार. १३ एकता का भगद्वार, फौज. १४ उनी. १५ अपने आपकी. १६ भेद, घुंटी. १७ अहंकार.

पकड़ कर इश्क का फाड़ सफा कर दिल के हुजड़े<sup>१</sup> को ।  
 दुई<sup>२</sup> की धूल को ले के मुसल्ले<sup>३</sup> पर उड़ाता जा ॥ १ ॥  
 सुसल्ला फाड़, तसवीह<sup>४</sup> तोड़, कितावां डाल पाणी में ।  
 पकड़ कर दस्त<sup>५</sup> मस्तों का निजानन्द को तू पाता जा ॥ २ ॥ अ०  
 न जा मसजिद, न कर सिजदा<sup>६</sup> न रख रोजा न मर भूखा ।  
 बुजू का फोड़ दे कूजा<sup>७</sup>, शराबे-शौक<sup>८</sup> पीता जा ॥ ३ ॥ अ०  
 हमेशा खा, हमेशा पी, न गफलत से रहो एक दम ।  
 अपस तू खुद खुदा होके, खुदा खुद हो के रहता जा ॥ ४ ॥ अ०  
 न हो मुल्ला, न हो काजी, न खिलका<sup>९</sup> पैहन शेखों का ।  
 नशे में सैर कर अपनी, खुदी को तू जलाता जा ॥ ५ ॥ अ०  
 कहे मनसूर सुन काजी, निवाला<sup>१०</sup> कुफर का मंत पी ।  
 अन-लहक<sup>११</sup> कहो सबूती<sup>१२</sup> से तू यही कलमा पकाता जा ॥ ६ ॥ अ०

[ ८२ ]

अब मोहे फिर फिर आवत हाँसी ॥ टेक

सुख स्वरूप होय, सुख को ढुंढे, जल में मीन<sup>१३</sup> प्यासी ॥ १ ॥ अ०  
 समी तो हैं आत्म चेतन, आज<sup>१४</sup> अखंड<sup>१५</sup> अविनाशी<sup>१६</sup> ॥ २ ॥ अ०  
 करत नहीं निश्चय स्वरूप का, भाजत मधुरा काशी ॥ ३ ॥ अ०  
 क्षणभंगुरता<sup>१७</sup> देख जगत की, फिर भी धारत उदासी ॥ ४ ॥ अ०  
निरभय राम<sup>१८</sup>, राम कृपा से, काटी लख चौरासी ॥ ५ ॥ अ०

१ कोठरी. २ द्वैत. ३ निवाज़ पढ़ने निमित्त जो कपड़ा आगे बिछाया जाता है. ४ साला जाप करने की. ५ हाथ. ६ यन्दगी, पूजा. ७ पूजा या निवाज़ के समय मुंह धोने का कूजा. ८ ईश्वर जिज्ञासा की मद ( शराब ). ९ चोगा, लम्बा कोट शेखोंवाला. १० घूँट, घास. ११ मैं खुदा हूँ, अहं ब्रह्माऽस्मि. १२ पक्के दिल से. १३ सख्ती १४ जन्म रहित. १५ टुकड़ों रहित. १६ नाश रहित. १७ क्षण में नाश होने वाली वस्तु. १८ अब रहित, कवि का भी जान है.



[ ८३ ]

राम धनासरी तुल दादरा ।

जिस को हैं कहते खुदा हम ही तो हैं ।  
 मालके-अर्ज-ओ-समा<sup>१</sup> हम ही तो हैं ॥ १ ॥  
 तात्वाने<sup>२</sup>-हक जिसे हैं ढूढते ।  
 अर्श<sup>३</sup> पर वह दिलखा<sup>४</sup> हम ही तो हैं ॥ २ ॥  
 तूर<sup>५</sup> को सुरमा किया इक आन<sup>६</sup> में ।  
 नूर<sup>७</sup> मूसा को दिया हम ही तो हैं ॥ ३ ॥  
 तिश्ना-प-दीदारे-लव<sup>८</sup> के वास्ते ।  
 चशमा-प-आवे-बका<sup>९</sup> हम ही तो हैं ॥ ४ ॥  
 नार<sup>१०</sup> में, माह<sup>११</sup> में, काकव<sup>१२</sup> में सदा ।  
 मिहर<sup>१३</sup> में जल्वानुमा<sup>१४</sup> हम ही तो हैं ॥ ५ ॥  
 वोस्ताने<sup>१५</sup>-नूर से बैहरे-खलील<sup>१६</sup> ।  
 नार को गुलशन<sup>१७</sup> किया हम ही तो हैं ॥ ६ ॥  
 नूह<sup>१८</sup> की किशती को तूफां से बचा ।  
 पार वेड़ा कर दिया हम ही तो हैं ॥ ७ ॥

---

१ पृथिवी और आकाश के स्वाधी. २ सचाई के जितानु ( चाहने वाले ).  
 ३ आकाश. ४ माशूर, प्यारा. ५ पड़ाई का नाम है. ६ घड़ी. ७ प्रकाश ( अर्थात्  
 जिन ने इजरात नूरा को पड़ाई तर पर दर्शन दिये वह हम ही हैं ). ८ दर्शन  
 के पवासों की पवास बुझाने के वास्ते. ९ अमृत की धारा. १० अग्नि. ११ चांद.  
 १२ धितारे. १३ सूर्य. १४ प्रकट, भासमान. १५ प्रकाशस्वरूप के वाग से. १६  
 सच्चे आशिक के वास्ते. १७ वाग अर्थात् ( जिस पदारे ने आग को वाग में बदल  
 दिया वह हम ही तो हैं ). १८ पैगम्बर का नाम.

मर्दों-जन<sup>१</sup>, पीरो-जवां<sup>२</sup>, वैहशो-त्यूर<sup>३</sup> ।  
 खोलिया<sup>४</sup>-ओ अंविया<sup>५</sup> हम ही तो हैं ॥ ८ ॥  
 खाको-बादो-आवो-आतिश और खला<sup>६</sup> ।  
 जुमला मा दर<sup>७</sup> जुमला मा<sup>८</sup>, हम ही तो हैं ॥ ९ ॥  
 उकद-ए-वहदत-पसन्दों<sup>९</sup> के लिये ।  
 नाखुने-मुश्किल-कुशा<sup>१०</sup> हम ही तो हैं ॥ १० ॥  
 कौन किस को तिर<sup>११</sup> झुकाता अपने आप ।  
 जो झुका, जिसको झुका, हम ही तो हैं ॥ ११ ॥

[ ८४ ]

राग पञ्चम ताल केरवा ।

खुदाई कहता है जिस को आलम<sup>१२</sup> ।  
 सो यह भी है इक खयाल मेरा ॥ १ ॥  
 बदलना सूरत हर एक ढव<sup>१३</sup> से ।  
 हर एक दम में है हाल मेरा ॥ २ ॥  
 कहीं हूं ज़ाहिर, कहीं हूं मज़हर<sup>१४</sup> ।  
 कहीं हूं दीद<sup>१५</sup>, और कहीं हूं हैरत<sup>१६</sup> ॥ ३ ॥  
 नज़र है मेरी, नलीब मुक्त को ।  
 हुआ है मिलना मुहाल<sup>१७</sup> मेरा ॥ ४ ॥

१ स्त्री, पुरुष. २ बूढ़ा युवा. ३ पशु और पक्षी. ४ अचतार. ५ नवी. ६ प्रियवी, यात्रु, जल, अग्नि और आकाश, ७ सब मुक्त में ( हम में ). ८ और सब हम. ९ अद्वैत के सफल ( विचार ) को परन्द करने वालों के लिये. १० मुश्किल हल करने वाले साधन. ११ जहान, संसार १२ तरीका. १३ दृश्य की कान, विस्मय. १४ दृष्टि १५ आश्चर्य. १६ कठिन.

तिलिस्मे<sup>१</sup> इसरारे-गंजे-मखफी<sup>२</sup> ।

कहूँ न सीने<sup>३</sup> को अपने करोंकर ॥ ५ ॥

अयाँ<sup>४</sup> हुआ हाले-हर दो आलम<sup>५</sup> ।

हुआ जो ज़ाहिर कमाल मेरा ॥ ६ ॥

अरस्तू कालू वला की रमजें<sup>६</sup> ।

न पूछ मुझ से बतन<sup>७</sup> तू हरगिज़ ॥ ७ ॥

हूँ आप मशगूल<sup>८</sup>, आप शागिल<sup>९</sup> ।

जवाब खुद है, सवाल मेरा ॥ ८ ॥

[ ८५ ]

राग फाँफोटी ताल दादरा ।

मैं न वन्दा, न खुदा था, मुझे मालूम न था ।

दोनों इल्लत<sup>१०</sup> से जुदा था, मुझे मालूम न था ॥ १ ॥

पंक्तिवार अर्थ ।

( १ ) यह मुझे मालूम नहीं था कि मैं न जीव हूँ न ईश्वर हूँ, और न मुझे यह मालूम था कि मैं इन दोनों उपाधियों से परे हूँ ।

१ जाहू, २ मुझ भण्डार के भेदों का जाहू, ३ दिल, ४ ज़ाहिर, खुला, ५ दोनों लोकों का हाल, ६ मुक़ात ( Socrates ) अफलातून के नाम, ७ गुहर ऊपदेश, इशारे, ८ कवि की उपाधि, ९ प्रवृत्त, १० प्रेरक या काम में लगाने वाला, ११ कारण ( यहाँ एक उपाधियों से अभिप्राय है ) ।

शक्ले-हैरत हुई, आयिना-ए-दिल<sup>१</sup> से पैदा ।  
 मानीये-शाने-सफा<sup>२</sup> था, मुझे मालूम न था ॥ २ ॥  
 देखता था मैं जिसे हो के नदीदा<sup>३</sup> हर सू ।  
 मेरी आँखों में छुपा था मुझे मालूम न था ॥ ३ ॥  
 आप ही आप हूँ यहां तालिवो-मतलूब<sup>४</sup> है कौन ।  
 मैं जो आशिक<sup>५</sup> हूँ कहा था, मुझे मालूम न था ॥ ४ ॥  
 वजह मालूम हुई तुझ से न मिलने की सनम<sup>६</sup> ।  
 मैं ही खुद पर्दा बना था, मुझे मालूम न था ॥ ५ ॥

- (२) दिल में ( शीशारूपी अन्तःकरण में ) आपश्चर्यजनक सूरतें प्रकट हुईं मगर यह मुझे मालूम न था कि इन रूपों का असली कारण या बिस्व में ही हैं ।
- (३) जिस को मैं अव्यक्त वा अप्रगट देखता था वह मेरी आँखों में छिपा हुआ है यह मुझे मालूम न था ।
- (४) सब कुछ मैं आप ही आप हूँ, जिज्ञासु और इच्छित पदार्थ मेरे बिना कोई नहीं, मैंने जो कहा था कि मैं आशिक अर्थात् इस पर आसक्त हूँ, यह मुझे मालूम न था ।
- (५) रे प्यारे ! तुझ से न मिलने का कारण मालूम हुआ तो पता लगा कि मैं ही स्वयं ( इसमें ) पर्दा बना हुआ था, पर यह मुझे मालूम न था ।

१ दिल के शीशे. २ शुद्ध गुणों का वास्तव स्वरूप अथवा प्रतिबिम्ब का असली बिम्ब. ३ अप्रकट, छिपा हुआ. ४ जिज्ञासु और इच्छित पदार्थ. ५ आसक्त, प्यारा. ६ रे प्यारे !

वाद मुदत<sup>१</sup> जो हुआ वस्ल<sup>२</sup>, खुला राजे-वतन<sup>३</sup> ।  
वासजे<sup>४</sup>-हक मैं सरा था, मुझे मालूम न था ॥ ६ ॥

[ पद ]

राम काफ़ी ताल गज़ल ।

मुझ को देखो ! मैं क्या हूँ, तन तन्हा<sup>५</sup> आया हूँ ।  
मतला-ए-नूरे-खुदा<sup>६</sup> हूँ, तन तन्हा आया हूँ ॥ १ ॥  
मुझ को आशिक कहो, माशूक<sup>७</sup> कहो, इश्क कहो ।  
जा-बजा जल्वानुमा<sup>८</sup> हूँ तन तन्हा आया हूँ ॥ २ ॥  
मैं ही मसजूदा<sup>९</sup> मलायक हूँ बशक्ते<sup>१०</sup> आदम ।  
मज़हरे-खास<sup>११</sup> खुदा हूँ, तन तन्हा आया हूँ ॥ ३ ॥  
लामकाँ<sup>१२</sup> अपना मकाँ है, सौ तमाशा के लिये ।  
मैं तो पर्दे में छुपा हूँ, तन तन्हा आया हूँ ॥ ४ ॥  
हूँ भी, हाँ भी अनलहक<sup>१३</sup>, है यह भी मञ्जल अपनी ।  
शम्से-इफाँ<sup>१४</sup> की ज़िया<sup>१५</sup> हूँ, तन तन्हा आया हूँ ॥ ५ ॥

( ६ ) चिरकाल पश्चात् जब दर्शन हुए अर्थात् साक्षात्कार हुआ  
अपने घर का भेद खुल गया ( वह यह ) कि सत्य स्वरूप को  
मैं सदैव प्राप्त हुए २ था पर मुझे मालूम न था ।

१ काल, २ मेल, मुलाकात, ३ भेद, घुड़ी, ४ एत का पाने वाला या एत को  
पाये हुये, ५ अकेला, ६ ईश्वर के प्रकाश के प्रकट होने का स्थान ( स्थान ), ७  
प्रिया, ८ जाहर, प्रगट, ९ मैं देवताओं का पूजनीय हूँ, अर्थात् देवतागण मेरी  
उपासना करते हैं, १० पुरुष के रूप में, ११ स्वयं ईश्वर के प्रगट होने का स्थान,  
१२ देश रहित, १३ अहम् ब्रह्मात्मि, “ मैं ईश्वर ( ब्रह्म ) हूँ ”, १४ ज्ञान रूपी  
सूर्य का प्रकाश, १५ प्रकाश,



किस को ढूँढ़, किसे पावू मैं—वताओ साहिब ।  
आप ही आप में लुपा हूँ तनतन्हा आया हूँ ॥ ६ ॥

[ ८७ ]

राग तिलंग केरवा ताल ।

मैं हूँ वह ज्ञात नापैदा<sup>१</sup>, किनारो-मुल्लको-वेहद<sup>२</sup> ।  
कि जिस के समझने में अक्ले कुल<sup>३</sup> भी तिफ्ले-नादां<sup>४</sup> है ॥ १ ॥  
कोई मुझ को खुदा माने, कोई भगवान माने है ।  
मेरी हर सिफ्त बनती है, मेरा हर नाम शायों<sup>५</sup> है ॥ २ ॥  
कोई छुत खाना में पूजे, हरम<sup>६</sup> में, कोई गिर्जा में ।  
मुझे छुतखाना-ओ-मसजिद क्लीसां<sup>७</sup> तीनों यवसां है ॥ ३ ॥  
कोई सूरत मुझे माने, कोई मुतलक पहचाने है ।  
कोई खालिक पुकारे है, कोई कहता यह इन्सां है ॥ ४ ॥  
मेरी हस्ती में यकताई<sup>८</sup> दूई हरगिज़ नहीं बनती ।  
सिदा मेरे न था-हांगा न है यह रमज़े-इफां<sup>९</sup> है ॥ ५ ॥

[ ८८ ]

राग विधोर ताल दीपचंदी ।

न दुश्मन है कोई अपना न साजन<sup>१०</sup> ही हमारे हैं । } टेक  
हमारी ज्ञाते-मुल्लक<sup>११</sup> से हुए यह सब पसारें हैं ॥ १ ॥ }

१ न उत्पन्न होने वाली वस्तु. २ विलज्जल अनंत. ३ ससष्टि बुद्धि. ४ नादान  
बच्चा. ५ प्रकट, प्रकाशित. ६ जन्दिर. ७ काया ( मसजिद ). ८ गिर्जाघर. ९ सृष्टि  
कर्ता. १० दुश्मन. ११ जान का छुत भेद. १२ मित्र. १३ जातना, शुद्ध स्वरूप.

न हम हैं देह मन बुद्धि, नहीं हम जीव नै<sup>१</sup> ईश्वर ।  
 बले<sup>२</sup> इक कुन<sup>३</sup> हमारी से बने-यह रूप सारे हैं ॥ २ ॥  
 हमारी ज्ञात-नूरानी<sup>४</sup>, रहे इक हाल पर दायम<sup>५</sup> ।  
 कि जिस की चमक से चमके यह मिहरो-माह<sup>६</sup>-सितारे हैं ॥ ३ ॥  
 हर इक हस्ती<sup>७</sup> की है हस्ती हमारी ज्ञात पर कायम ।  
 हमारी नज़र पड़ने से नज़र आते नज़ारे<sup>८</sup> हैं ॥ ४ ॥  
 वरंगे-मुखतलिफ नामो-शकल<sup>९</sup> जो दमक<sup>१०</sup> मारे हैं ।  
 हमारे तूर<sup>११</sup> के शोले<sup>१२</sup> से उठते यह शरारे<sup>१३</sup> हैं ॥ ५ ॥

[ ८६ ]

राम जंगला ताल धुमाली ।

वागे-जहां<sup>१४</sup> के गुल<sup>१५</sup> हैं, या खार<sup>१६</sup> हैं तो हम हैं । } टेक  
 गर यार हैं तो हम हैं, अगयार<sup>१७</sup> हैं तो हम हैं ॥ १ ॥ }  
 दरिया-ए-मार्फत<sup>१८</sup> के देखा, तो हम हैं साहिल<sup>१९</sup> ।  
 गर वार हैं तो हम हैं, वर पार हैं तो हम हैं ॥ २ ॥  
 वावस्ता<sup>२०</sup> है हमीं से, गर जवर<sup>२१</sup> है वगर क़दर<sup>२२</sup> ।  
 मजबूर हैं तो हम हैं, मुखतार हैं तो हम हैं ॥ ३ ॥

१ नहीं. २ कितु. ३ अज्ञा, हुक्म, संकेत ४ प्रकाश स्वरूप आत्मा. ५ नित्य. ६ बल और चाँद ७ वस्तु ८ वस्तुपत, अस्तित्व, जान. ९ नाना प्रकार के दृश्य पदार्थ. १० नाना प्रकार के नाम और रूप. ११ चमके हैं. १२ अपने स्वरूप ( आत्मा ) के अग्नि रूपी पर्यंत की. १३ लाट. १४ अंगारे. १५ संसाररूपी बाग़ के. १६ फूल. १७ काँटा. १८ शत्रु. १९ आत्मज्ञान का दरिया ( समुद्र ). २० तट ( किनारा ). २१ बन्धा हुआ है, संबंध रखता है. २२ ज़बानदस्ती. २३ और इस्तेथार, ताक़त, बल.

मेरा ही हुस्न<sup>१</sup> जग में, हर चंद मौजज़न<sup>२</sup> है ।  
 तिस पर भी तेरे तिश्ना-ए<sup>३</sup>-दीदार हैं तो हम हैं ॥ ४ ॥  
 कैला के दामे-उलफत<sup>४</sup> घिरते घिराते<sup>५</sup> हम हैं ।  
 गर सैद<sup>६</sup> हैं तो हम हैं, सय्याद<sup>७</sup> हैं तो हम हैं ॥ ५ ॥  
 अपना ही देखते हैं, हम बन्दोबस्त याग<sup>८</sup> ।  
 गर दाद<sup>९</sup> हैं तो हम हैं, फर्याद<sup>१०</sup> हैं तो हम हैं ॥ ६ ॥

[ ६० ]

भैरवी गज़ल ।

दिल को जब गैर<sup>१</sup> से सका देखा ।  
 आप को अपना दिलरवा<sup>२</sup> देखा ॥ १ ॥ } टुक  
 पी लिया नाम<sup>३</sup> दादा-ए-बहदुर<sup>४</sup> ।  
 खेशो-बेगाना<sup>५</sup> आशना<sup>६</sup> देखा ॥ २ ॥  
 जिस ने है ज्ञात अपनी को जाना ।  
 आप को हक<sup>७</sup> से कब जुदा देखा ॥ ३ ॥  
 रमज़े-रहबर<sup>८</sup> की अपने जब समझा ।  
 न कोई गैर<sup>९</sup> व-मासिवा देखा ॥ ४ ॥  
 करके बाज़ार गर्म कसरत<sup>१०</sup> का ।  
 आप को अपने में छुपा देखा ॥ ५ ॥

१ सौन्दर्य, २ लैहरें मार रहा है, ३ दर्शन को प्यासे ४ मोह जाल, ५ फँसते फँसते, ६ शिकार, ७ शिकारी, ८ न्याय वा न्यायालय, ९ दूसरे से, १० माशूक (प्यारा), ११ प्याला, १२ अद्वैत रूपी मद [ शराब ] का, १३ अपना और दूसरा, १४ मित्र, १५ गत्य स्वरूप, १६ गुरु के उपदेश, १७ अपने से अलग कोई न देगा, १८ नाबतक,

गर का इस्म<sup>१</sup> गर्चि है मशहर ।  
 न निशां उस का, न पता देखा ॥ ६ ॥  
 जब से दर्शन है राम का पाया ।  
 पे राम ! क्या कहूं कि क्या देखा ॥ ७ ॥

[ ६१ ]

भैरवी गुज़ल ।

यार को हम ने जा बजा<sup>२</sup> देखा ।  
 कहीं बन्दा कहीं खुदा देखा ॥ १ ॥  
 सूरते-गुल<sup>३</sup> में खिलखिला के हँसा ।  
 शकले-बुलबुल<sup>४</sup> में चैहचहा देखा ॥ २ ॥  
 कहीं है वादशाहे-तखते-निशी<sup>५</sup> ।  
 कहीं कासा<sup>६</sup> लिये गदा<sup>७</sup> देखा ॥ ३ ॥  
 कहीं आवद<sup>८</sup> बना, कहीं जाहिद<sup>९</sup> ।  
 कहीं रिंदो<sup>१०</sup> का पेशवा<sup>११</sup> देखा ॥ ४ ॥  
 करके<sup>१२</sup> दावा कहीं अनलहक<sup>१३</sup> का ।  
 वर सरे-दार<sup>१४</sup> वह खिचा देखा ॥ ५ ॥  
 देखता आप है, सुने है आप ।  
 न कोई उस के मासिवा<sup>१५</sup> देखा ॥ ६ ॥  
 बलिक यह बोलना भी तकलुफ<sup>१६</sup> है ।  
 हम ने उस को सुना है या देखा ॥ ७ ॥

---

१ नाम. २ हर जगह. ३ गुप्प के दर में. ४ बुलबुल के दर में. ५ सिंहासन पर बैठा हुआ महाराजा. ६ भिक्षा का प्याला, खप्पर ७ भिक्षु, फकीर. ८ पूजा पाठी. कर्मकाण्डी. ९ विरक्त. १० बदमाश, शराबी. ११ नेता, सरदार. १२ मैं खुदा हूँ ( शिबोउहं ). १३ मूली के रिकरे पन. १४ अन्ध, दूतरा. १५ प्यादा, नुं हो है.

[ ६२ ]

राग मैरवी ताल तीन ।

दिया अपनी खुदी<sup>१</sup> को जो हम ने उठा ।

वह जो परदा सा बीच में था न रहा ॥ १ ॥

रहे परदे में अब न वह परदा-निशी<sup>२</sup> ।

कोई दूसरा उस के सिवा न रहा ॥ २ ॥

न थी हाल की जब हमें अपनी खबर ।

रहे देखते औरों के ऐबो-हुनर<sup>३</sup> ॥ ३ ॥

पड़ी अपनी बुराईयों पर जो नज़र ।

तो निगह<sup>४</sup> में कोई बुरा न रहा ॥ ४ ॥

ज़फर<sup>५</sup> आदमी उस को न जानियेगा ।

गो<sup>६</sup> हो कैसा ही साहिबे-फैहो-ज़का<sup>७</sup> ॥ ५ ॥

जिसे ऐश<sup>८</sup> में यादे-खुदा न रही ।

जिसे तैश<sup>९</sup> में खोफे-खुदा<sup>१०</sup> न रहा ॥ ६ ॥

१ अहंकार. २ कुपकर परदे में बैठनेवाला या परदा ओढ़े हुए. ३ गुण दोष.  
४ दृष्टि. ५ कवि का नाम. ६ चाहे, यद्यपि. ७ समझदार, तीव्र बुद्धि और विचार.  
८ घाला. ९ विषयानन्द, भोग विलास. १० क्रोध, गुस्सा. १० ईश्वर का भय.



[ ६३ ]

राग शंकराभरण ताल दादरा ।

की करदा नी ! की करदा, तुसी पुछोखां दिलवर की करदा (हेक)  
 इकसे घर बिच बसदयां रसदयां, नहीं हूँदा बिच परदा । की करदा० ॥१॥  
 बिच मसीत नमाज़ गुज़ारे, बुतखाने जा बड़दा । की करदा० ॥२॥  
 आप इको, कई लाख घर अन्दर मालिक हर घर घर दा । की करदा० ॥३॥  
 मैं जितबल देखां, उतबल ओही, हर इक दी संगत करदा । की करदा० ॥४॥

पंक्तिवार अर्थ ।

- ( १ ) एक ही घर में रहते हुए पर्दा नहीं हुआ करता सगर मेरा स्वरूप मेरे दिल रूपी घर में रहते हुए पर्दे में लुपता हुआ है इसलिये ऐ लोगो ! तुम इस दिखवर ( प्यारे आत्मा ) को पूछो कि तू यह क्या लुक्कन छिपन खेल कर रहा है ।
- ( २ ) कहीं तो मसजिद में लुप कर बैठा रहता है और उस के आगे नमाज़ होती है, और कहीं मन्दिरों में दाखिल हुआ है जहां उस की पूजा हो रही है; इस लिये ऐ लोगो ! दिलवर को पूछो कि तू क्या कर रहा है ।
- ( ३ ) आप स्वयं तो एक अद्वितीय है सगर लाखों घरों ( दिलों ) के अन्दर प्रविष्ट हुआ २ हर एक घर का स्वामी बना हुआ है, इस लिये ऐ लोगो ! तुम दर्शक बनो कि यह दिखवर ( प्यारा ) क्या कर रहा है ।
- ( ४ ) जियर मैं देखता हूं उधर दिखवर ही नज़र आता है और हर एक के साथ वही ( बिसा बैठा ) नज़र आता है । इसलिये ऐ लोगो ! आप दर्शक बनो कि दिखवर ( ईश्वर ) यह क्या कर रहा है ।

मूसा ते फरऔन बना के, दो हाँके कयों लड़दा । की करदा० ॥ ५ ॥

[ ६४ ]

बिना ज्ञान जीव कोई मुक्ति नहीं पावे ॥ (हेतु)

चाहे धार माला चाहे बान्ध मृग छाला ।

चाहे तिलक छाप चाहे भस्म तू रमावे ॥ १ ॥ बिना०

चाहे रच के मन्दिर मठ, पत्थरों के लावे ठठ ।

चाहे जड़ पदार्थों को सीस नित्य नवावे ॥ २ ॥ बिना०

चाहे वजा गाल चाहे शंख और वजा घड़याल ।

चाहे ढप चाहे डौरु भाँझ तू बजावे ॥ ३ ॥ बिना ज्ञान०

चाहे फिरे तू भया<sup>१</sup> प्रयाग, काशी में जा प्राण त्याग ।

चाहे गंगा यमुना चाहे सागर<sup>२</sup> में नहावे । ४ ॥ बिना ज्ञान०

द्वारका अह रामेश्वर, बद्रीनाथ पर्वत पर ।

चाहे जगन्नाथ में तू झूठो भात खावे ॥ ५ ॥ बिना ज्ञान०

चाहे जटा सीस बढ़ा, जोगी हो, चाहे कान फड़ा ।

चाहे यह पाखंड रूप लाख तू बनावे ॥ ६ ॥ बिना ज्ञान०

ज्ञानियों का कर ले संग, मूर्खों की तज दे भंग ।

फिर तुझे ठीक मुक्ति का साधन आवे ॥ बिना ज्ञान०

( ५ ) कुछ समानों में हज़रत मूसा और हज़रत फरौन हुये हैं जिन में खूब भगड़ा हुआ था, इन दोनों को बनाकर या इस तरह से आप ही दो रूप होकर यह दिखवर कयों लड़ता और लड़ाता है । इस लिये ये लोगो ! आप दर्याफ्त करो कि यह दिखवर क्या करता है ।

[ ६५ ]

मक्रे गया गल्ल<sup>१</sup> मुकदी नाहीं, जे<sup>२</sup> न मनो मुकाईये<sup>३</sup> ।  
 गंगा गयां कुच्छ ज्ञान न आवे, भावें<sup>४</sup> सौ सौ टुब्बे लाईये ।  
 गया<sup>५</sup> गयां कुच्छ गति न होवे, भावें<sup>६</sup> लख लख पिंड वटपाईये ।  
 प्रयाग गयां शान्ति न आवे, भावें<sup>७</sup> वैह वैह मूंड मुंडाईये ।  
 दयाल दास जैडी<sup>८</sup> वस्तु अन्दर होवे, ओहनू<sup>९</sup> बाहर क्यों ।  
 कर पाईये ॥ १ ॥

[ ६६ ]

ज्ञानी की उदारता औ बेपरवाही ।

राग पीछू, ताल दीपचंदी ।

न है कुच्छ तमन्ना<sup>१</sup> न कुच्छ जुस्तजू<sup>२</sup> है ।  
 कि वहदत<sup>३</sup> में साकी<sup>४</sup> न सागर<sup>५</sup> न बू है ॥ १ ॥  
 मिलीं दिल को आंखें जभी मार्फत<sup>६</sup> की ।  
 जिधर देखता हूं सनम<sup>७</sup> खबरू<sup>८</sup> है ॥ २ ॥  
 गुलिस्ताँ<sup>९</sup> में जा कर हर इक गुल<sup>१०</sup> को देखा ।  
 तो मेरी ही रंगत-ओ-मेरी ही बू है ॥ ३ ॥  
 मेरा तेरा उट्टा हूये एक ही सब ।  
 रही कुच्छ न हसरत<sup>११</sup> न कुच्छ आर्जू<sup>१२</sup> है ॥ ४ ॥

१ बात, धंधा. २ अगद. ३ खतम करें. ४ चाहे. ५ तीर्थ का नाम है. ६ जौनसी. ७ उस को. ८ इच्छा. ९ जिज्ञासा. १० एकता. ११ आनन्द रूपी शराब पिलाने वाला. १२ पिवाला. १३ आत्म ज्ञान की. १४ प्यारा (अपना स्वरूप). १५ सम्मुख. १६ बाग. १७ पुच्छ. १८ शोक, अफसोस. १९ आशा, खयाल. १० गुल.

[ ६७ ]

ज्ञानी का प्रणय ।

राग जंमला, ताल चलन्त ।

हम सूखे टुकड़े खायेंगे । भारत पर वारे जायेंगे ॥  
हम सूखे चने चवायेंगे । भारत की बात बनायेंगे ॥  
हम नंगे उम्र बितायेंगे । भारत पर जान मिटायेंगे ॥  
सूखों पर दौड़ें जायेंगे । काँटों को राख बनायेंगे ॥  
हम दर दर धक्के खायेंगे । आनन्द की भलक दिखायेंगे ॥  
सब रिश्ते नाते तोड़ेंगे । दिल इक आत्म-संग जोड़ेंगे ॥  
सब विषयों से मुंह मोड़ेंगे । सिर सब पापों का फोड़ेंगे ॥

[ ६८ ]

ज्ञानी का निश्चय-व-हिम्मत ।

राग परज ताल गज़ल ।

गर्चि कुतब<sup>१</sup> जगह से टले तो टल जाये ।  
गर्चि वैहर<sup>२</sup> भी जुगनू<sup>३</sup> की दुम से जल जाये ॥  
हिमालय बाद<sup>४</sup> की ठोकर से गो फिसल जाये ।  
और आफताब<sup>५</sup> भी कब्ले-उरुज<sup>६</sup> ढल<sup>७</sup> जाये ॥  
मगर न साहबे-हिम्मत<sup>८</sup> का हौसला टूटे ।  
कभी न भूले से अपनी जवीं<sup>९</sup> पर बल आये ॥

---

१ ध्रुव तारा. २ सखुद्र. ३ रात को चमकने वाला कीड़ा जो उड़ता भी है. ४  
घाघू. ५ सूर्य. ६ सूर्य उदय ( चढ़ने ) से पहिले. ७ अस्त हो जाय. ८ हिम्मत वाला  
पुरुष, धैर्यवान ९ पेशानी, मस्तक.

## त्याग (फकीरी)

[ ६६ ]

राम शंकराचरण ताल धुनाली ।

घर मिले उसे जो अपना घर खोवे है ।  
 जो घर रखे सो घर घर में रोवे है ॥ टेक  
 जो राज तजे, वह महाराज करे है ।  
 धन तजे तो फिर दौलत से घर भरे है ॥  
 सुख तजे तो फिर औरों का दुःख हरे<sup>१</sup> है ।  
 जो जान तजे वह कभी नहीं मरे है ॥  
 जो पलंग तजे वह फूलों पै सोवे है ।  
 जो घर रखे वह घर घर में रोवे है ॥ १ ॥  
 जो परदारा को तजे, वह पावे रानी ।  
 अरु भूठ बचन दे त्याग, सिद्ध हो वाणी ॥  
 जो दुर्बुद्धि को तजे, वही है ज्ञानी ।  
 मन से त्यागी हो, ऋद्धि<sup>३</sup> मिले मन मानी ॥  
 जो सर्व तजे उसी का सब कुछ होवे है ।  
 जो घर रखे सो घर घर में रोवे है ॥ २ ॥  
 जो इच्छा नहीं करे, वह इच्छा पावे ।  
 अरु स्वाद तजे फिर अमृत भोजन खावे ॥  
 नहिं माँगे तो फल पावे जो मन भावे ।  
 हैं त्याग में तीनों लोक, वेद यही गावे ॥



जो मैला होकर रहे, वह दिल धोवे है ।  
जो घर<sup>१</sup> रखे वह घर घर में रोवे है ॥ ३ ॥

[ १०० ]

लावनी राग धनासरी ताल ध्रुमाली ।

नहीं मिले हर धन त्यागे नहीं मिले राम जान तजे । } टेक  
नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे ॥ }

सुत-दारा<sup>२</sup> या कुटुम्ब त्यागे, या अपना घर बार तजे ।  
नहीं मिले है प्रभु कदापि, जग का सब व्यवहार तजे ॥  
कंद मूल फल खाय रहे, और अन्न का भी आहार तजे ।  
चस्त्र त्यागे नग्न हो रहे, और पराई नार तजे ॥  
तो भी हर नहीं मिले यह त्यागे, चाहे अपने प्राण तजे ।  
नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे ॥ १ ॥

तजे पलंग फूलों का और हीरे मोती लाल तजे ।  
जात की इज्जत, नाम और तेज और कुल की सारी चाल तजे ॥  
वन में निशिदिन<sup>३</sup> बिचरे और दुनिया का जंजाल तजे ।  
देह को अपनी चाहे जलावे, शरीर की भी खाल तजे ॥  
ब्रह्मज्ञान नहीं हो तौ भी, चाहे वह अपनी शान तजे ।  
नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे ॥ २ ॥  
रहे मौन बोले नहीं मुखसे, अपनी सारी बात तजे ।  
बालपन से योग ले चाहे तात<sup>४</sup> तजे या मात तजे ॥

१ घर से अभिप्राय वही परिच्छिन्न घर वा अङ्कार से है. २ पुत्र की. ३ दिन रात, सदा. ४ पिता.

शिखा सूत्र त्याग जो करदे और अपनी उत्तम ज्ञात तजे ।  
 कभी जीव को न मारे और घात तजे अपघात<sup>१</sup> तजे ॥  
 इतना तजे तो क्या होवे जो देह का नहीं गुमान तजे ।  
 नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे ॥ ३ ॥  
 रहे रात दिन खड़ा न सोवे, पृथ्वी का भी शैल<sup>२</sup> तजे ।  
 कष्ट उठावे रहे बेचैन, सुख और सारी चैन तजे ॥  
 मीठा हो कर बोलें सब से, कड़वे अपने बैन<sup>३</sup> तजे ।  
 इतना त्यागे और देह अभिमान नहीं दिन रैन<sup>४</sup> तजे ॥  
बनारसी उसे मिले नहीं हर, चाहे सकल जहान तजे ।  
 नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे ॥ ४ ॥

[ १०१ ]

राग सोहनी ताल गज्जल ।

फकीरी खुदा को प्यारी है, अमीरी कौन बिचारी है । (टेक)  
 बदन पर खाक सो है अकसीर<sup>१</sup>, फकीरों की है यही जागीर ॥  
 हाथ बांधे हैं खड़े अमीर, बादशाह हो या हो वज़ीर ।  
 सदा यह सच हमारी है, गदा<sup>२</sup> की खुदा से यारी है ॥

फकीरी खुदा० ॥ १ ॥

है उन का नाम सुनो दरवेश<sup>३</sup>, कोई नहीं पाये उन से पेश<sup>४</sup> ।  
 खुदा से मिले रहें हमेश, कोई नहीं जाने उन का भेष ।  
 कभी तो गिरया-ओ-ज़ारी है, कभी चश्मों<sup>५</sup> में खुमारी<sup>६</sup> है ॥

फकीरी खुदा० ॥ २ ॥

१ रक्षा करना, बचाना. २ सोना, दिखाना ३ शब्द, वाणी, वाक्य. ४ रात.  
 ५ रसायन; सब से बढ़ कर दाक. ६ आवाज़, ध्वनी. ७ फकीर. ८ फकीर. ९ रोना  
 पीटना १० नेत्र, आंखें. ११ मस्ती.

है उन का रुतबा बहुत बलन्द, खुदा के तयीं हुआ पसन्द ।  
बादशाह से भी है दोचन्द, उन्हें मत बुरा कहो हर चन्द ।  
उन की दिल पर सवारी है, ऐसी कहीं नहीं तय्यारी है ॥

फकीरी खुदा० ॥ ३ ॥

चीथड़े शाल से हैं आला<sup>१</sup>, चश्म हरताल से हैं आला ।  
चने भी दाल से हैं आला, चलन हर चाल से आला ।  
ज़ख्म जो दिल पर कारी<sup>२</sup> है, वही खुद मरहम विचारी है ॥

फकीरी खुदा० ॥ ४ ॥

पाश्र्वों में पड़ा जो है छाला, वह है मोतियों से भी आला ।  
हाथ में फूटा सा प्याला, जामे-जमशेद<sup>३</sup> से भी आला ।  
अगर कोई हफत<sup>४</sup> हज़ारी है, वह भी उन का भिखारी है ॥

फकीरी खुदा० ॥ ५ ॥

मकाँ लामकाँ<sup>५</sup> फकीरों का, निशाँ वे निशाँ फकीरों का ।  
फकर है निहां<sup>६</sup> फकीरों का, खुदा है ईमान फकीरों का ।  
ताक़त सबर वह भारी है, मौत भी उन से हारी है ।

फकीरी खुदा० ॥ ६ ॥

बढ़ गये बाल तो क्या परवाह, उतर गयी खाल तो क्या परवाह ।  
आ गया माल तो क्या परवाह, हुये कज़ाल तो क्या परवाह ।  
खुदा ही जनाब<sup>७</sup> वारी है, फकर की यही क़रारी<sup>८</sup> है ॥

फकीरी खुदा० ॥ ७ ॥

१ उत्तल, २ सखत, भारी. ३ जमशेद बादशाह का प्याला. ४ पद वा खिताब होता है जिस से सात हज़ार शिपाहियों का अफसर अभिषेक है. ५ देश रक्षित. ६ उस क्षण हुआ, पुनः. ७ महान. ८ सिद्धि, धैर्य.

[ १०२ ]

धामन्द भैरवी ताल गज़ल ।

न ग़म दुन्या का है मुझ को, न दुन्या से किनारा<sup>१</sup> है ।  
 न लेना है, न देना है, न हीला<sup>२</sup> है, न चारा है ॥ १ ॥  
 न अपने से मुहब्बत है, न नफरत ग़ैर से मुझ को ।  
 सभों को ज़ाते-हक<sup>३</sup> देखूं, यही मेरा नज़ारा है ॥ २ ॥  
 न शाही मैं मैं शैदा<sup>४</sup> हूं, गदाई<sup>५</sup> मैं न ग़म मुझ को ।  
 जो मिल जावे सोई अच्छा, वही मेरा गुज़ारा है ॥ ३ ॥  
 न कुफ़ इस्लाम से फारिग, न मिह्नत<sup>६</sup> से गरज़ मुझ को ।  
 न हिन्दु गिबरो<sup>७</sup>-मुसलिम हूं, सभों से पंथ न्यारा है ॥ ४ ॥

[ १०३ ]

जोगी (साधु) का सच्चा रूप (चरित्र)

गज़ल ।

प्यारे ! क्या कहूं अहवाल<sup>१</sup> की अपने परेशानी ? ।  
 लगा ढलने मेरी आँखों से इक दिन खुद ब खुद पानी ।  
 यकायक आ पड़ी उस दम, मेरे दिल पर यह हैरानी ।  
 कि जिस की हो रही है यह जो हर इक जा<sup>२</sup> सनाख्तानी<sup>३</sup> ।  
 किसी सूरत से उस को देखिये “कैसा है वह जानी<sup>४</sup>” ॥ १ ॥

१ पृथक्ता, उदासीनता, अलहदगी. २ बहाना. ३ असल स्वरूप. ४ आकर्षक, मोहित. ५ फकीरी. ६ मत, मतान्तर. ७ आग पूजने वाला पारसी. ८ दर्शा, अवस्था. ९ जगह, देश. १० स्तुति. ११ प्यारा, दिख्यार.

चढ़ा इस फिक्र का दरिया, भरा इस जाँश में आकर ।  
 कि इक इक लैहर उस की ने, ले उड़ाया हवा ऊपर ।  
 करारो-होशो-अकलो-सबरो-दानिश<sup>१</sup> बहगये यकसर<sup>२</sup> ।  
 अकेला रह गया आजिज़, गरीबो-वेकसो-वेपर<sup>३</sup> ।  
 लगा रोने कि इस मुश्किल की हो अब कैसे आसानी ? ॥ २ ॥  
 यह सूरत थी, कि जी<sup>४</sup> में इश्क ने यह बात ला डाली ।  
 मँगा थोड़ा सा गेरू और वहीं कफनी रँगा डाली ।  
 बिना मुद्रे गले के बीच सेली<sup>५</sup> बरमला डाली ।  
 लगा मुंह पर भवूत और शक्ल जोगी की बना डाली ।  
 हुआ अवधूत जोगी, जोगियों में आप गुरु-ज्ञानी ॥ ३ ॥  
 उठाई चाह<sup>६</sup> की भोली, प्याला चश्म<sup>७</sup> का खप्पर ।  
 बना कर इश्क का कंठा, तलब का सिर पै रख चकर ।  
 मुंडासा<sup>८</sup> गेरुआ बान्धा, रक्खा त्रिशूल कान्धे पर ।  
 लगा जोगी हो फिरने दूढ़ता उस यार को घर घर ।  
 दुकां बाज़ार-ओ-कूचा दूढ़ने की दिल में फिर ठानी ॥ ४ ॥  
 लगी थी दिल में इक आतिश<sup>९</sup>, धूआँ उठता था आहों का ।  
 तमाशे के लिये हलका<sup>१०</sup> बन्धा था साथ लोगों का ।  
 तलब थी यार की और गरम था बाज़ार बातों का ।  
 न कुछ सिर की खबर थी और न था कुछ होश पाश्र्वों का ।  
 न कुछ भोजन का अन्देश<sup>११</sup> न कुछ फिकरे-अमल<sup>१२</sup> पानी ॥ ५ ॥

१ स्थिरता, धैर्य; दुद्धि, सन्तोष और समझ. २ इकट्ठे, एक साथ. ३ नि-  
 राश्रय और निर्बल या लाचार. ४ दिल. ५ साधु वेष ई इच्छा. ६ नेत्र, चक्षु. ८  
 जित्तासा. ९ सिर पर फकीरी पगड़ी. १० आग. ११ घेरा ( पुरुषों का सहव ).  
 १२ खयाल, सोच, फिक्र १३ भांग गांजे की चिन्ता को फिक्र अथवा पानी कहते हैं.



फिर इन जोग का ठहरा अजब कुछ आन कर नकशा ।

जो आया सामने मेरे, तो कहता उस से सुनता जा ।

“ कहो प्यारे ! हमारे यार को तुम ने कहीं देखा ? ” ।

जो कुछ मतलब की वह बोला, तो उस से और कुछ पूछा ।

बगर<sup>१</sup> यूँही लगा कहने, तो फिर देना अनाकानी<sup>२</sup> ॥ ६ ॥

कभी माला से कहता था लगा कर जप से “ ऐ माला !

हुआ हूँ जब से मैं जोगी, तू ही उस यार को बतला ” ।

कभी घवरा के हँसता था, कभी ले स्वाँस रोता था ।

लवों से आह, आँखों से वहा पड़ता था दरिया सा ।

अजब जंजाल में चकर के डाले है परेशानी ॥ ७ ॥

कोई कहता था “ बाबा जी ! इधर आओ, इधर बैठो ।

पड़े फिरते हो ऐसे रात दिन, टुक बैठो, ससताओ ।

जो कुछ दरकार हो ‘ मेवा मिठाई ’ हुकम फरमाओ ।

न कहना उस से “ ले आओ ” न कहना उस से “ मत लाओ ”

खबर हरगिज़ न थी कुछ उस घड़ी अपनी, न बेगानी ॥ ८ ॥

बड़ी दुवधा में था उस दम, कैहां जाऊं ? कहां देखूं ? ।

किसे देखूं ? किसे पूछूं ? किधर जाऊं ? कहां दूढ़ूं ? ।

करूं तदवीर क्या ? जिस से मैं उस दिलदार को पाऊं ।

निशां हरगिज़ न मिलता था, पड़ा फिरता था<sup>३</sup> जूं मजनूं ।

अजब दरिया-ए-हैरत की हुई थी आ के तुग्यागी<sup>४</sup> ॥ ९ ॥

उसी को ढूंढता फिरता हुआ मसजिद में जा पहुंचा ।

जो देखा वाँ<sup>५</sup> भी है रोज़ो-नमाज़ों का ही इक चर्चा ।

कोई जुब्बे' में अटका है, कोई डाढ़ी में है उलझा ।

तसल्ली कुछ न पाई जब, तो आखिर वाँ से घबराया ।

चला रोता हुआ बाहर व अहवाल-परेशानी ॥ १० ॥

यही दिल में कहा “ दुक मदर्स्से को भांकिये चल कर ।

भला शायद उसी में हो नज़र आजाये वह दिलवर ” ।

गया जब वहाँ तो देखी बाह बा ! कुछ और भी बदतर<sup>३</sup> ।

किताबें खुल रहीं हैं, मच रहा है शोरो-गुल यकसर ।

हर इक मसले पै फाज़िल कर रहे हैं वैहसे-नफसानी<sup>४</sup> ॥ ११ ॥

चला जब वहाँ से घबरा कर, तो फिर यह आ गयी जी में ।

कि यह जगह<sup>५</sup> तो देखी अब चलो दुक दौर<sup>६</sup> भी देखें ।

गया जब वाँ तो देखा सूति और घंटों की झिझारें ।

पुकारा तब तो रोकर “ आह ! किस पत्थर से सिर मारें ? ” ।

कहीं मिलता नहीं वह शोख काफिर दुश्मने-जानी ॥ १२ ॥

कहा दिल ने कि “ अब दुक तीर्थों की सैर भी कीजे ।

भला वह दिलखा<sup>७</sup> शायद इसी जगह पै मिलजावे ” ।

बहुत तीर्थ मनाये और किये दर्शन भी बहुतेरे ।

तसल्ली कुछ न पाई तब तो हो लाचार फिर वाँ से ।

सुहृद्वत छोड़ कर बस्ती की, ली राहे-वियावानी<sup>८</sup> ॥ १३ ॥

गया जब दशतो-स्वहरा<sup>९</sup> में तो रोया “ आह ! क्या करिये ?

कहां तक हिज़्र<sup>१०</sup> में उस शोख के रो रो के दिन भरिये ?

१ चोगा, लबादा फकीरों का लबास. २ परेशानी की अवस्था में, उद्धिग.

३ और भी बुरी अवस्था ४ बाद विवाद, वा अपने अपने खवाल पर झगड़ा. ५ स्थान. ६ मन्दिर ७ प्यारा मायूक. ८ जंगल का मार्ग. ९ वन और जंगल वा उजाड़. १० विरह, वियोग.

किधर जाईये, और किस के ऊपर आश्रय धरिये ? ।  
यही बेहतर है अब तो डूबिये या ज़हर खा मरिये ।  
भला जी जान के जाने में शायद आ मिले जानी” ॥ १४ ॥

रहा कितने दिनों रोता फिरा हर दशत में नाला<sup>१</sup> ।  
गरीबो-बेकसो-तन्हा मुसाफिर बेवतन हैरान् ।  
पहाड़ों से भी सिर पटका, फिरा शहरों में हो गिरया<sup>२</sup> ।  
फिरा भूखा प्यासा ढूँढता दिलबर की सरगर्दान्<sup>३</sup> ।  
न खाने को मिला दाना, न पीने को मिला पानी ॥ १५ ॥

पड़ा था रेत में और धूप में सूरज से जलता था ।  
लगीं थीं दिल की आंखें यार से, और जी निकलता था ।  
उसी के देखने के ध्यान में हर दम निकलता था ।  
चले महवूब<sup>४</sup> से कुछ हाय ! मेरा बस न चलता था ।  
पड़े बहते थे आँसू लालागूं<sup>५</sup> लाले-बदखशानी<sup>६</sup> ॥ १६ ॥

जब इस अहवाल को पहुँचा, तो वह महवूब बेपरवाह ।  
वहीं सौ बेकरारी से मेरी बालीन्<sup>७</sup> पै आ पहुँचा ।  
उठा कर सिर मेरा ज़ानू<sup>८</sup> पै अपने रख के फरमाया ।  
कहा “ले देख ले जो देखना है अब मुझे इस जाँ” ।  
अयां<sup>९</sup> हैं इस घड़ी करते तेरे पै भेदे-पिन्हानी<sup>१०</sup> ॥ १७ ॥

यह सुन रख “पहले हम आशिक को अपने आजमाते हैं ।  
‘जलाते हैं’ ‘सताते हैं’ ‘रुलाते हैं’ ‘बुलाते हैं’ ।

१ रोते हुए. २ रोता हुआ, रुदन करता हुआ. ३ परेशान, हैरान्, अशान्त.  
४ प्यारा मायूक (अन्तरात्मा). ५ लाल (मुख) पुष्प की तरह. ६ बदखशां  
देश का जवाहर, हीरा. ७ सिरहाना, तकिया. ८ घुटने. ९ जगह. १० प्रकट करना,  
खोल देना. ११ युद्ध, युवा हुआ रहस्य.

हर एक अहवाल में जब खूब साबित<sup>१</sup> उस को पाते हैं ।  
 उसी से आ के मिलते हैं, उसी को मुंह दिखाते हैं ॥  
 उसे पूरा सम्भलते हैं हम अपने ध्यान का ध्यानी<sup>२</sup> ॥ १८ ॥  
 सदा<sup>३</sup> महबूब की आई, ज्योंहीं कानों में वाँ<sup>४</sup> मेरे ।  
 बदन में आ गया जी और वहीं दुःख दर्द सब भूले ।  
 फिर आँखें खोल कर दिस्वर के मुँह पर टुक नजर करके ।  
 ज़मीनो-आस्मान<sup>५</sup> चौदह तबक<sup>६</sup> के खुल गये पर्दे ।  
 मिटी एक आन में सब कुछ खराबी और परेशानी ॥ १९ ॥  
 हुई जब आ के यकताई<sup>७</sup>, हुई<sup>८</sup> का उठ गया पर्दा ।  
 जो कुछ वसो-दगा<sup>९</sup> थे, उड़ गये एक दम में हो पारा<sup>१०</sup> ।  
 नज़ीर<sup>११</sup> उस दिन से हम ने फिर जो देखा खूब हर एक जा ।  
 वही देखा, वही समझा, वही जाना, वही पाया ।  
 बराबर हो गये हिन्दू मुसलमां गिबरो-नुसरानी<sup>१२</sup> ॥ २० ॥

[ १०४ ]

सोहनी ताल दीपचंदी ।

हर आन<sup>१३</sup> हँसी हर आन खुशी, हर वक्त अमीरी है बाबा । } टेक  
 जब आशिक<sup>१४</sup> मस्त फकीर हुए, फिर क्या दिलगीरी<sup>१५</sup> है बाबा ॥ }

हैं आशिक और माशूक<sup>१६</sup> जहां. वहां शाह वज़ीरी है बाबा ।  
 न रोना है, न धोना है, न दर्द-असीरी<sup>१७</sup> है बाबा ॥

१ पक्का, पुखता. २ आवाज़. ३ वहां, उस स्थान पर. ४ प्रियी और आ-  
 काश. ५ चौदह लोक. ६ अमेदता. ७ द्वैत. ८ धोखा और अन. ९ टुकड़ें. १० कवि.  
 का नाम. ११ पारसी लोग और ईसाई लोग. १२ बनव. १३ मेरी. १४ उदासी.  
 १५ प्यारा दिस्वर. १६ क़ैद होने का दर्द.

दिन रात वहारें चोहलें हैं, अरु इश्क-सफ़ीरी<sup>१</sup> है वावा ।  
 जो आशिक होय सो जाने है, यह भेद फकीरी है वावा ॥१॥ हर०  
 है चाह फकत इक दिलवर की, फिर और किसी की चाह नहीं ।  
 इक राह उसी से रखते हैं, फिर और किसी से राह नहीं ॥  
 यां जितना रंज-तरदुद<sup>३</sup> है, हम एक से भी आगाह<sup>४</sup> नहीं ।  
 कुछ मरने का संदेह<sup>५</sup> नहीं, कुछ जीने की परवाह नहीं ॥२॥ हर०  
 कुछ जलम नहीं, कुछ ज़ोर नहीं, कुछ दाद<sup>६</sup> नहीं, फर्याद नहीं ।  
 कुछ कैद नहीं, कुछ वन्द नहीं, कुछ जवर<sup>७</sup> नहीं, आज़ाद नहीं ॥  
 शागिर्द नहीं, उस्ताद नहीं, वीरान नहीं, आवाद नहीं ॥  
 हैं जितनी बातें दुन्या की सब भूल गये कुछ याद नहीं ॥३॥ हर०  
 जिस सिम्त<sup>८</sup> नज़र भर देखे हैं, उस दिलवर की फुलवारी है ।  
 कहीं सबज़े की हरयाली है, कहीं फूलों की गुलकारी<sup>९</sup> है ॥  
 दिन रात मग्न खुश बैठे हैं, अरु आस<sup>१०</sup> उसी की भारी है ॥  
 वस आप ही वह दातारी<sup>११</sup> है, अरु आप ही वह भंडारी है ॥४॥ हर०  
 नित्य इशरत<sup>१२</sup> है, नित्य फरहत<sup>१३</sup> है, नित्य राहत<sup>१४</sup> है, नित्य  
 शादी<sup>१५</sup> है ।  
 नित्य<sup>१६</sup> 'मेहरो-करम'<sup>१७</sup> है दिलवर<sup>१८</sup> का, नित्य खूबी खूब मुशादी<sup>१९</sup> है ॥

१ जैसे बुलबुल पक्षी पुष्प का ( प्रेमी ) आशिक है और प्रेम में बोलता रहता है ऐसे ही अपने दिलवर के नाम रटने वाला इश्क ( प्रेम ) २ इस सप्ताह में. ३ चिन्ता. ४ ज्ञाता, समर्थ. ५ डर. ६ न्याय, इन्साफ. ७ रुखती, मजदूरी. ८ तरफ, ओर. ९ बेल बूटों को लगाना. १० आशा. ११ सब कुछ देने वाला, सब का दाता. १२ विषयानन्द, खुश दिली. १३ खुशी, आनन्द. १४ आराधन, शान्ति. १५ आनन्द, खुशी. १६ सर्वदा, हमेशा. १७ प्रेम और कृपा. १८ प्यारा. १९ इच्छाबुद्धि.



जब उमड़ा दरिया उलफत<sup>१</sup> का, हर चार तरफ आवादी है ।  
हर रात नयी इक शादी है, हर रोज़ सुवारिक-वादी है ॥५॥ हर  
हैं तन तो गुल के रंग बना, अरु मुंह पर हर दम लाली है ।  
जुज़<sup>२</sup> ऐशो-तरव<sup>३</sup> कुछ और नहीं, जिस दिन से खुरत<sup>४</sup>  
संभाली है ॥

होंठों में राग तमाशे का, अरु गत पर बजती ताली है ।  
हर रोज़ बसन्त अरु होली है, और हर इक रात दिवाली  
है ॥ ६ ॥ हर०

हम आशिक जिस सनम<sup>५</sup> के हैं, वह दिखर सबसे आला<sup>६</sup> है ॥  
उस ने ही हम को जी<sup>७</sup> बरखा, उस ने ही हमको पाला है ॥  
दिल अपना भोला भाला है, और इश्क बड़ा मतवाला है ॥  
कया कहिये और नज़ीर<sup>८</sup> आगे? अब कौन समझने वाला है ॥७॥ हर०

[ १०५ ]

राग बघन कल्यान, ताल चलन्त ।

न बाप देटा, न दोस्त दुश्मन, न आशिक और सनम<sup>१</sup> किसी के ।  
अज़ब तरह की हुई फरागत<sup>२</sup>, न कोई हमारा, न हम किसी को देक  
न कोई तालिब<sup>३</sup> हुआ हमारा न हमने दिल से किसी को चाहा ।  
न हम ने देखी खुशी की लैहरें, न दर्दा-गम से कभी कराहा<sup>४</sup> ।  
न हम ने बोया, न हमने काटा, न हमने जोता, न हमने गाहा ।  
उठा जो दिल से भरम का पर्दा, तो उस के उठते ही फिर  
अहाहा ॥ १ ॥ टेक

१ मेम, २ विना, सिवाये. ३ खुश दिली, आनन्द, राग रंग. ४ होश. ५  
प्यारा ६ उत्तम. ७ प्राण, ज़िन्दगी. ८ दृष्टान्त, मिसाल, कवि का नाम भी है. ९  
प्यारा, नाशुक. १० फुरसत. ११ जिज्ञासु, चाहने वाला. १२ नफरत.

यह बात कल की है जो हमारा, कोई था अपना, कोई बेगाना ।  
कहें थे नाते, कहें थे पोते, कहें थे दादा, कहें थे नाना ।

किसी पै पटका, किसी पै कूटा, किसी पै पीसा, किसी पै छाना ॥  
उठा जो दिल से भरम का थाना<sup>१</sup>, तो फिर जभी से यह हम  
ने जाना ॥ २ ॥ टेक

अभी हमारी बड़ी दुकान<sup>२</sup> थी, अभी हमारा बड़ा कसब था ।  
कहीं खुशामद, कहीं दरामद, कहीं त्वाजो<sup>३</sup>, कहीं अदब<sup>४</sup> था ।  
बड़ी थी ज्ञात और बड़ी सफात और बड़ा हसब<sup>५</sup> और बड़ा  
नखब<sup>६</sup> था ।  
खुदी के मिटते ही फिर जो देखा, न कुछ हसब था न कुछ  
नखब था ॥ ३ ॥ टेक

अभी यह ठब था किसी से लड़िये, किसी के पाओं पे जाके  
पड़िये ।  
किसी से हक<sup>७</sup> पर फिसाद करिये, किसी से नाहक लड़ाई ।  
लड़िये ।  
अभी यह धुन<sup>८</sup> थी दिल अपने में “कहीं बिगड़िये, कहीं  
भगड़िये” ।  
हुई के उठते ही फिर यह देखा, कि अब जो लड़िये तो किस  
से लड़िये ॥ ४ ॥ टेक

१ डेर २ अनेक सत्कार. ३ खातिरदारी. ४ कुल, उच्च पद से भी अभिप्राय है.  
५ कुल, आम्दान, नखल. ६ खर्चकार. ७ सचाई ८ विचार, कयाल.

[ १०६ ]

राग धनासरी ताल ध्रुमाली ।

वाह वाह रे मौज फकीरां दी<sup>१</sup> । ( टेक )  
 कभी चबावें चना चबीना, कभी लपट लें खीरां दी ।  
 वाह वाह रे० १  
 कभी तो ओढ़ें शाल दुशाला कभी गुदड़िया लीड़ां दी ॥  
 वाह वाह रे० २  
 कभी तो लोवें रंग महल में, कभी गलीं अहीरां<sup>२</sup> दी ॥  
 वाह वाह रे० ३  
 मंग तंग के टुकड़े खान्दे, चाल चलें अमीरां दी ॥  
 वाह वाह रे० ४

[ १०७ ]

राग पहाड़ी ताल दादरा ।

पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं । ( टेक )  
 जो फकर<sup>३</sup> में पूरे हैं, वह हर हाल में खुश हैं ।  
 हर काम में, हर दाम<sup>४</sup> में, हर चाल में खुश हैं ॥  
 गर माल दिया यार ने, तो माल में खुश हैं ।  
 बेज़र<sup>५</sup> जो किया, तो उसी अहवाल<sup>६</sup> में खुश हैं ।  
 इफलास<sup>७</sup> में, इदवार<sup>८</sup> में, इकबाल<sup>९</sup> में खुश हैं } ॥ १ ॥  
 पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं }

१ फकी, २ मोच जाति के लोग. ३ तबाग, फकीरी. ४ मूल्य स्थिति या चाल.  
 ५ निर्धन, गरीब. ६ अयस्या, हालत. ७ गरीबी ८ किसी तरह का बोझ, कष्ट-  
 मदीव. ९ बुरे भाग्य वाला. १० बड़भ गी, अचछे भाग्य ( मारक ) वाला.

चहरे पे है मलाल<sup>१</sup> न जिगर में असरे-गम<sup>२</sup> ।  
 माथे पे कहीं चीन<sup>३</sup>, न अबू<sup>४</sup> में कहीं खम<sup>५</sup> ।  
 शिकवा<sup>६</sup> न जुवाँ पर, न कभी चश्म<sup>७</sup> हुई नम<sup>८</sup> ।  
 गम में भी वही ऐश<sup>९</sup>, अलम<sup>१०</sup> में भी वही दम ।  
 हर बात, हर औकात<sup>११</sup>, हर अफाल<sup>१२</sup> में खुश हैं ॥ २ ॥ पूरे०  
 गर यार की मर्ज़ी हुई, सिर जोड़ के बैठे ।  
 घर वार छुड़ाया, तो वही छोड़ के बैठे ।  
 मोड़ा उन्हें जिधर, वहीं मुंह मोड़ के बैठे ।  
 गुदड़ी जो सिलाई, तो वही ओढ़ के बैठे ।  
 और शाल उढ़ाई, तो उसी शाल में खुश हैं ॥ ३ ॥ पूरे०  
 गर उस ने दिया गम, तो उसी गम में रहे खुश ।  
 मातम<sup>१३</sup> जो दिया, तो उसी मातम में रहे खुश ।  
 खाने को मिला कम, तो उसी कम में रहे खुश ।  
 जिस तरह रक्खा उस ने, उस आलम<sup>१४</sup> में रहे खुश ।  
 दुःख दर्द में, आफात<sup>१५</sup> में, जंजाल में खुश हैं ॥ ४ ॥ पूरे०  
 जीने का न अन्होह<sup>१६</sup> है, न मरने का ज़रा गम ।  
 यकसां है उन्हें ज़िन्दगी और मौत का आलम ।  
 वाकिफ न बरस से, न महीने से बह इक दम ।  
 शव<sup>१७</sup> की न मुसीबत, न कभी रोज़<sup>१८</sup> का मातम ।  
 दिन रात, बड़ी पहर, महो-साल<sup>१९</sup> में खुश हैं ॥ ५ ॥ पूरे०

१ रंज, उदासी. २ फिक्र, गम का प्रभाव. ३ बल, बट, तबोरी. ४ अबू, धुकुटि. ५ टेढ़ापन, तिरछापन. ६ उलाहना, शिकायत. ७ चबु वा नेत्र. ८ भीगे हुए, आँसू भरना, अश्रुपात. ९ मरुन्नता, खुशदिली. १० रंज, दुःखावस्था. ११ समय, काल. १२ काम. १३ रोना, पीटना. १४ अवस्था, हालत. १५ मुसीबत, दुस्त. १६ गम, सोच. १७ रात्रि. १८ दिन. १९ मास और वर्ष.

गर उस ने उड़ाया, तो लिया ओढ़ दोशाला<sup>१</sup> ।  
 कमल जो दिया तो बुही कांधे पै संभाला ।  
 चादर जो उड़ाई तो बुही हो गयी वाला<sup>२</sup> ।  
 बंधवाई लंगोटी तो बुही हँस के कहा, “ ला ” ।  
 पोशाक में, दस्तार<sup>३</sup> में, रुमाल में खुश हैं ॥ ६ ॥ पूरे०  
 गर खाट बिछाने को मिली, खाट में सोये ।  
 हुका में सुलाया, तो जा हाट में सोये ।  
 रस्ते में कहा “ सो ”, तो जा बाट में सोये ।  
 गर टाट बिछाने को दिया, टाट में सोये ।  
 और खाल बिछादी, तो उसी खाल में खुश हैं ॥ ७ ॥ पूरे०  
 पानी जो मिला, पी लिया जिस तौर का पाया ।  
 रोटी जो मिली, तो किया रोटी में गुज़ारा ।  
 दी भूख, गर यार ने, तो भूख को मारा ।  
 दिल शाद रहे, कर के कड़ाके पै कड़ाका<sup>४</sup> ।  
 और छाल चवाई, तो उसी छाल में खुश हैं ॥ ८ ॥ पूरे०  
 गर उस ने कहा सैर करो जा के जहाँ की ” ।  
 तो फिरने लगे जंगलो-वर<sup>५</sup> मार के भांकी ।  
 कुछ दशतो-बियावा<sup>६</sup> में खबर तन की न जाँ की ।  
 और फिर जो कहा “ सैर करो हुस्ने-बुता<sup>७</sup> की ”  
 तो चश्मी-खो-जुल्फो-खतो-खाल<sup>८</sup> में खुश हैं ॥ ९ ॥ पूरे०  
 कुछ उन को तलब<sup>९</sup> घर की, न बाहिर से उन्हें काम ।  
 तकिया की न खादिश, न बिस्तर से उन्हें काम ।

१ सुंदर बख. २ सुन्दर, ३ पगड़ी. ४ निराहार. ५ वन और देश या बस्ती.  
 ६ जंगल और उजाड़. ७ प्यारों ( पुरुषों ) की सुंदरता. ८ नेत्र, मुन्, बाल और  
 यज्ञा कता में. ९ आवश्यकता, जिज्ञासा.



अस्थल<sup>१</sup> की हवस<sup>२</sup> दिल में, न मन्दिर से उन्हें काम ।  
 हुफलिस<sup>३</sup> से न मतलब, न तवज़र<sup>४</sup> से उन्हें काम ।  
 मैदान में, बाज़ार में, चौपाल<sup>५</sup> में खुश हैं ॥ १० ॥ पूरे०

[ १०८ ]

राग विक्रमोदय ताल कंपक ।

गर है फ़कीर तो तू न रख यहां किसी से मेल ।  
 न तूबड़ी न देल<sup>६</sup>, पड़ा अपने सिर पै खेल ॥ ( टेक )  
 जितने तू देखता है यह फल फूल पात बेल ।  
 सब अपने अपने काम की हैं कर रहे भ्रमेल ।  
 नाता है यां सो नाथ, जो रिश्ता<sup>७</sup> है सो नकेल ।  
 जो ग़म पड़े तो उसको तू अपने ही तन पर भेल ॥ १ गर है०  
 जब तू हुआ फ़कीर, तो नाता किसी से क्या ।  
 छोड़ा कुटुम्ब तो फिर रहा रिश्ता किसी से क्या ।  
 मतलब भला फ़कीर को बाबा किसी से क्या ।  
 दिलबर को अपने छोड़ के मिलना किसी से क्या ॥ २ गर है०  
 तेरी न यह ज़मीन है, न तेरा यह आस्मान ।  
 तेरा न घर, न वार, न तेरा यह जिस्मो-जां<sup>८</sup> ।  
 उस के सिवाय कि जिस पै हुआ तू फ़कीर यां ।  
 कोई तेरा रफीक<sup>९</sup>, न साथी, न मिहरबान् ॥ ३ गर है०

१ फकीरों के रहने की जगह; ( खान्खाना ) २ दालच, हल्दी, शीत ३ शरीर, तंगदस्त ४ खमीर ५ मंडप ६ फकीरों के पात्रों के नाम हैं ७ सम्बन्ध ८ शरीर और प्राण ९ मित्र, दोस्त

यह उलफतें<sup>१</sup> कि साथ तेरे आठ पहर हैं ।  
 यह उलफतें नहीं हैं, मेरी जां ! यह क़हर<sup>२</sup> हैं ।  
 जितने यह शहर देखे हैं, जादू के शहर हैं ।  
 जितनी मिठाईयां हैं मेरी जां ! वह ज़हर हैं ॥ ४ गर है०

खूबा<sup>३</sup> के यह चाँद से मुँह पर खिले हैं बाल ।  
 मारा है तेरे वास्ते सय्याद<sup>४</sup> ने यह जाल ।  
 यह बाल बाल अब है तेरी जान का बवाल<sup>५</sup> ।  
 फंसियो खुदा के वास्ते इस में न देख भाल ॥ ५ गर है०

जिस का तू है फकीर उसी को समझ तू यार ।  
 मांगे तो मांग उस से क्या नक़द क्या उधार ।  
 देवे तो ले वही, जो न देवे तो दम न मार ।  
 इस के सिवा किसी से न रख अपना कारो-वार ॥ ६ गर है०

क्या फायदा अगर तू हुआ नाम को फकीर ।  
 हो कर फकीर तो भी रहा चाल में असीर<sup>६</sup> ।  
 ऐसा ही था तो फकर को नाहक़ किया असीर ।  
 हम तो इसी सखुन<sup>७</sup> के हैं कायल मियां नज़ीर<sup>८</sup> ॥ ७ ॥

गर है फकीर तो तू न रख यहां किसी से मेल ।  
 न तूम्बड़ी, न बेल पड़ा अपने सिर पै खेल ॥

[ १०६ ]

राम जंगला ।

लाज मूल न आइया, नाम धरायो फकीर ॥ टेक  
 राती राती बढियां करैदा, दिन नूं सदावै पीर ॥ १ ॥ ला०  
 अपना भारा चाय न सकदा, लोकां बधावै धीर ॥ २ ॥ ला०  
 कुड़म कुटुंब दी फाही फस्या, गल विच पालिया लीर ॥ ३ ॥ ला०  
 आखिर नतीजा मिलेगा प्यारे ! रोवैंगा नीरो-नीर ॥ ४ ॥ ला०

पंक्तिवार अर्थ ।

( टेक ) फकीर ( विरक्त ) नाम धरा कर तुझे इन कामों से लज्जा नहीं आती ।

( १ ) रात के समय रुप कर तू बुराईयां करता है और दिन को महात्मा या गुरु कहलाता है, इस से तुझे लज्जा नहीं आती ।

( २ ) अपने अन्दर तो शोक व चिन्ता का इतना बोझ धरा हुआ है कि उस को तू उठा ही नहीं सकता, और लोगों को धीरज दिला रहा है । इस बात से तुझे लज्जा नहीं आती ।

( ३ ) कई तरह से चेलों का कुटुंब बनाकर आप तो उस में फंसा हुआ है और अपने गले में भगवे रंग के कपड़े पहिन कर अपने को संन्यासी असंग बता रहा है ।

( ४ ) खैर, इन सारी करतूतों का तुझ को अन्त में बूझ नतीजा मिलेगा और फूट फूट तुझ को रोना पड़ेगा ।

# निजानन्द ( खुदमस्ती )

[ ११० ]

राग शंकराभरण, ताल ध्रुमाली ।

हमें इक पागलपन दरकार ॥ टेक

अकल नकल नहीं चाहिये हम को पागलपन दरकार ॥ हमें इक० १  
छोड़ पुवाड़े<sup>१</sup>, भगड़े सारे, गोता वहदत<sup>२</sup> अन्दर मार ॥ हमें इक० २  
लाख उपाय करले प्यारे ! कदे<sup>३</sup> न मिलसी यार ॥ हमें इक० ३  
वेखुद<sup>४</sup> होजा देख तमाशा, आपे खुद दिलदार<sup>५</sup> ॥ हमें इक० ४

[ १११ ]

लावनी, ताल ध्रुमाली ।

कोई हाल मस्त, कोई माल मस्त, कोई तूती मैना रूप में ।  
कोई खान मस्त, पैहरान मस्त, कोई राग रागनी दूहे<sup>१</sup> में ॥  
कोई अमल मस्त, कोई रमल मस्त, कोई शतरंज चौपड़ जूप में ।  
इक खुद मस्ती बिन और मस्त, सब पड़े अविद्या कूप में ॥ १ ॥

कोई अकल मस्त, कोई शकल मस्त, कोई चंचलताई हाँसी में ।  
कोई वेद मस्त, किलेव मस्त, कोई मक्के में, कोई काशी में ॥  
कोई ग्राम मस्त, कोई धाम मस्त, कोई सेवक में, कोई दासी में ।  
इक खुद मस्ती बिन और मस्त, सब बन्धे अविद्या फाँसी में ॥ २ ॥

---

१ भगड़े बखेड़े, २ एकता, अद्वैत, ३ कभी भी, ४ अहंकार रहित, ५ आशिक,  
प्यारा, ६ तुलसीदास जी, दोहे चौपाई में

कोई पाठ मस्त, कोई ठाठ मस्त, कोई मैरों में, कोई काली में ।  
 कोई ग्रन्थ मस्त, कोई पन्थ मस्त, कोई श्वेत<sup>१</sup> पीतरंग<sup>२</sup> लाली में ॥  
 कोई काम मस्त, कोई खाम मस्त, कोई पूर्ण में, कोई खाली में ।  
 इक खुद मस्ती बिन और मस्त, सब बन्धे अविद्या जाली में ॥ ३ ॥

कोई हाट मस्त, कोई घाट मस्त, कोई वन पर्वत ओजाड़ा<sup>३</sup> में ।  
 कोई जात मस्त, कोई पाँत मस्त, कोई तात भ्रात सुत दारा में ॥  
 कोई कर्म मस्त, कोई धर्म मस्त, कोई मसजिद ठाकुरद्वारा में ।  
 इक खुद मस्ती बिन और मस्त, सब बहे अविद्या धारा में ॥ ४ ॥

कोई साक मस्त, कोई खाक मस्त, कोई खासे में, कोई मलमल में ।  
 कोई योग मस्त, कोई भोग मस्त, कोई स्थिति में, कोई चलचल में ॥  
 कोई ऋद्धि मस्त, कोई सिद्धि मस्त, कोई लेन देन की कल कल में ।  
 इक खुद मस्ती बिन और मस्त, सब फंसे अविद्या दलदल में ॥ ५ ॥

कोई ऊर्ध्व मस्त, कोई अधः<sup>४</sup> मस्त, कोई बाहर में, कोई अन्तर में ।  
 कोई देश मस्त, बिदेश मस्त, कोई औषध में, कोई मन्तर में ॥  
 कोई आप मस्त, कोई ताप मस्त, कोई नाटक चेटक तन्तर में ।  
 इक खुद मस्ती बिन, और मस्त, सब फंसे अविद्या यन्तर में ॥ ६ ॥

कोई शुष्ट<sup>५</sup> मस्त, कोई तुष्ट<sup>६</sup> मस्त, कोई दीर्घ में, कोई छोटे में ।  
 कोई गुफा मस्त, कोई सुफा मस्त, कोई तूँघे में, कोई लोटे में ॥  
 कोई ज्ञान मस्त, कोई ध्यान मस्त, कोई असली में, कोई खोटे में ।  
 इक खुद मस्ती बिन और मस्त, सब रहे अविद्या टोटे में ॥ ७ ॥

१ सफेद. २ जर्द, पीला. ३ उजाड़, बियाबान ४ नीचे ५ खासी, जलुस ई  
 मधुसू चित्त.



[ ११२ ]

राग भंजोटी, ताल तीन ।

आ दे हुकाम उक्ते आ मेरे प्यारिया ! ( टेक )  
 पा गल<sup>१</sup> असली पागल हो जा, मस्त अलस्त सफा मेरे  
 प्यारिया ! आ दे० १  
 ज़ाहर सूरत दौला<sup>२</sup> मौला, बातन<sup>३</sup> खास खुदा मेरे  
 प्यारिया ! आ दे० २ टेक  
 पुस्तक पोथी सुट<sup>४</sup> गंगा बिच, दम दम अलख जगा मेरे  
 प्यारिया ! आ दे० ३  
 सेली<sup>५</sup> टोपी ला दे सिर तौ, रुण्ड मुंड होजा मेरे  
 प्यारिया ! आ दे० ४  
 इज्जत फोकी फूक दुन्या दी, अक धतूरा खा मेरे  
 प्यारिया ! आ दे० ५  
 भगड़े भेड़े फैसल रिंदा, लेखा पाक<sup>६</sup> चुका मेरे प्यारिया !  
 आ दे० ६  
 लड़का वगल, ढण्डोरा किहा<sup>७</sup>, दूरडन किते न जा मेरे  
 प्यारिया ! आ दे० ७  
 तेरी बुकल<sup>८</sup> बिच प्यारा लेटे, खोल तनी गल ला मेरे  
 प्यारिया ! आ दे० ८  
 आपे भुल, भुलावें आपे, आपे बने खुदा मेरे प्यारिया !  
 आ दे० ९

१ रमज, रहस्य ( अगली वस्तु ) २ भोला भाला, ३ अन्दर से, ४ फैंक, ५ मान की ( दुन्या की ) पाड़ी, टोपी, ६ साफ, हिमाव बेदाक, ७ कैगा, ८ वगल, गोद.

पदे फाड़ दूँ<sup>१</sup> दे सारे, इकरो इक दिखा मेरे प्यारिया !  
आ दे० १०

[ ११३ ]

राग भैरवी, ताल दादरा ।

गर हम ने दिल सनम<sup>२</sup> को दिया, फिर किसी को क्या ।  
इसलाम<sup>३</sup> छोड़ कुफ्र लिया, फिर किसी को क्या ॥ १ ॥  
हमने तो अपना आप गिरेवां<sup>४</sup> किया है चाक<sup>५</sup> ।  
आप ही सिया, सिया न सिया, फिर किसी को क्या ॥ २ ॥  
आँखें हमारी लाल, सनम ! कुछ नशा पिया ? ।  
आप ही पिया, पिया न पिया, फिर किसी को क्या ॥ ३ ॥  
अपनी तो ज़िन्दगी मियां ! मिस्ले-हुवाब<sup>६</sup> है ।  
गो खिज़र<sup>७</sup> लाख बरस जिया, फिर किसी को क्या ॥ ४ ॥  
दुनिया में हमने आ के भला या बुरा किया ॥  
जो कुछ किया सो हमने किया, फिर किसी को क्या ॥ ५ ॥

[ ११४ ]

राग मांड, ताल धुमाली ।

भला हुआ हर बीसरो<sup>१</sup>, सिर से टली बलाय ।  
जैसे थे वैसे भये, अब कछु कहा न जाय ॥ १ ॥

१ द्वैत. २ प्यारा. ३ मुसलमानी धर्म. ४ अपना फपड़ा या चोगा. ५ फाड़ना.  
६ मुग़लानों के चट्टन. ७ मुसलमानों में पानी के देवता का नाम है. ८ भूल गया.

मुख से जपूं, न कर<sup>१</sup> जपूं, उर<sup>२</sup> से जपूं न राम ।  
 राम सदा हम को भजे, हम पावें विश्राम<sup>३</sup> ॥ २ ॥  
 राम मरे तो हम मरे ? हमरी मरे बलाय ।  
 सत्पुरुषों का बालका मरे न मारा जाय ॥ ३ ॥  
 हृद टप्पे सो औलिया<sup>४</sup>, बेहद टप्पे सो पीर ।  
 हृद बेहद दोनों टप्पे, वा का नाम फकीर ॥ ४ ॥  
 हृद हृद करते सब गये, बेहद गया न कोय ।  
 हृद बेहद मैदान में रह्यो कबीरा सोय ॥ ५ ॥  
 मन ऐसो निर्मल भयो जैसो गंगा नीर<sup>५</sup> ।  
 पीछे पीछे हर फिरत, कहत कबीर, कबीर ॥ ६ ॥

[ ११५ ]

राग जिला, ताल दादरा ।

बाज़ीच-ए-इतफाल<sup>१</sup> है दुनिया मेरे आगे ।  
 होता है शयो-रोज़<sup>२</sup> तमाशा मेरे आगे ॥ १ ॥  
 इक खेल है औरंगे-मुलेमान<sup>३</sup> मेरे नज़दीक ।  
 इक बात है इजाज़े-मसीहा<sup>४</sup> मेरे आगे ॥ २ ॥  
 जुज़<sup>५</sup> नाम नहीं खुरते-आलम<sup>६</sup> मेरे नज़दीक ।  
 जुज़ वैल<sup>७</sup> नहीं हस्ती-ए-अशया<sup>८</sup> मेरे आगे ॥ २ ॥  
 होता है निहां<sup>९</sup> खाक में स्वहरा<sup>१०</sup> मेरे होते ।  
 बिसता है जबी<sup>११</sup> खाक पे<sup>१२</sup> दरिया मेरे आगे ॥ ४ ॥

१ हाथ. २ दिल वा हृदय से. ३ आराम. ४ पैगम्बर. ५ जल. ६ बच्चों का खेल, ७ रात और दिन, ८ मुलेमान बादशाह का शाही तख्त. ९ हज़रत ईसा-मसीह की कलामात, मौजज़ा. १० सिबाय. ११ संसार का रूप या दृश्य. १२ अब. १३ पदार्थ की मौजूदगी, खबदा उस का दृश्य मात्र. १४ गुप्त होता, छिप जाता है. १५ जंगल, १६ माथा ( मस्तक )-१७ पर.

[ ११६ ]

राग जिला, ताल दादरा ।

फैंके फलक को तारे, सब बख्श दूंगा मैं ।  
 भर भर के मुट्ठी हीरे, अब बख्श दूंगा मैं ॥ १ ॥  
 सूरज को गर्मी, चाँद को ठण्डक, गुहर<sup>१</sup> की आव<sup>२</sup> ;  
 यू मौज<sup>३</sup> अपनी आई, सब बख्श दूंगा मैं ॥ २ ॥  
 गाली, गलोच, फिड़की, ताने करूँ मुआफ ।  
 बाली, ठठोली, धमकी, सब बख्श दूंगा मैं ॥ ३ ॥  
 तारीफ से परे हूँ, पेवों से मैं बरी हूँ ।  
 हम्दो-सना-दुआ<sup>४</sup> भी, सब बख्श दूंगा मैं ॥ ४ ॥  
 चाहिद<sup>५</sup> हूँ ज्ञाते-मुत्लक<sup>६</sup>, थां इस्तयाज़<sup>७</sup> कैसी ।  
 औसाफ<sup>८</sup> को लुटा दूँ, सब बख्श दूंगा मैं ॥ ५ ॥  
 स्वहराये-बेकरा<sup>९</sup> हूँ, दरिया हूँ बे किनार ।  
 बू<sup>१०</sup> गैर की न छोड़ूँ, सब बख्श दूंगा मैं ॥ ६ ॥  
 दिल नज़र मेरी करदो, हूँ शाहे-बेनियाज़<sup>११</sup> ।  
 कौनो-मकां-जमां-ज़र<sup>१२</sup>, सब बख्श दूंगा मैं ॥ ७ ॥  
 भगड़े, कसूर, कज़िये, अच्छे बुरे ख्याल ।  
 जू<sup>१३</sup> ओस भट उड़ादूँ, सब बख्श दूंगा मैं ॥ ८ ॥  
 मौजूद कुछ नहीं है, मेरे सिवा यहाँ ।  
 वैजे-दुई<sup>१४</sup>, गुमानो-शक<sup>१५</sup>, सब बख्श दूंगा मैं ॥ ९ ॥

१ मोती. २ बसक. ३ तरंग. ४ स्तुति, उपमा और प्रार्थना. ५ एक. ६ वास्तविक तत्त्व. ७ भेद, फरक. ८ गुण. ९ बेहद बिबावां. १० द्वैत की गन्ध. ११ उदार बादशाह. १२ देश काल वास्तु और सम्पत्ति. १३ रुद्र. १४ द्वैत भ्रम. १५ संशय और अनुमान.

अक्लो-क्यास<sup>१</sup>, जिस्मो-जां, मालो-दोस्तां ।  
कर राम पर निसार, यह सब बख्श दूंगा मैं ॥

[ ११७ ]

रागनी जयजय वन्ती, या राग एमन कलजाण, ताल चलन्त ।

तमाम दुन्या है खेल मेरा, मैं खेल सब को खिला रहा हूं ।  
किसी को बेखुद बना रहा हूं, किसी को गुम में रुला रहा हूं ॥ १ ॥  
अवस<sup>२</sup> है सद्मा<sup>३</sup> भले बुरे का, हो कौन तुम और कहां से आये ।  
खुशी है मेरी, मैं खेल अपना, बना बना के मिटा रहा हूं ॥ २ ॥  
फिरो हो रूये-ज़िमी<sup>४</sup> पे यारो ! तलाश मेरी मैं मारे मारे ।  
अमल करो, तुम दिलों में देखो, मैं नहने-अकरब<sup>५</sup> सुना रहा हूं ॥ २ ॥  
कभी मैं दिन को निकालूं सूरज, कभी मैं शब<sup>६</sup> को दिखाऊं तारे ।  
यह जोर मेरा है दोनों पाँवों को मिस्ले-फिरकी फिरा रहा हूं ॥ ४ ॥  
किसी की गर्दन मैं तौके-लानत<sup>७</sup>, किसी के सिर पर है ताजे-रहमत<sup>८</sup> ।  
किसी को ऊपर बुला रहा हूं, किसी को नीचे गिरा रहा हूं ॥ ५ ॥

[ ११८ ]

राग भैरवी ताल चलंत ।

कहूं क्या रंग उस गुल<sup>९</sup> का, अहाहाहा, अहाहाहा ।  
हुआ रंगी<sup>१०</sup> चमन<sup>११</sup> सारा, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ १ ॥  
नमक छिड़के है वह किस र मजे से दिलके ज़ख्मों पर ।  
मजे लेता हूं मैं क्या क्या, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ २ ॥

१ बुद्धि और ख्याल २ व्यर्थ ३ छोट ४ पृथिवी के ऊपर ५ शहरन (कंठ)  
से भी अधिक समीप ६ रात्रि ७ लानत की ज़ुलूम ८ कृपा दृष्टि का ताज, तिलक  
९ फूल (सुन्दर स्वरूप या आत्मस्वरूप) १० रंगदार (नाना प्रकार का) ११ बाग



खुदा जाने हलावत<sup>१</sup> क्या थी, आवे-तेगे-कातिल<sup>२</sup> में ।  
 लवे-हर-ज़ख्म<sup>३</sup> है गोया अहाहाहा, अहाहाहा ॥ ३ ॥  
 शरारो<sup>४</sup>-वर्क<sup>५</sup> में क्या फर्क<sup>६</sup>, मैं समझूं कि दोनों में ।  
 है इक शोला-भजूका<sup>७</sup> सा अहाहाहा, अहाहाहा ॥ ४ ॥  
 दला-गर्दा<sup>८</sup> हूं साकी<sup>९</sup> का, कि जामे-इश्क<sup>१०</sup> से मुझको ।  
 दिया घूट उस ने इक ऐसा, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ ५ ॥  
 मेरी सूरत-परस्ती<sup>११</sup> हक-परस्ती<sup>१२</sup> है कहूं मैं क्या ? ।  
 कि इस सूरत में है क्या क्या, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ ६ ॥  
 ज़फर<sup>१३</sup> आलम<sup>१४</sup> कहूं मैं क्या; तबीयत की रवानी<sup>१५</sup> का ।  
 कि है उमड़ा हुआ दरिया, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ ७ ॥

[ ११६ ]

गज़ल कछवाली ।

गर यूं हुआ तो क्या हुआ, और वूं हुआ तो क्या हुआ । टेक  
 था एक दिन वह धूम का, निकले था जब अस्वार हो ।  
 हर दम पुकारे था नकीव<sup>१६</sup>, आगे बढ़ो पीछे हटो ।  
 या एक दिन देखा उसे, तन्हा<sup>१७</sup> पड़ा फिरता है वह ।  
 बस क्या खुशी, क्या ना खुशी, यकसां है सब ऐ दोस्तो ॥ गर यूं १  
 या नेमतें<sup>१८</sup> खाता रहा, दौलत के दस्तर-खान पर ।  
 मेवे मिठाई वा मज़े<sup>१९</sup>, हल्वा-ओ-तुर्शी<sup>२०</sup> और शकर ।

१ मिठास, स्वाद २ कातिल नी तलवार की भार. ३ हर घाव के समीप. ४ अंगारा और विजली. ५ भड़की हुई लाट. ६ कृतज्ञ, अर्पित हूं ७ शगाव ( प्रेमा-  
 घृत ) पिलाने वाला, यहां आत्मज्ञानी से अभिप्राय है. ८ इश्क ( प्रेम रस ) का  
 प्याजा. ९ झूति पूजा (युत परस्ती). १० ईश्वर पूजा. ११ कवि का नाम. १२ हाल  
 ( अवस्था. ) १३ रफतार ( चाल. ), गति. १४ कोषवान, चौधदार. १५ अकेला.  
 १६ अच्छे अच्छे पदार्थ १७ स्वादिष्ट १८ लट्ठा मीठा.

या बान्ध भोली भीख की. टुकड़े के ऊपर धर नज़र ।  
 हां कर गदा<sup>१</sup> फिरने लगा, कूचा बकूचा दर बदर<sup>२</sup> ॥ गर यू० २  
 या इशरतों<sup>३</sup> के ठाठ थे, या ऐश के असबाब थे ।  
 साकी<sup>४</sup> सुराही<sup>५</sup> गुलबदन<sup>६</sup>, जामो<sup>७</sup>-शराबे-नाव थे ।  
 या बेकसी के दर्द से बेहाल थे, बेताब थे ।  
 आखिर जो देखा दोस्तो ! सब कुछ ख्यालो-ख्वाब थे ॥ गर यू० ३  
 जो इशरतें<sup>८</sup> आकर मिलीं, तो वह भी कर जाना मियां ।  
 जो दर्दों-दुःख आकर पड़े, तो वह भी भरजाना<sup>९</sup> मियां ।  
 ख्वाह दुःख में ख्वाह सुख में, यां<sup>१०</sup> से गुज़र जाना मियां ।<sup>१</sup>  
 है चार दिन की ज़िन्दगी, आखिर को मरजाना मियां ॥ गर यू० ४

[ १२० ]

गज़ल कन्वाली ( दादरा ) ।

पा लिया जो था कि पाना, काम क्या बाकी रहा । }  
 जानना था सोई जाना, काम क्या बाकी रहा ॥ } ( टेक )  
 आ गया, आना जहां, पहुँचा वहां, जाना जहां ।  
 अब नहीं आना न जाना, काम क्या बाकी रहा ॥ १ ॥  
 बन गया बनना बनाने बिन<sup>१२</sup> बना, जो बन बना ।  
 अब नहीं बानी<sup>१३</sup>-ओ-बाना<sup>१४</sup>, काम क्या बाकी रहा ॥ २ ॥  
 जानते आये जिसे हैं जान भगड़ा तै<sup>१५</sup> हुआ ।  
 उठ गया बकना बकाना, काम क्या बाकी रहा ॥ ३ ॥

१ फकीर. २ द्वार २ पर या गली दर गली. ३ विषयानन्द अर्थात् भोगों के  
 पदार्थ ४ मेसरस की शराब पिलाने वाला. ५ शराब रखने का बर्तन. ६ पुष्प वर्ण  
 सुन्दर स्त्रियों. ७ प्याला. ८ अंगूरी शराब. ९ विषय भोग. १० रुह जाना. ११ यहाँ.  
 १२ बिना. १३ बनाने वाला १४ बनाने की वस्तु. ताना १५ समाप्त, फैसल.

लाख चौरासी के चक्कर से थका, खोली कमर ।  
 अब रहा आराम पाना, काम क्या बाकी रहा ॥ ४ ॥  
 स्वप्न के मानन्द यह सब अनहुआ<sup>१</sup> ही हो रहा ।  
 फिर कहां करना कराना, काम क्या बाकी रहा ॥ ५ ॥  
 डाल दो हथियार, मेरी राय<sup>२</sup> पुखता अब हुई ।  
 लग गया पूरा निशाना, काम क्या बाकी रहा ॥ ६ ॥  
 होने दो जो हो रहा है, कुछ किसी से मत कहो ।  
 सन्त हो किसि को सताना, काम क्या बाकी रहा ॥ ७ ॥  
 आत्मा के ज्ञान से हुआ कृतार्थ<sup>३</sup> जन्म है ।  
 अब नहीं कुछ और पाना, काम क्या बाकी रहा ॥ ८ ॥  
 देह के प्रारब्ध से मिलता है सब को सर्व कुछ ।  
 फिर जगत को क्यों रिझाना<sup>४</sup>, काम क्या बाकी रहा ॥ ९ ॥  
 घोर<sup>५</sup> निद्रा से जगाया सद्गुरु ने वाह वा ।  
 अब नहीं जगना जगाना, काम क्या बाकी रहा ॥ १० ॥  
 मान कर मन में मियां, मौला<sup>६</sup> का मेला है यह सब ।  
 फिर वूं अब क्या मौलाना<sup>७</sup>, काम क्या बाकी रहा ॥ ११ ॥  
 जान कर तौहीद<sup>८</sup> का मनशा<sup>९</sup>, शुभा सब मिट गया ।  
 यूं ही गालों का बजाना, काम क्या बाकी रहा ॥ १२ ॥  
 एक में कसरत<sup>१०</sup>-व कसरत में भी एक ही एक है ।  
 अब नहीं डरना डराना, काम क्या बाकी रहा ॥ १३ ॥  
 अक्ल से भी दूर है, कहने-ब-सुनने से परे ।  
 हो चुका कहना कहाना, काम क्या बाकी रहा ॥ १४ ॥

१ बिना हुए ही हो रहा है. २ सम्मति. ३ संतुष्ट. ४ खुशामद करना, चाप-  
 सुची करना. ५ गहरी, शून्य निन्द. ६ ईश्वर कीला. ७ मौलवी, पंडित. ८ अद्वैत,  
 एकता. ९ मन्तव्य. १० बहुत, अनेक.

रमज़<sup>१</sup> है तौहीद<sup>२</sup>, यहां हुकमा<sup>३</sup> की हिकमत<sup>४</sup> तंग है ।  
 हो गया दिल भी दिवाना<sup>५</sup>, काम क्या बाकी रहा ॥ १५ ॥  
 रह गये उलमा-व-फ़ज़ला इल्म की तहकीक<sup>६</sup> में ।  
 भ्रम है पढ़ना पढ़ाना, काम क्या बाकी रहा ॥ १६ ॥  
 द्वैत और अद्वैत के भगड़े में पड़ना है फ़ज़ूल ।  
 अब न दाँतों को घिसाना काम क्या बाकी रहा ॥ १७ ॥  
 जान कर दुनिया को पूरे तौर से ख़्वाबो-ख़्याल ।  
 अब नहीं तपना तपाना, काम क्या बाकी रहा ॥ १८ ॥  
 कुछ नहीं मतलब किसी से, सो रहा दाँगों पसार ।  
 अब कहीं काहे को जाना, काम क्या बाकी रहा ॥ १९ ॥  
 हो गयी दे दे के डङ्का, सारी शङ्का भी फना<sup>७</sup> ।  
 अब मिला निर्भय<sup>१०</sup> ठिकाना, काम क्या बाकी रहा ॥ २० ॥

[ १२१ ]

नी<sup>११</sup> ! मैं पाया महरम<sup>१२</sup> यार । } टेक  
 जिस दे हुसन<sup>१३</sup> दी अजब बहार ॥ }  
 जिस दा जोगी ध्यान लगावन ।  
 पीर पैगम्बर निश दिन ध्यावन ॥  
 पंडित आलिम<sup>१४</sup> अन्त न पावन ।  
 तिस दा कुल अज़हार<sup>१५</sup> ॥ नी ! मैं ० ॥ १ ॥  
 “ मैं ” “ तू ” दा जद भेद मिटाया ।  
 कुफर<sup>१६</sup> इस्लाम दा नाम भुलाया ॥

१ इशारा, रहस्य. २ अद्वैत, एकता. ३ अफ़लमंद. ४ अफ़ल युक्ति. ५ पागल.  
 ६ विद्वान और सहात्मा. ७ दर्याफ्त, डूँड. ८ स्वप्न भ्रम. ९ नाश. १० भय रहित  
 और कवि का खिताब भी है. ११ अजी ! रे प्यारी. १२ अपना भेदी प्यारा,  
 प्रेमात्मा. १३ मुहब्बत, मोहब्बत. १४ विद्वान. १५ दृश्य, नाम रूप. १६ नास्तिकपन.

'मेन' 'मेन' दा फर्क गंवाया ।  
 खुल्या सब इसरार<sup>१</sup> ॥ नी ! मैं० ॥ २ ॥  
 बहदत<sup>२</sup> कसरत<sup>३</sup> बिच समाई ।  
 कसरत बहदत हो के भाई<sup>४</sup> ॥  
 जुड़ बिच कुल दी मुस्ती पाई ।  
 बिसर गया संसार ॥ नी ! मैं० ॥ ३ ॥  
 कहन मुनन ते न्यारा जोई ।  
 लामकाँ कहे सब कोई ॥  
 " है " " नाही " दा भगड़ा होई ।  
 तिस दा गर्म बाज़ार ॥ नी मैं० ॥ ४ ॥  
 साकी<sup>५</sup> ने भर जाम<sup>६</sup> पिलाया ।  
 वे खुद हो के जश्न<sup>७</sup> मनाया ॥  
 गैरीयत<sup>८</sup> दा नाम गंवाया ।  
 हुई जय जय<sup>९</sup> कार ॥ नी मैं० ॥ ५ ॥

[ १२२ ]

होरी राग कालंगड़ा, ताल दीपचंदी ।

रे कृष्ण कैसी होरी तैंने मचाई, अचरज लख्यो न जाई ।  
 असत सत कर दिखलाई, रे कृष्ण कैसी होरी तैंने मचाई ॥ (टेक)  
 एक समय श्रीकृष्ण के मन में होरी खेलन की आई ।  
 एक से होरी मचे नहिं कबहुँ, यातें करुं बहुताई ।

१ अर्थात्, २ द्वैत से वहाँ अभिप्राय है, ३ भेद, रहस्य ४ एकता, ५ अनेकता,  
 ६ पसन्द आई, ७ व्यष्टि, ८ समाष्टि, ९ स्थान रहित, अर्थात् देश से परे, १०  
 निजानन्द कभी शराय पिलाने वाला, वहाँ गुब से अभिप्राय है, ११ प्रेम प्याला  
 अथवा अन्तानन्द का प्याला, १२ खुशी मना, १३ द्वैत भाव, भेद दृष्टि, १४  
 आनन्द का हुलास.



यही प्रभु ने ठहराई. रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई ॥ १ ॥  
 पाँच भूत की धातु मिला कर, अंड पिचकारी बनाई ।  
 चौदह भुवन रंग भीतर भरकर. नाना रूप धराई ।  
 प्रकट भये कृष्ण कन्हारी । रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई ॥ २ ॥  
 पाँच विषय की गुलाल बनाकर. बीच ब्रह्मांड उड़ाई ।  
 जिस जिस नैन गुलाल पड़ी उसकी सुध बुध विसराई ।  
 नहीं सूझत अपनाई<sup>१</sup> । रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई ॥ ३ ॥  
 वेद अंत अंजन की शलाका<sup>२</sup>. जिस ने नैन में पाई ।  
 तिस का ही ठीक तम नाश्यों. सूझ पड़ी अपनाई ।  
 होरी कछु बनी न बनाई । रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई ॥ ४ ॥

## विविध लीला

[ १२३ ]

तस्वीरे-यार ।

इस लिये तस्वीरे-जानां<sup>१</sup> हम ने खिचवाई नहीं । (टेक)  
 बात थी जो असल में, वह नक़ल में पाई नहीं । इस० १  
 पहिले तो यहां जान की तन से शनासाई<sup>२</sup> नहीं ॥ इस० २  
 तन से जाँ जब मिल गयी, तो उस में दो ताई<sup>३</sup> नहीं ॥ इस० ३  
 एक से जब दो हुए, तो लुत्के-यकताई<sup>४</sup> नहीं ॥ इस० ४  
 हम हैं मुशताफे-रुखुन<sup>५</sup>, और उस में गोयाई<sup>६</sup> नहीं ॥ इस० ५

१ अपना आप, अपना स्वरूप २ सीख. सलाई. ३ अन्धकार. ४ प्यारा यार  
 अर्थात् अपने स्वरूप की पूर्ति. ५ पहचान. ६ द्वैतपन वा दो होना (अर्थात् जब  
 शरीर के साथ प्राण मिलकर विलबुल एक हो गये तो उन को फिर अलग अलग  
 दो कर ही नहीं सकते, तो फिर तय्योर कैसे). ७ एकता का आनन्द ८ वार्तालाप  
 के उल्लुभ ९ मगर तस्वीर में घोलने की शक्ति नहीं.

पाओं लंगड़ा हाथ लुंभा, आँख बीनाई<sup>१</sup> नहीं ॥ इस० ६  
 यार का खाका<sup>२</sup> उड़ाना, यह भी दानाई<sup>३</sup> नहीं ॥ इस० ७  
 कागज़ी यह पैरहन<sup>४</sup> है दिल को यह भाई नहीं ॥ इस० ८  
 दिल में डर है कि मुसव्वर<sup>५</sup> ही न बन बैठे रकीव<sup>६</sup> ॥ इस० ९  
 दाम मांगे था मुसव्वर, पास इक पाई नहीं ॥ इस० १०  
 असल की खूबी कभी भी नक़ल में आई नहीं ॥ इस० ११

[ १२४ ]

रेखता ।

सत्य धर्म को छिपा दिया, किसने ? निफाक ने } टेक  
 लोगों में छल फैला दिया, किस ने ? निफाक ने }  
 यह देश इक ज़माने में दुनिया की शान था ।  
 अब सब से अदना<sup>१</sup> कर दिया, किस ने ? निफाक ने ॥ १ ॥  
 द्विज धर्म कर्म करने में रहते थे नित्य मग्न ।  
 अब उन को पस्त कर दिया, किस ने ? निफाक ने ॥ २ ॥  
 हर घर में शब्द सुनते थे वेदो-पुराण के ।  
 उन सब को ही मिटा दिया, किस ने ? निफाक ने ॥ ३ ॥  
 महाबली रावण को तो जानत सभी यहां ।  
 सब नाश उसका कर दिया, किस ने ? निफाक ने ॥ ४ ॥  
 आया है वक्त अब तो हितैषी बनो सभी ।  
 घर घर में दखल कर लिया, किस ने ? निफाक ने ॥ ५ ॥

१ ( तस्वीर में ) आँख देख नहीं सकती, पाओं चल नहीं सकते, हाथ हिल नहीं सकते. २ नक़्श, अभिप्राय हँसी उड़ाना. ३ बुद्धिमत्ता. ४ कागज़ी बख़ ५ तस्वीर खेंचने वाला, चित्र कार. ६ शत्रु, हमरा आशिक, सच्ची प्रीतम. ७ तुच्छ, अधम, हीन. ८ अधीन, दीन.

[ १२५ ]

समय कैसा यह आया है ( टेक )

न यारों से रही यारी, न भाइयों में बफादारी ।  
 मुहब्बत ठूट गई सारी, समय कैसा यह आया है ॥ २ ॥  
 जिधर देखो भरौं कुलफत<sup>१</sup>, भुलादी सब ने है उल्फत<sup>२</sup> ।  
 बुरी सोहबत<sup>३</sup>, बुरी संगत, समय कैसा यह आया है ॥ २ ॥  
 सभायें की बहुत जारी, बने खुद उन के अधिकारी ।  
 न छोड़े कर्म व्यभिचारी, समय कैसा यह आया है ॥ ३ ॥  
 बहुत उमदा कहें लैकचर, मगर उलटा चलें उन पर ।  
 अकल पर पड़ गये पत्थर, समय कैसा यह आया है ॥ ४ ॥  
 सचाई को छुपाते हैं, दिल औरों का दुखाते हैं ।  
 वृथा सांघे<sup>४</sup> कहाते हैं, समय कैसा यह आया है ॥ ५ ॥  
 नहीं व्यवहार की शुद्धि, विपर्यय<sup>५</sup> हो रही बुद्धि ।  
 विचारें सत नहीं कुछ भी, समय कैसा यह आया है ॥ ६ ॥  
 घटा है पाप की छाई, उपद्रव होवें हर जाई<sup>६</sup> ।  
 है एक को एक दुःखदाई, समय कैसा यह आया है ॥ ७ ॥  
 न जाने देश के वासी, वन कब सत्य विश्वासी ।  
 मिटे अब कैसे उदासी, समय कैसा यह आया है ॥ ८ ॥

[ १२६ ]

भारतवर्ष की स्तुति ।

राग गारा ताल ध्रुमाली ।

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा ।

हम बुलबुलें हैं उसकी, वह बोस्तां<sup>१</sup> हमारा ॥ १ ॥

१ द्वेप. २ मेन. ३ संग. संसर्ग. ४ सच्चे पुरुष. ५ उलटी. ६ हर जगह, सब

गुर्बत<sup>१</sup> में हों अगर हम, रहता है दिल वतन<sup>२</sup> में ।  
 समझो वहीं हमें भी हो दिल जहां हमारा ॥ २ ॥  
 पर्वत वह सब से ऊंचा, हमसाया आसमां<sup>३</sup> का ।  
 वह सन्तरी हमारा, वह पास्वां<sup>४</sup> हमारा ॥ ३ ॥  
 गोदी में खेलती हैं जिस के हज़ारों नदियां ।  
 गुलशन<sup>५</sup> है जिन के दम से रश्के-जहां<sup>६</sup> हमारा ॥  
 ऐ आवे-रवद<sup>७</sup> गंगा ! वह दिन है याद तुझ को ।  
 उतरा तेरे किनारे जब कारवां<sup>८</sup> हमारा ॥  
 मज़हब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना ।  
 हिंदी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तान हमारा ॥  
 यूँनानो-मिसरो-रूमा सब मिट गये जहां से ।  
 बाकी है पर अभी तक नामो-निशां हमारा ॥  
 कुछ बात है कि हस्ती<sup>९</sup> मिटती नहीं हमारी ।  
 सदियों<sup>१०</sup> से आसमां है ना मेहरबान हमारा ॥  
 इक़बाल<sup>११</sup> अपना कोई मैहरम<sup>१२</sup> नहीं जहां में ।  
 मालूम है हमीं को दर्द-निहां<sup>१३</sup> हमारा ॥

---

१ विदेश. २ स्वदेश, जन्मभूमि. ३ आकाश. ४ चौकीदार, रक्षक. ५ बाटिका.  
 ६ संसार के ईर्ष्या का स्थान. ७ ये बहती गंगा जी का जल. ८ काफला. ९ स्थिति,  
 यस्तुता. १० सैकड़ों वर्षों से. ११ कवि का नाम है. १२ भेदी, विघात वा वाक्किफ  
 रूप. १३ छुपा हुआ दर्द.

# भजनों की वर्णानुक्रमिका

भजन

पृष्ठ

## अ

अकल के मदरस्से से उठ इश्क के मय कदे में आ	२६७
अकल नकल नहीं चाहिये हम को पागलपन दरकार	३३१
अगर है शौक मिलने का अपस की रमज़ पाता जा	२६६
अजी मान मान मान कहा मान ले मेरा	२३३
अपने मज़े की खातिर गुल छोड़ ही दिये जब	६६
अब तो मेरा राम नाम दूसरा न कोई	२६६
अब देवन के घर शादी है	८६
अब मैं अपने राम को रिझाऊं	२८६
अब मोहे फिर फिर आवत हांसी	२६७
अरे लोगो ! तुम्हें क्या है ? या वह जाने या मैं जानूँ	२७७
अलिवदा मेरी रियाज़ी ! अलिवदा	६५
अवधूत का जवाब	१४७
अहसासे-आम ( दार्ष्टान्त )	१८५

## आ

आ दे मुकाम उत्ते आ मेरे प्यारिया !	३३३
आ देख ले बहार कि कैसी बहार है	५१
आऊंगा न जाऊंगा, मरूंगा न जीयुंगा	२८८
आज़ादी	११५
आत्मा	२११
आदमी क्या है.	२००



## भजन

आनन्द अन्दर है	५४
आप में यार देखकर आगिना पुर सफा कि यूँ	१४४
आरसी	६७
आवागमन	१६५
आशिक जहाँ में दौलतो-इकबाल क्या करे	२११
आशीर्वाद	२८३
	६१

## इ

इक ही दिल था सो भी दिलबर ले गया अब क्या करूँ	२८०
इश्क का तूफाँ बपा है, हाजते-मयखाना नेस्त	१६
इस तन चलना प्यारे ! कि डेरा जंगल में मलना	२५३
इश्क होवे तो हकीकी इश्क होना चाहिये	२८७
इसलिये तस्वीरे-जानाँ हम ने खिचवाई नहीं	३४३

## ई

ईशावास्योपनिषद् के आठवें मंत्र का भावार्थ	३
---	---

## उ

उड़ा रहा हूँ मैं रंग भर भर तरह २ की यह सारी दुनिया	११४
उत्तर ( देखो मौजूद सब जगह है राम)	२४
उत्तर स्वरूप प्रश्न ( मस्त ढूँढे है हो के मतवाला )	२५
उत्तराखण्ड में निवास स्थान की ऋतु इत्यादि का वर्णन	५३
उत्तरा खण्ड में निवास स्थान की रात्रि	५१

## ए

ऐ ज़मीनू-दोज़ चश्मे-दुनिया-वीं	१६३
ऐ दिल ! तू राहे-इश्क में मरदाना हो, मरदाना हो	२६८

# भजनों की वर्णानुक्रमणिका

३४८

भजन

४४

ऐथे रहना नाहिं मत खरमस्तियां कर ओ

२५२

क

कफस एक था आईनों से बना

२०

करसां मैं सोई शृंगार नी !

२९०

कलियुग नहीं कर युग है यह यां दिन को दे अरु रात ले

२३६

कलियुग

१२६

कलोदे-इश्क को सीने की दीजिये तो सही

१५

कशमीर मैं अमर नाथ की यात्रा

४६

कहां जऊं ? किसे छोड़ू ? किसे ले लूं ? करूं क्या मैं ?

२३

कहीं कैवां सितारह होके अपना नूर चमकाया

२२७

कहूं क्या रंग उस गुल का, अहाहाहा, अहाहाहा

३३७

काम

१७७

कारण शरीर

२०८

काहे शोक करे नर मन में वह तेरा रखवारा रे

२४६

किस किस अदा से तू ने जलवा दिखाके मारा

२७६

की करदा नी ! की करदा, तुसी पुछोंखां दिलवर की करदा

३०८

कुछ देर नहीं, अंधेर नहीं, इन्साफ और अदल परस्ती है

२३६

कुम्ह्न के हम उले हैं जब चाहे तू गला ले

२७६

कैलास कूक ( सदाये-आस्मानी )

१६६

कैसे रंग लागे, खूब भाग जागे

१०८

कोई दम दा इहां गुजारा रे !

२५४

कोई हाल मस्त, कोई माल मस्त कोई तूती मैना सूप में

३३१

कोहे-नूर का खोना

१३६

क्या र रखे हैं राम ! सामान तेरी कुदत

२२६

भजन

४४

क्या पेशवाई बाजा है अनाहद शब्द है आज

६६

## क्ष (ख)

क्षत्रिय

२१६

खड़े हैं रोम और गला रुके है

१००

खिताब व नपोलियन

१३६

खुदमस्ती की लावनी

३३१

खुदाई कहता है जिस को आलम

२६६

खेडन दे दिन चार नी !

२८६

## ग

गंगा पूजन (गंगा ! तैयों सद बलिहारे जाऊं )

४५

गंगा स्तुति

४६

गंजे-निहां के कुफल पर सिर ही तो मोहरे-शाह है

७

गफलत से जाग देख क्या लुतफ की बात है

२३२

गर यूं हुआ तो क्या हुआ, वर वूं हुआ तो क्या हुआ

३३८

गर हम ने दिल सनम को दिया फिर किसी को क्या

३३४

गर है फकीर तो तू न रख यहां किसी से मेल

३२८

गरबिः कुतब जगह से टले तो टल जाय

३११

गलत है कि दीदार की आजर् है

२६२

गाफिल ! तू जाग देख क्या तेरा स्वरूप है

२३२

गार्गी

१५८

गार्गी से दो दो बातें

१६१

ग्राहक ही कुछ न लेवे तो दहलाल क्या करे

२८३

गुनाह

१२८

# भजनों की वर्णानुक्रमणिका

३५१

भजन

४४

गुम हुआ जो इश्क में फिर उस को नंगो-नाम क्या  
गुल को शमीम, आव गुहर और ज़र को मैं  
गुल शोर वगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है

२८४

७३

२६२

घ

घर मिले उसे जो अपना घर खोवे है  
घर में घर कर

३१२

५६

च

चक्षु जिन्हें देखें नाहि चक्षु की अख जान  
चञ्चल मन निशदिन भटकत है  
चपल मन मान कही मेरी  
चलना सवा का ठुम ठुमक लाता प्यामे-यार है  
चाँद की करतूत  
चार तरफ से अवर की बाह ! उठी थी क्या घटा  
चेतां चेतो जल्द मुसाफिर ! गाड़ी जाने वाली है

४

२५६

२५७

६२

१६४

५६

२४३

ज

जग में कोई नहीं जिन्द मेरिये !  
जंगल का जोगी ( योगी )  
जब उमडा दरया उल्फत का, हर चार तरफ आबादी है  
ज़रा ठुक सोच पे गाफिल !  
जवाब  
जाँ तू दिल दियां चश्मां खोले  
जाते-वारी  
जिधर देसता हूँ उधर तू ही तू है

२५०

६४

८३

२५५

१६३

२६

१६३

२६२

## भजन

पृष्ठ

जिन प्रेम रस चाख्या नहीं अमृत पीया तो क्या हुआ	२८५
ज़िन्दह रहो रे जीया ! जिन्द रहो रे	५
जिन्हां घर भूलते हाथी हज़ारों लाख थे साथी	२५२
जिस को शोहरत भी तरसती हो वह रुस्वाई है और	२८२
जिस को हैं कहते खुदा हम ही तो हैं	२६८
जिस्म से वे तअल्लकी	१५४
जीया ! तो को समझ न आई	२६१
जुनूने-नूर ( रौशनी की घातें )	३३
जूं ही आमद आमदे-इश्क का मुझे दिल ने मुज़दह सुनादिया	२७०
जो खाक से बना है वह आखिर को खाक है	२६३
जो घर रक्खे सो घर घर में रोवे है	३१२
जो खुदा को देखना हो, मैं तो देखना हूं तुम को	३१
जो तू है सो मैं हूँ; जो मैं हूँ सो तू है	२३०
जो दिल को तुम पर मिटा चुके हैं	२२६
जो मस्त हैं अज़ल के उन को शराब क्या है	२८५
जोगी का सच्चा रूप ( चरित्र )	३१६

## ज्ञ

ज्ञान के बिना शुद्धि नामुमकिन	१२४
ज्ञानी का आशीर्वाद	६१
ज्ञानी का घर वा महफल	५५
ज्ञानी का नाच	६३
ज्ञानी का निश्चय	३११
ज्ञानी का प्रणय	३११
ज्ञानी की आभ्यन्तर दशा	२८



# भजनों की वर्णानुक्रमणिका

३५३

भजन

४४

ज्ञानी की उदारता	३१०
ज्ञानी की दृष्टि	३१
ज्ञानी की मुवारिक बादी	६०
ज्ञानी की ललकार	४३
ज्ञानी की सैर नं० १ ( मैं सैर करने निकला )	५७
ज्ञानी की सैर नं० २ ( यह सैर क्या है अजब अनोखा )	५८
ज्ञानी को स्वप्ना	५६

झ

झिम ! झिम !! झिम !!!	८१
झूठी देखी प्रीत जगत में	२५०

ठ

ठंठक भरी है दिल में आनन्द बैह रहा है	८१
--------------------------------------	----

त

तमाम दुन्या है खेल मेरा	३३७
तमाशाये-जहां है और भरे हैं सब तमाशाई	२७३
तर तीव्र भयो वैराग्य तो मान अपमान क्या	२६२
तस्वीरे-यार	३४३
तीन वर्ण	२१२
तीनों अजसाम	२०४
तू कुछ कर उपकार जगत् में	२४५
तू ही बातन में पिन्हां है तू ज़ाहिर हर मकां पर है	२२७
तूं ही हैं मैं नाहिं वे सज्जना ! तूं ही हैं मैं नाहिं	२२६
तेरी मेरे स्वामी ! यह बांकी अदा है	१

द

दरिया से हुबाव की है यह सदा	२६४
दान	१३०
दार्ष्टान्त ( गौड मालिक मकान का आया )	१३४
दिया अपनी खुदी को जो हम ने उठा	३०७
दिल को जत्र गैर से सफा देखा	३०५
दिला ! गाफिल न हो यक दम कि दुन्या छोड़ जाना है	२५६
दिलबर पास वसदा ढूँडन किथे जावना	२३४
दुन्या अजब बाज़ार है कुछ जिन्स यहां की साथ ले	२३६
दुन्या की छत पर चढ़ ललकार	४३
दुन्या की हकीकत	१८८
दुन्या के जंगलों में है यह दिल भटक रहा	२५८
दुन्या है जिस का नाम मीयां यह अजब तरह की हस्ती है	२३६
दुल्हन को जां से बढ़ कर भाती है आरसी	१६५

ध

धन जन योवन संग न जाये प्यारे !	२५३
--------------------------------	-----

न

न गम दुन्या का है मुक्त को, न दुन्या से किनारा है	३१६
न दुश्मन है कोई अपना न साजन ही हमारे हैं	३०३
न बाप बेटा न दोस्त दुश्मन	३२३
न यारों से रही यारी, न भाइयों में वफादारी	३४५
न है कुछ तमन्ना न कुछ जुस्तजू है	३१०
नकुशो-निगार और परदा एक हैं	१८३

# भजनों की वर्णानुक्रमणिका

३५५

भजन

पृष्ठ

नतीजा	१८७
नदियां दी सरदार गंगा रानी !	४६
नसीमे-बहारी चमन सब खिला	२८
नानू मैं नट राज रे !	६३
नाम जपन क्यों छोड़ दिया प्यारे !	२४८
नज़र आया है हर सू मह-जमाल अपना मुबारक हो	६०
नाम राम का दिल से प्यारे ! कभी भुलाना न चाहिये	२४१
नारायण तो मिले उसी को जो देह का अभिमान तजे	३१३
नारायण सब रम रहा, नहीं द्वैत की गन्ध	२२५
नित्य राहत है, नित्य फरहत है	८३
निवास स्थान की बहार	५३
निवास स्थान की रात्रि	५१
नी ! मैं पाया महरम यार	३४१
नेक कमाई कर कुछ प्यारे !	२४८
नै (नय वा वांसुरी)	१३२
नैशनल काँग्रेस	१८०

प

पड़ी जो रही एक मुदत ज़मीन में	२२
परदा	१७७
पा लिया जो था कि पाना काम क्या बाकी रहा	३३६
पीता हूं नूर हर दम जामे-सरूर पै हम	७४
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं	३२५
प्रभु प्रीतम जिस ने बिसारा	२४४
प्रश्न ( मेरा राम आराम है किस जा ? )	२४

भजन

पृष्ठ

प्रीत न की स्वरूप से तो क्या किया कुछ भी नहीं  
प्रीतम जान लियो मन माहिं

२८८

२४६

फ

फकीर का कलाम

१५७

फकीरा ! आपे अल्लाह हो

१०

फकीरी खुदा को प्यारी है

३१४

फिल्सफा

१८४

फैके फलक को तारे सब दख्ख दूंगा मैं

३३६

ब

बच्चा पैदा हुआ

१८०

बदले है कोई आन में अब रंगे-जमाना

६१

बराये-नाम भी अपना न कुछ बाकी निशां रखना

२३५

बागे-जहां के गुल हैं या खार हैं तो हम हैं

३०४

बांकी अदायें देखो चंद का सा मुखड़ा पेखो

२

बाज़ीचा-ए-इत्तफाल है दुनिया मेरे आगे

३३५

बात थी जो असल में वह नकल में पाई नहीं

३४३

बाह्याभ्यन्तर वर्षा

५६

बिछड़ती दुल्हन बतन से है जब

१००

बिठा कर आप पहलू में हमें आँखें दिखाता है

१०६

बिना ज्ञान जीव कोई मुक्ति नहीं पावे

३०६

ब्राह्मण

२२०

भ

भजन बिन ब्रथा जन्म गयो

२५६

# भजनों की वर्णानुक्रमशिका

३५७

भजन

५४

भला हुआ हर बीसरो सिर से टरी बला

३३४

भाग तिन्हाँ दे अच्छे जिन्हां नू राम मिले

१६

भारत वर्ष की स्तुति

३४६

## म

मक्के गया गल्ल मुकदी नाहीं जे न मनो मुकाइये

३१०

मना ! तैं ने राम न जान्या रे !

२५६

मनुवा रे नादान ! ज़री मान मान मान

७

मरे न टरे न जरे हरे तम, परमानन्द सो पायो

६

महले-परदा

१८४

माई ! मैं ने गोविन्द लीना मोल

२६६

मान मन ! क्यों अभिमान करे ?

२५५

मान, मान, मान कहा मान ले मेरा

२३३

माया और उस की हकीकत

१७५

माया सर्व रूप है

१८२

मुकाम

१७६

मुझ को देखो, मैं क्या हूं ? तन तन्हा आया हूं

३०२

मुझ मैं ! मुझ मैं !! मुझ मैं !!!

७६

मुबारक बादी

६०

मेरा मन लगा फकीरी में

६४

मेरो मन रे ! भज ले कृष्ण मुरारी

२६०

मैं न बन्दा, न खुदा था, मुझे मालूम न था

३००

मैं सैर करने निकला ओढ़े श्रवर की चादर

५७

मैं हूं वह ज्ञात ना पैदा किनारो-मुल्लको-वेहद

३०३



## य

यमनोत्री की यात्रा	८६
यह जग स्वप्ना है रजनी का	२५१
यह डर से मिहर आ चमका, अहाहाहा, अहाहाहा	७४
यह पीठ अजब है दुनिया की और क्या क्या जिन्स इकट्ठी है	२६२
यह सैर क्या है अजब अनोखा कि राम मुझ में मैं राम में हूँ	५८
यार को हम ने जा बजा देखा	३०६
यूनीवर्सटी कौन्वोकेशन	६७१

## र

रचना राम रचाई रे सन्तो !	२६०
रफीकों में गर है मुरव्वत तो तुझ से	२२५
रहा है होश कुछ बाकी उसे भी अब निवेड़े जा	२२७
राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा है	२७६
राम मुबरा	१५६
राम सिमर राम सिमर यही तेरो काज रे	२४६
रे कृष्ण ! कैसी होरी तैं ने मचाई	३४२
रोग में आनन्द	६२
रौशनी की घातें ( जुनूने-नूर )	३३

## ल

लखूं क्या आप को पे अब प्यारे !	२
लाज मूल न आइया, नाम धरायो फकीर	३३०

## व

वाह वाह कामां रे ! नौकर मेरा	१११
------------------------------	-----

# भजनों की वर्णानुक्रमणिका

३५८

## भजन

४४

वाह वा ऐ तप घ रेज़श ! वाह वा	६२
वाह वा रे मौज फकीरां दी	३८५
बिवाह	१७८
विश्वपति के ध्यान में जिस ने लगाई हो लगन	२४७
वेदान्त आलमगीर	११८
वैश्य वर्ण	२१४

## श

शशि सूर पावक को करे प्रकाश सो निजधाम वे	२३१
शाहंशाहे-जहान है सायल हुआ है तू	६
शाहे-ज़मां को वरदान	१४२
शीश मंदिर	१३३
शीश मन्दिर का दार्ष्टान्त	१३४
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं अजर अमर अज अविनाशी	२२३
शूदर	२१३

## स

सइयो नी ! मैं प्रीतम पीया को मनाऊँगी	२८१
सकन्दर को अवधूत के दर्शन	१४६
सत्य धर्म को छिपा दिया, किस ने ? नफाक ने	३४४
सदाये-आस्मानी	१६६
सब शांहीं का शाह मैं, मेरा शाह न कोय	२२४
समझ बूझ दिल खोज प्यारे	२६८
समय कैसा यह आया है	३४५
सो दो-रक्खो शादी दम बढ़म है	२५

भजन

पृष्ठ

सलतनत हकीकी अवधूत	१८२
साईं की सदा	२६४
साधो ! दूर दूई जब होवे	४
सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा	३४६
सिर पर आकाश का मण्डल है	५५
सीज़र बादशाह	१४०
सुनो नर रे ! राम भजन कर लीजे	२६०
सूक्ष्म शरीर	२०८
स्थूल शरीर	२१०

ह

हम कूये-दरे-यार से क्या टल के जायंगे ?	२७५
हम देख चुके इस दुनिया को सब धोखे की सी टट्टी है	२६२
हम रखे दुकड़े खायेंगे	३११
हमन हैं इश्क के माते हमन को दौलतां क्या रे	२७५
हमें इक पागलपन दरकार	३३१
हर आन हँसी, हर आन खुशी, हर वक्त अमीरी है बाबा	३२१
हस्ती-ओ-इल्म हूं, मस्ती हूं, नहीं नाम मेरा	६८
हिप हिप हुर्रे ! हिप हिप हुर्रे !!	८६
हुबाबे-जिस्म लाखों मर मिटे, पैदा हुए मुझ में	७६
है दैरो-हरम में वह जलवा कुनां	२८५
है मुहीतो-मुनज्जहो-बे अबदां	३





# श्री रामतीर्थ ग्रन्थावली

का

गतवर्ष का पूरा सैट द भागों का तैयार है  
पृष्ठ लगभग १००० मूल्य बिना जिल्द ४) और सजिल्द ६)  
फुटकर भाग का मूल्य बिना जिल्द ॥=) और सजिल्द ॥=)  
डाक खर्च ग्राहक के जिम्मे होगा

वर्तमान वर्ष अर्थात् दीपमालिका सं० १६७८ त

केवल ५०० पृष्ठ के चार भाग प्रकाशित होंगे

उनका पेशगी वार्षिक शुक्ल निम्न लिखित रीति से है

१—अपना भाग केवल बुक पैकेट द्वारा मंगाने वाले से

बिना जिल्द २) रु० सजिल्द ३) रु०

२—अपना भाग रजिस्टर्ड बुक पैकेट द्वारा मंगाने वाले से

बिना जिल्द २॥) रु० सजिल्द ३॥) रु०

३—अपना प्रत्येक भाग वी० पी० द्वारा मंगाने वाले को

पेशगी अपना नाम दर्ज रजिस्टर्ड कराने के लिये भेज

होंगे फिर उसे भी वार्षिक शुल्क के भाव से भाग मिलेंगे

उक्त रीत्यानुसार स्थाई ग्राहक बनने के लिये शीघ्र शुक्ल

भेजिये या वी० पी० द्वारा भाग भेजने की आज्ञा भेजिये ।

मैनेजर,

श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग



